संस्कृत श्लोक-1

तृतीयः पाठः स्वर वर्णाः

1. (क) अ, आ (ख) ऐ, ओ (ग) ई, उ (घ) अं अः (ङ) ऋ, ॠ 2. (क) ई (ख) आ (ग) ऊ (घ) ए 3. ओ, अं, ऋ

चतुर्थः पाठः व्यंजन वर्णाः

1. (क) 2 (ख) 3 (ग) 4 (घ) 1 2. घ, छ, ड, न, प, व

पंचम पाठः मात्रा ज्ञानम्

1. फलम् फल, झषः मछली, कमलम् कमल, अचलः पृथ्वी

2.

आमिक्षा	शैलमू	लशुनम्
पनीर	पहाड़	लहसुन
Cheese	Mountain	Garlic
तारकम्	शुक्रः	शंखः
तारा	तोता	शंख
Star	Parrot	Conch

पष्ठः पाठः संज्ञा

1. किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। उदाहरण– कमलम्, बकः आदि।

2.

कमलम्	शुकः	उटजम्
कमल	तोता	झोपड़ी
Lotus	Parrot	Hut

3. स्वयं कीजिए। 4. स्वयं कीजिए।

सप्तमः पाठः लिङ्ग

1. जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है वे पुल्लिंग कहलाते हैं। उदाहरण– अजगरः कुक्कुरः। 2. जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं। उदाहरण– चटका, लक्ष्मी। 3. जिन शब्दों से स्त्री तथा पुरुष से भिन्न किसी अन्य स्थान, वस्तु आदि का बोध होता है, उसे नपुंसकलिंग कहते हैं। उदारहण– सेवम्, नवीनतम्।

4.

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
क्षुपः	मयूरी	जाति पुष्पम्
Plant,	Peahen,	Jasmine

अष्ठमः पाठः वचनानि, पुरुषाः एवं सर्वनाम शब्दाः

1. जिन शब्दों से किसी व्यक्ति या वस्तु के एक या अनेक होने का बोध हो उसे वचन कहते हैं। 2. वचन तीन प्रकार के होते हैं– (1) एकवचन (2) द्विवचन (3) बहुवचन 3. जिसके विषय में कुछ कहा जाये उसे अन्य पुरुष कहते हैं। उदाहरण– वह, वे, अक्षिता। 4. सुनने वाले को मध्यम पुरुष कहते हैं। उदाहरण– तुम तथा तू। 5. कहने वाले को उत्तम पुरुष कहते हैं। उदाहरण– मैं। 6. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्द सर्वनाम होते हैं। उदाहरण– वे, वह आदि।

नवम्ः पाठः गणना

1.

2	16
9	19
7	11

2.

अष्ट/अष्टौ	एकादशः
दशम्	द्वादशः
पञ्च	नवम्
एकोनविंशतिः	सप्त
अष्टादश	षष्ट

3. चत्वार:	षष्ट	दशम्
चार	छ:	दस
Four	Six,	Ten
पञ्च	सप्तम	एक:
पाँच	सात	एक
Five	Seven	One

संस्कृत श्लोक-2

द्वितीय: पाठ: लिङ्ग ज्ञानम्

1. (क) काक: (ख) शुक: (ग) कपोत: 2. (क) उष्ट्र: (ख) गज: (ग) अश्व: 3. (क) एक: नर: (ख) एक: अश्व: (ग) एक: पर्वत: (घ) एक: वृषभ: (ङ) एक: काक: (च) एक: सिंह:

स्त्रीलिङ्ग

1. कन्या	लूता	महिषी
झष:	अजा	लता
ऐड:	नासिका	सिंही
2. महिषी	जननी	नासिका
लता	अजा	सिंही

नपुंसकलिङ्ग

1. गृहम	पुष्पम्	पुस्तकम्
आम्रम्	पर्णम्	वनम्
मोचम	कलश:	कन्दुकम्
2. चक्रम	पुष्पम्	पत्रम्
कन्दुकम्	आम्रम्	पर्णम्

तृतीय: पाठ: वचन ज्ञानम्

एष:, सिंहौ, बिडाला:, एष: बालक: स्त्रीलिंग 1. (क) अस्ति (ख) कलिके (ग) सन्ति (घ) एता: (ङ) सन्ति (च) एष: (छ) एते नपुंसकलिंग 1. (क) पुस्तकम् (ख) चक्रे (ग) सन्ति 2. इदं पुस्तकम् अस्ति (ख) एते: कन्दुकेन स्त: (ग) एते: गृहे स्त: (घ) एतानि पर्णानि सन्ति (ङ) एतानि चक्राणि सन्ति (च) एतानि कन्दुकानि सन्ति।

चतुर्थ: पाठ: क्रियाएँ लट् लकार (वर्तमान)

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓ (च) ✓

पंचम: पाठ: पुरुष ज्ञानम्

1. (क) गच्छामि (ख) आवाम्, पठाव: (ग) लिखाम: 2. (क) स: बालक: पुस्तकम् पठति। (ख) आवाम् पठाव: (ग) यूयम् पठथ (घ) अहम् लिखामि (ङ) वयम् गच्छाम: (च) तौ बालकौ गच्छत:।

षष्ठ: पाठ: अकारान्त पुलिङ्ग ज्ञानम्

1. सिंह: वानरौ मयूरा: 2. (क) वने सिंह: गर्जति? (ख) स: किम् करोति? (ग) इमौ वानरौ स्त:। (घ) इमौ किम् कुरुत:? (ङ) मयूरा: नृत्यन्ति। (च) इमौ कूर्दत:

सप्तम पाठ: अकारान्त स्त्रीलिङ्ग ज्ञानम्

1. (क) इयम् अजा अस्ति। (ख) इमे किम् कुरुत:? (ग) इमा: चटका: सन्ति। (घ) इयम् अजा चरति। (ङ) चटका: खादन्ति। (च) इमे पठत: (छ) अजा किम् करोति? (ज) इमे बालिके स्त:। (झ) इमे का स्त:?

अष्टम: पाठ: अकारान्त नपुंसकलिङ्ग ज्ञानम्

1. (क) इदं चक्रम चलति। (ख) इदं आम्रन्पुष्पम् विकसति। (ग) इमानि फलानि अत्र सन्ति। (घ) इमानि फलानि पतन्ति। (ङ) इदं पत्रम् पतति। 2. (क) ये पहिए चलते हैं। (ख) यह आम का फूल खिलता है। (ग) ये (दो) क्या गिरते हैं? (घ) यह आँख खुलती है। (ङ) ये (सब) पत्ते गिरते हैं। (च) ये (सब) आम फल यहाँ हैं।

नवमः पाठः विभक्तयः (कारकाः)

1. कारक	वचन	चिह्न
(क) कर्ता	एकवचन	ने
(ख) करण	बहुवचन से,	के द्वारा
(ग) अपादान	बहुवचन	से (अलग हाने में)
(घ) करण	द्विवचन	से, के द्वारा
(ङ) अधिकरण	द्विवचन	में, पर
(च) कर्म	द्विवचन	को

2. चतुर्थी	**रामाय**	**रामाभ्याम्**	**रामेभ्यः**
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयो	रामेषु
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
कर्म	रामम्	रामौ	रामाः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः

3.

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालाकौ	बालकाः
द्वितीय	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य
पंचमी	बालकात्	बालकाभ्याम	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!

4.

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीय	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पंचमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमासु
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

5.

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गृहम्	गृहे	गृहाणि
द्वितीय	गृहम्	गृहे	गृहारिण
तृतीया	गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः
चतुर्थी	गृहाय	गृहाभ्याम्	गृहेम्यः
पंचमी	गृहात्	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
षष्ठी	गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्
सप्तमी	गृहे	गृहयोः	गृहेषु
सम्बोधन	हे गृहम्	हे गृहे!	हे गृहणि!

दशमः पाठः महात्मा गाँधी

1. (क) वह परम देशभक्त थे। (ख) वह सत्यावादी और सदाचारी थे। (ग) शिक्षा के लिए वह इंग्लैड गए। (घ) वह सदैव सत्य बोलते थे। **2.** प्रसिद्धः तस्य, शिक्षार्थ, श्रद्धया, सर्वेजनाः **3.** (क) तस्य नाम महात्मा गाँधी आसीत्। (ख) शिक्षार्थ सः आग्लदेशं अगच्छत्। (ग) सः शिक्षार्थ विद्यालयं अगच्छत्। (घ) सः सत्यावादी सदाचारी च आसीत्।

एकादशः पाठः आदर्शः बालकः

1. (क) सः भ्रमणय गच्छति। (ख) सः क्रीडनाय गच्छति। (ग) सः पठनाय आगच्छति। (घ) सः खादाय आगच्छति। (ङ) सः स पश्याय आगच्छति। **2.** (क) उठता है (ख) जाता है (ग) आता है (घ) अध्यापकों को (ङ) करता है (च) बोलता है (छ) पीता है

द्वादशः पाठः मनोहरः संवादः

1. स्वयं कीजिए। **2.** (क) अनुजः (ख) गौरवर्णः (ग) पथिकः (घ) मुग्धा **3.** (क) तुम्हारा क्या नाम है? (ख) वह मेरा छोटा भाई है। (ग) वह भोली महिला कौन है? (घ) तुम सब हमारे घर में रहते हो।

संस्कृत श्लोक-3

द्वितीयः पाठः कारकः

1. (क) ने (ख) के लिए, को (ग) हे, अरे, ओ, मो (घ) में, पे पर, ऊपर **2.** (क) रामः भोजनं खादति। (ख) मोहनः विद्यालयं गच्छति। (ग) रमेशः पुस्तकं पठति।

तृतीयः पाठः कर्ता कारकः

हिन्दी अनुवाद– यहाँ बालक क्या करता है? वहाँ बालक पढ़ता है, लिखता है, ज्ञान अर्जित करता है। वे दो बालक क्या करते हैं? दो बालक हँसते और खेलते हैं। वे सब बालक व्यायाम और मल्लयुद्ध करते हैं। किसान जल लाता है। दो किसान वर्षा के जल से क्या करते हैं? दो किसान वर्षा के जल से खेत को सींचते हैं। बहुत से किसान खेत को देखते हैं। बन्दर फल खाता है। दो बन्दर वृक्ष के ऊपर कूदते हैं। बहुत से बन्दर यहाँ रहते हैं।

1. (क) बालकः पठति, लिखति ज्ञानम् अर्जयति। (ख) ते बालकाः व्यायामं मल्लयुद्धं च कुर्वन्ति। (ग) कृषकौ वृष्टि-जलेन क्षेत्रं सिञ्चतः। (घ) वानरौ वृक्षोपरि कूर्दतः।

2. एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
अश्वः	अश्वौ	अश्वाः
मयूरः	मयूरौ	मयूराः
जनः	जनौ	जनाः
वानरः	वानरौ	वानराः

3. एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
हसति	हसतः	हसन्ति
गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
भवति	भवतः	भवन्ति

4. (क) बालकौ किं कुरुतः? (ख) ते बालकाः व्यायामं मल्लयुद्धं च कुर्वन्ति। (ग) कृषकौ वृष्टि-जलेन सिञ्चतः। (घ) वानरौ वृक्षोपरि कूर्दतः। (ङ) अत्र बहवः वानराः निवसन्ति। **5.** (क) बालकौ (ख) बालकः (ग) वानरौ (घ) अत्र (ङ) कुरुतः (च) कृषकः

चतुर्थः पाठः कर्म कारकः

हिन्दी अनुवाद– मोहन पाठ पढ़ता है। रमेश पाठ याद करता है। बालक श्रुतलेख लिखता है। दो बालक फल खाते हैं। दो जन ईश्वर को भजते हैं। दो किसान चित्र देखते हैं। वैज्ञानिक खोज करते हैं। कुम्हार मिट्टी से बर्तन बनाते हैं। छात्राएँ पुस्तके लेकर घर आती हैं।

संवाद

राम– हे! मित्र तुम पुस्तक पढ़ते हो।

श्याम– सखा नहीं आज मैं लेख लिखता हूँ।

राम– लेख तुम पढ़ते हो।

श्याम– मै आचार्य का लेख पढ़ता हूँ।

राम– तुम दोनों स्वस्थ हो?

श्याम– हम दोनों आज पूर्ण स्वस्थ हैं।

राम– तुम सब देश की रक्षा करते हो।

श्याम– हम सब देश की रक्षा करते हैं।

राम– हम सब पाठ पढ़ते हैं, लेख लिखते और शब्दार्थ याद करते हैं।

1. (क) लिखति (ख) लेखं (ग) मृत्तिकाः (घ) पुस्तकानि (ङ) ईश्वरम् **2.** (क) बालकः श्रुतिलेख लिखति। (ख) कृषकौ चित्रे पश्यतः। (ग) रमेशः पाठं स्मरति। (घ) छात्रा पुस्तकानि गृहीत्वा आगच्छन्ति (ङ) मृत्तिका-पत्राणि कुम्भकाराः रचयन्ति। **3.** (क) सा पाठं पठति। (ख) सा ईश्वरं नमति। (ग) सा लेखं लिखति। (घ) अहं देशं स्मरामि। (ङ) ते चित्रे पश्यतः।

4. एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
(क) छात्रम्	छात्रौ	छात्रान्
(ख) गोपालम्	गोपालौ	गोपालान्
(ग) रमेशम्	रमेशौ	रमेशान्
(घ) अश्वम्	अश्वौ	अश्वान्

(ङ) मृगम् मृगौ मृगान्

5. (क) विद्यार्थी (ख) वैज्ञानिक
(ग) अध्यापक (घ) चित्र में
(ङ) घर लेकर (च) पाठों को

पंचमः पाठः करण कारकः

हिन्दी अनुवाद– यहाँ एक सुन्दर नदी है। यहाँ वृक्ष और लताएँ हैं। नदी के जल से माली वृक्षों को सींचता है। जल से पुष्प खिलते हैं, सुगन्धित और मनोहर होते हैं। रमेश पिता के साथ नदी पर जाता है। सुधा भी अश्व रथ से वहाँ जाती है। मैं भी पिता के साथ वहाँ जाता हूँ, नदी देखता हूँ। मुनेश पैरों से वहाँ जाता है। हम सब वहाँ जाते हैं और गेंद से खेलते हैं। वे सब छात्र वहाँ गेंद से व्यायाम करते हैं। हिरन साथ–साथ चरते हैं। राकेश कानों से बहरा है। घोड़ा पैरो से दौड़ता है। यहाँ बालक और बालिका साथ खेलते हैं। वहाँ एक तालाब भी है। तालाब के किनारे स्त्रियों का मन प्रसन्न होता है। तालाब के जल से हम सब वस्त्र धोकर और नहाकर घर आते हैं और आनन्दित होते हैं।

1.सुधा जनकेन सह गच्छति।, सः पादैः गच्छति।, सा पादाभ्यां मंन्दिरं गच्छति।, जलेन जीवनं भवति। हरिणाः सह चरन्ति।, त्वं हस्तौ प्रक्षाल्य अगच्छ, सा कर्णभ्यां बधिरः। **2.** (क) नदीजलेन मालाकारः वृक्षान् सिञ्चति। (ख) सुधा अश्वरथेन तत्र गच्छति। (ग) छात्राः तत्र कन्दुकेन व्यायामं कुर्वन्ति। (घ) राकेशः कर्णाभ्यां बधिरः। (ङ) तड़ागजलेन वयं वस्त्र प्रक्षाल्म स्नात्वा च आनन्दितं भवामः। **3.** (क) अत्र एका सुन्दरा नदीं अस्ति। (ख) रमेशः जनकेन सह नदी गच्छति। (ग) तडागस्य जलेन स्त्रीणां मनः प्रसन्नं भवति। (घ) मुनेशः तत्र पादभ्यां गच्छति। (ङ) ते छात्राः अपि तत्र कन्दुकेन व्यायामं कुर्वन्ति। (च) नद्याः जलेन मालाकारः वृक्षान् सिञ्चति।

षष्ठः पाठः सम्प्रदान कारकः

हिन्दी अनुवाद– राजा ब्राहमण को दान देता है। बालक भोजन के लिए घर आता है। सेवक कुत्ते के लिए भोजन देता है। दो हिरण जलपान के लिए यहाँ आ गए हैं। दो बलिकाएँ पढ़ने के लिए विद्यालय जाती हैं। सेवक लोगों को सब्जी और रस देता है। लोग पैरों से रसोईघर जाते हैं। वहाँ सेवक सब्जी और हाथ के झोले में से चीनी देते हैं। सेवक खाने की वस्तुएँ देते हैं। सभी विनोद के लिए बाजार जाते हैं। सेवक उपयोगी वस्तुएँ खरीदने के लिए इधर–उधर घूमते हैं। रमेश मोहन के लिए उत्तर–पुस्तिका और लेखनी खरीदता है। लोग घूमने के लिए बद्रीनाथ जाते हैं। लोग वहाँ गर्म कुण्ड में स्नान के लिए जाते हैं।

1. (क) बालकः भोजनाय गृहम् आगच्छति। (ख) भृत्याः श्वानाय भोजनं, जनाभ्यां शाकं सूपं, शाकं करपट्टिका शर्करां च यच्छन्ति। (ग) सेवकाः उपयोगिनः वस्तुनि क्रयकरणाय इतस्ततः भ्रमन्ति। (घ) जनाः पर्यटनाया बद्रीनाथं गच्छन्ति। (ङ) जनाः तप्तकुण्डे स्नानाय गच्छन्ति। **2.** (क) ब्राह्मणाय (ख) श्वानाय (ग) जनाः (घ) बद्रीनाथं **3.** (क) भृत्यः धनं याचति। (ख) कतिपय जनाः भोजनाय जीवन्ते। (ग) ते विनोदाय हाटं गच्छतः (घ) ते जलपानाय जलपानगृहं गच्छन्ति। (ङ) सः श्वानाय धनं याचति।

4.

एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
मोहनाय	मोहनाभ्याम्	मोहनेभ्यः
सुरेशाय	सुरेशाभ्याम्	सुरेशेभ्यः
दिनेशाय	दिनेशाभ्याम्	दिनेशेभ्यः

सप्तम पाठः अपादान कारकः

हिन्दी अनुवाद– वृक्ष से पुष्प गिरते हैं। वृक्षों से पुष्प विकसित होते हैं। गंगा हिमालय से निकलती है। छात्र विद्यालय से आते हैं। हम सब बगीचे से आते हैं। मैं नगर से बाहर जाता हूँ। राम घर से विद्यालय जाता है।

वह आचार्य को नमस्कार करता है। वह ध्यान से पाठ याद करता है। सायंकाल के समय छात्र अपने-अपने घरों से आते हैं। कृषक गाँव से नगर को जाते हैं। भिखारी घर से भीख माँगता है। शाम को बालक मन्दिर से प्रसाद लाते हैं। मेरा घर देवालय के समीप है। वह खेल के मैदान से घर आता है। मेरे पिता शिमला नगर से आते हैं। कमजोर बालक विद्यालय से बीच में ही दौड़ते हैं।

1. (क) हिमालयात् गंगा निस्सरति। (ख) छात्राः विद्यालयात् आगच्छन्ति। (ग) मम गृहात् देवालयः समीपम् अस्ति्। (घ) मन्दबुद्धिः बालकः विद्यालयत् अन्तरैव धावति।

2. (क) निर्झरात् जलं पतति। (ख) वृक्षेभ्यः पुष्पाणि पतन्ति। (ग) कृषकः ग्रामात् नगरं गच्छति। (घ) मम पिता शिमला नगरात् आगच्छति। (ङ) छात्रः विद्यालयात् गृहं गच्छति। **3.** (क) विद्यालयात् (ख) नमति। (ग) अवधानेन (घ) गृहात् (ङ) देवालयः

4.

एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
हिमालयात्	हिमालयाभ्याम्	हिमालयेभ्यः
वृक्षात्	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः
विद्यालयात्	विद्यालयाभ्याम्	विद्यालयेभ्यः

5. (क) पेड़ से (ख) बीच में ही (ग) मंदिर (घ) घरों से

अष्टम पाठः संबंध कारकः

हिन्दी अनुवाद– यह मेरे मित्र का बगीचा है। यहाँ अनेकों पेड़ों की पंक्तियाँ हैं। बगीचे का वातावरण अति सुन्दर है। इसके बीच में फूल खिलते हैं। माली पेड़ों को सींचते हैं। जल से फूल खिलते हैं। सुगन्धित और मनोहर होते हैं। बगीचे की शोभा अत्यन्त रमणीय और अवर्णनीय है। वर्षा-काल के उत्सव का प्रसार इस बगीचे में होता है। नगर से स्त्री-पुरुष आकर उद्यान की शोभा देखकर प्रसन्न होते हैं। विद्यालय के छात्र भी प्रतिवर्ष घूमने के लिए आते हैं। उनके साथ अध्यापक और अध्यापिकाएँ भी आते हैं। विद्यालय के आचार्य छात्रों को पेड़ों के उपकार का वर्णन करते हैं। वृक्ष लोगों पर हमेशा उपकार करते हैं। सदा मौसम के प्रहार को भोगकर हमें फल का उपहार देते हैं। वृक्ष किसानों को कृषि उत्पादन के लिए अपने पत्ते उर्वरक (खाद) के रूप में देकर अन्न वृद्धि करते हैं। स्वास्थ्य के लिए वृक्षों का महत्व अधिक है। अतः हम सब को अधिक वृक्ष लगाकर प्रकृति के सौन्दर्य में वृद्धि करनी चाहिए।

1.

(क) वृक्षस्य	वृक्षयोः	वृक्षाणाम्
(ख) नरस्य	नर्योः	नराणाम्

2. (क) अत्र अनेकेषां वृक्षाणां पंक्तयः सन्ति। (ख) उद्यानस्य वातावरणः अतिसुंदरः अस्ति। (ग) मालाकारः वृक्षान् सिञ्चति। (घ) निरोगताय वृक्षाणां महत्त्वं अधिकम् अस्ति। (ङ) अहं मम मित्रञ्च उद्याने स्तः।

3. (क) इदं मम मित्रस्य उद्यानम् अस्ति। (ख) वर्षा कालस्य उत्सवाः उद्याने भवन्ति। (ग) वृक्षाणाम् रोपणं कृत्वा प्रकृति सौन्दर्यं वृद्धिं कुर्मः। (घ) उद्यानस्य वातावरणः अति सुन्दरः अस्ति। (ङ) उद्यानं मध्ये पुष्पाणि विकसन्ति।

4. (क) अवर्णनीया (ख) मित्रस्य (ग) वृक्षोपकारं (घ) जनानां, उपकारं (ङ) सौंदर्यं।

नवमः पाठः अधिकरण कारकः

हिन्दी अनुवाद– रामपुर नगर में एक सुन्दर आश्रम है। आश्रम में अनेक पशु-पक्षी रहते हैं। आश्रम में अनेक झोंपड़ियाँ हैं। झोंपड़ियों में मनुष्य रहते हैं। वहाँ बहुत से छात्र भी रहते हैं। काव्यशास्त्र एवं वेदशास्त्र के अध्ययन में समय देते हैं। पशु-पक्षियों के साथ सिंह भी रहते हैं। आश्रम में मस्त कोयल मीठा बोलती है। आश्रम में फल से भरे अनेक वृक्ष हैं। मुनि वेदपाठ करके पशु-पक्षी के साथ फल खाकर भूख मिटाते हैं। आश्रम में मुनि ईश्वर को भजते हैं। संध्या तर्पण करके यज्ञ करते हैं। निरन्तर धर्म के आचरण से पृथ्वी हरी-भरी होती है। वृद्धावस्था काल में लोग शान्ति प्राप्त करने हेतु आश्रम में ही रहते हैं। वानप्रस्थी स्त्री-पुरूष आश्रम में ही रहते हैं। देवों की पूजा करते हैं। यही सनातन धर्म है। शान्ति स्थल आश्रम में मानते हैं यही अर्थ है।

1.	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
(क)	नगरे	नगर्योः	नगरेषु
(ख)	आश्रमे	आश्रमयोः	आश्रमेषु
(ग)	जने	जनयोः	जनेषु

2. (क) सुन्दरम् (ख) उटजेषु (ग) कालं नियतम् (घ) आश्रमम् (ङ) आश्रमे **3.** (क) आश्रमे अनेकारिक उटजानि सन्ति। (ख) आश्रमे अनेकाः पशु-पक्षिणः निवसन्ति। (ग) तत्र अनेके छात्राः अपि निवसन्ति। (घ) मुनिगणः संध्या तर्पणं कृत्वा यजन्ति। (ङ) उटजेषु मुनयः निवसन्ति। **4.** (क) आश्रमे मुनयः ईश्वरं भजन्ति। (ख) वानप्रस्थिनः आश्रमे देवार्चनं कुर्वन्ति (ग) फलानि भुक्त्वा आश्रमे वेदपाठिनः पशु-पक्षिणः च मुदन्ति। (घ) आश्रमं शान्तिस्थलं मन्यन्ते। (ङ) मत्तकोकिलः आश्रमे कूजति।

दशमः पाठः सम्बोधन कारकः

हिन्दी अनुवाद– आचार्य– (कक्षा में प्रवेश करके) सभी छात्र उपस्थित हैं?

कक्षा नायक– हाँ श्रीमान! सभी छात्र उपस्थित हैं।

आचार्य– यहाँ रमेश नहीं दिखाई दे रहा है। कहाँ गया?

कक्षा नायक– अं अं अं मैं भूल गया।

आचार्य– अं अं अं क्या करते हो। सभी छात्र हँसते हैं।

कक्षा नायक– श्रीमान! रमेश के घर आज जन्मोंत्सव है।

आचार्य– सभी उपस्थिति बोलें। दिनेश!

दिनेश– उपस्थित हूँ श्रीमान!

आचार्य– हे बालक आज में ऋतुओं के विषय मे पढ़ाऊँगा। भारतवर्ष में छह ऋतुएँ होती हैं। उनके नाम वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर है।

दिनेश– श्रीमान! वसन्त में क्या-क्या होता है?

आचार्य– वसन्त ऋतु में वृक्षों पर नए पत्ते उग आते हैं। पुष्प खिल जाते हैं। वृक्षों पर कोयल गाती है। आम के पेड़ों पर मञ्जरी खिल जाती है। आम के पेड़ों पर भँवरे गूँजते हैं। इस ऋतु में प्रकृति अति मनोहर होती है। सब तरफ प्रसन्नता ही प्रसन्नता फैल जाती है। लोग बसन्त को ऋतुराज और कुसुमाकर भी कहते हैं। सब ओर सुगन्धित पवन बहती है।

दिनेश– आचार्य जी! हम सब आगे क्या पढ़ेंगे?

आचार्य– हे छात्रों सदाचार के विषय में तुम सब क्या जानते हो? आगे मैं सदाचार के विषय में पढ़ाऊँगा। जो सदाचारी है वह हमेशा सुखी होता है। जो आचारविहीन (दुराचारी) है वह दुख प्राप्त करता है। इसलिए तुम सब आचारवान

(सदाचारी) बनो। माता-पिता की भक्ति सदा लाभकारी होती है।

1. (क) सर्वे छात्राः (ख) जन्मोत्सवः (ग) प्रसन्नता, प्रसन्नता (घ) आचार्यवर्याः (ङ) सर्वदा **2.** (क) षड् ऋतवः भवन्ति। बसन्त-ग्रीष्म-वर्षा-शरद-हेमन्त-शिशिरश्च।

(ख) रमेशस्य गृहे जन्मोत्सवः अस्ति। (ग) बसन्तऋतौ वृक्षेषु नवीनानि पत्राणि प्रभवन्ति। (घ) मातृ-पितृ भक्तिः सर्वदा लाभकारी भवति। (ङ) बसन्तऋतौ प्रकृतिः मनोहारिणी भवति।

3. (क) हे राम! अत्र आगच्छ। (ख) भो बालकौ! युवां किं लिखथः? (ग) भो छात्राः! यूयं विद्यालयं गच्छथ। (घ) हे आचार्य! अहं पत्रं लिखामि।

4. (क) मातृ-पितृ भक्तिः लाभकारी भवति। (ख) आम्रेषु कोकिलाः कूजन्ति। (ग) अहं प्रसन्नताम् अनुभवामि।

एकादशः पाठः शरीरस्य अंगाणि

हिन्दी अनुवाद– यह शरीर है। शरीर के बहुत से अंग हैं। सबसे ऊपर मस्तक है। मुख से हम सब खाने की वस्तुएँ खाते हैं और पीने की चीजें पीते हैं। मुख में दाँत होते हैं। दाँतों से हम सब भोजन चबाते हैं। माथा, गाल और बालों से मस्तक की शोभा होती है। अन्य अनेक शरीर के अंग हैं। नाक से हम फूल सूँघते और नेत्रों से वस्तुओं को देखते हैं। कानों से पाठ सुनते हैं। मुख के नीचे गर्दन है। शरीर के मध्य भाग में पेट, सीना (छाती) पीछे के भाग (पीठ या कमर) हाथ इत्यादि अंग हैं। नीचे के हिस्से में पैर हैं।

हम सब पैरों से चलते हैं। हम सब बगीचे में जाते हैं। हाथों से फूल चुनते हैं। फूलों से हम सब देव पूजा करते हैं।

1. (क) शरीरम् (ख) मस्तक (ग) पादौः (घ) देवपूजाम् (ङ) पादाभ्याम् (च) केशैः

2. (क) शरीरे बहुनि अंगाणि भवन्ति। (ख) सर्वोपरि मस्तक अस्ति। (ग) अधो भाग पादौ स्तः। (घ) शरीरस्य मध्यभागे उदरम्, वक्षः स्थलम् स्थितः अस्ति। (ङ) नेत्राभ्याम् वस्तुनि पश्यामः। **3.** (क) मुख के नीचे गर्दन है। (ख) फूलों से हम सब देवपूजा करते हैं। (ग) पीठ या कमर और हाथ इत्यादि अंग हैं। (घ) नाक से हम सब फूल सूघते हैं। (ङ) कानों से पाठ सुनते हैं।

द्वादशः पाठः अस्माकं धरा

हिन्दी अनुवाद– प्रिय मित्र, आप कुशल होंगे? आज मैं तुम्हें पृथ्वी ग्रह का परिचय देता हूँ। इस सौरमण्डल के आठों ग्रहों में अन्य ग्रह हैं। उन आठ ग्रहों में पृथ्वी ग्रह पर ही केवल जीवन है। क्या हम सब विचार करते हैं कि हमारी पृथ्वी की कितने कोश तक लम्बाई और चौड़ाई है। आज मैं इसके विषय में सभी प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करूँगा। पृथ्वी आसाम से बारह हजार सात सौ छप्पन किमी० और दूसरे आधे भाग में बारह हजार सात सौ तेरह किमी० तक है। पृथ्वी अपनी परिक्रमा चौबीस घंटे में करती है। इसलिए पृथ्वी पर एक दिन चौबीस घंटे का होता है। पृथ्वी सूर्य से पाँच करोड़ किमी० तक दूर स्थित है। यह सूर्य की परिक्रमा तीन सौ पैंसठ दिन में पूरी करती है। पृथ्वी चार भागों में स्वीकृत है- भूपृष्ठ, मैण्टल, ऊपरी सतह और गहराई। सबसे ऊपर वाला भाग भूपृष्ठ कहलाता है उसकी गहराई चार सौ किमी० होती है उसके नीचे वाला भाग मेण्टल कहलाता है। मैण्टल के ऊपर कठोर पचास पत्थर के टुकड़ों से अधिक छः सौ अन्तर भाग और दो हजार तीन सौ किमी० में यह स्थित है।

यह निश्चित है कि यह मैण्टल सिलिकेट पत्थर के टुकड़ों से निर्मित है। जिसमें लोहा, मैग्नीशियम है। पृथ्वी का सबसे अन्तरिक भाग कोर कहलाता है। बाहरी भाग कठोर है। एक हजार से अधिक आठ सौ किमी० अन्दर का भाग एक हजार से अधिक छ: सौ किमी० तक है। बाहरी भाग लोहे से और निकिल से निर्मित है जिसके अन्दर का भाग कठोर और बाहरी भाग द्रव्य युक्त है।

आज तो हमारी पृथ्वी प्रदूषित हो गई है। पृथ्वी का जल प्रदूषित हो गया है। हमें पृथ्वी की स्वच्छता का ध्यान करना चाहिए।

1. (क) ग्रहेषु पृथिवी ग्रहे एव केवल जीवनं वर्तते। (ख) पृथिव्यां आसाम: द्वादश–सहस्त्रोत्तर–सप्तशतं–षडपंचाशत–क्रोशान् दैर्ध्य च द्वादश सहस्रोत्तरस्पतशतं त्रयोदशक्रोशमितं वर्तते। (ग) चतुर्विंशति: वादनकाले पृथिवी आदित्यस्य परिक्रमा करोति? (घ) पृथिव्या निम्नतम: भाग: 'मैण्टल' इति नामधेयम्।

(ङ) भूपृष्ठ:, मैण्डल:, ऊर्ध्वमण्डल: गाम्भीर्यमण्डलञ्च पृथिव्या भागा: सन्ति।

2. (क) अन्यतमो (ख) पृथिव्यां (ग) सिलिकेट (घ) अभ्येन्तरीभूतो (ङ) पृथिवी

3. (क) सर्वेषु ग्रहेषु केवल पृथिव्यां जीवनम् अस्ति। (ख) अद्य अहं तव प्रश्नानाम् उत्तराणि दास्यामि। (ग) पृथिवी सूर्य परिक्रमा 365 दिवसेषु पूरितं करोति। (घ) अस्य आन्तरिक भागं कठोरम् अस्ति। (ङ) माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या। **4.** (क) सा परिक्रमामेकं ददाति। (ख) अस्य अभ्यन्तरभागे किम् अस्ति? (ग) तं दृष्ट्वा स: द्रवीभूतं भवति। (घ) पठनं लेखनं तव कर्त्तव्यम्। (ङ) सा: क्षेत्रेषु भूषिता।

त्रयोदश: पाठ: सुभाषितानि

हिन्दी अनुवाद– विद्वान तथा राजा की कार्यों की तुलना नहीं हो सकती। राजा अपने देश में पूजा जाता है, विद्वान सभी जगह पूजा जाता है।

फल वाले वृक्ष को नमन करते हैं, गुणी जनों को नमन करते हैं। सूखे वृक्ष और मूर्खों को कभी नमन नहीं करते हैं।

नीच व्यक्ति धन की इच्छा करता है। मध्यम व्यक्ति धन और मान की इच्छा करता है। उत्तम व्यक्ति मान की इच्छा करता है। सम्मान ही सबसे बड़ा धन है।

मक्खी घाव चाहती है। पार्थिव धन की इच्छा करते हैं नीच कलह चाहते हैं सज्जन शान्ति चाहते हैं।

प्रिय वाक्या बोलने से सभी मनुष्य प्रसन्न होते हैं। इसलिए बोलने में आलस्य नहीं करना चाहिए।

1. (क) नमन्ति गुणिनो जना: (ख) शुष्क वृक्षाश्च मूर्खाश्च (ग) मध्यमा (घ) मान मिच्छन्ति, मानो हिं (ङ) पार्थिवा: (च) शान्ति मिच्छन्ति **2.** (क) स्वदेशे राजा पूज्यते। (ख) फलिनो वृक्षा: गुणिनो जना: च नमन्ति। (ग) मक्षिका प्रणम् इच्छन्ति। **3.** (क) राजा केवलं स्वदेशे पूज्यते। (ख) उत्तमा: पुरुषा: मानं इच्छन्ति। (ग) सज्जन पुरुषा: शान्तिं इच्छन्ति। (घ) सर्वदा मधुर वाणी ब्रूवेत। **4.** (क) विद्वान सर्वत्र पूज्यते। (ख) शुष्कवृक्षा: फलानि न ददाति। (ग) सदैव प्रिय वाक्यं वक्तव्यम् (घ) सज्जना: शान्तिं इच्छन्ति। **5.** स्वयं करें।

चतुर्दश: पाठ: विज्ञानस्य चमत्कार

हिन्दी अनुवाद– यह विज्ञान का युग है। जहाँ भी नजर जाती है वहाँ ही विज्ञान के चमत्कार दिखते हैं। यह टेलीफोन है दूर से अन्य नगर या देश में भी स्थित लोग टेलीफोन से आपस में

बात कर लेते हैं। यह रेफ्रिजरेटर है जो कुछ भी इसमें है ठंडा रहता है और देर तक ठंडा रहता है। प्रदेश और विदेश के समाचारों से परिचित हो जाते हैं। संगीत भी सुनते हैं इसमें लोग केवल समाचार और गीत ही नहीं सुनते हैं परन्तु कहने वाले के चित्र प्रदेश और विदेश के दृश्य भी देखते हैं। वे रामायण महाभारत और अन्य नाटक भी देख सकते हैं। यह हवाई जहाज है। इसमें रहकर लोग पक्षी की तरह आकाश में उड़ते हैं थोड़े ही समय में अपने लक्ष्य स्थान पर पहुँच जाते हैं। यह रॉकेट है। इसकी चाल हवाई जहाज से भी तेज है। इसमें बैठकर लोग चन्द्रमा और अन्य ग्रह में भी जा सकते है। चिकित्सा (इलाज) के क्षेत्र में हम सब विज्ञान के चमत्कार सब जगह देखते हैं।

1. (क) विज्ञानस्य (ख) दूरभाषेण (ग) आकाशे, गन्तव्यम् (घ) विज्ञानस्य **2.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓ **3.** (क) दूरदर्शनम् (ख) दूरभाषम् (ग) वायुयानम् (घ) शीतकाम् (ङ) रॉकेट यन्त्रम् (च) युगम्

4. (क) शीतकामे वयम् विभिन्न वस्तूनिः चिरम् शीतलम् एवं तिष्ठति। (ख) दूरदर्शने जनाः प्रदेशानाम् विदेशानाम् च समाचारन् अवगच्छन्ति। (ग) दूरभाषे जनाः अन्येषु नगरेषु देशेषु वा अपि स्थिताः जनाः परस्परम् वार्तालापम् कुर्वन्ति। (घ) रॉकेट यन्त्रे उपविश्य जनाः चन्द्रम् अन्यान् उपग्रहान् अपि गन्तुम् प्रभवन्ति। **5.** (क) ज्यादा तेज (ख) सब ओर (ग) थोड़ा (घ) लक्ष्य स्थान।

संस्कृत श्लोक-4

प्रथमः पाठः वंदना

1. (क) वयं भगवती सुरभारति चरणौ प्रणमामः (ख) सुरभारति नवरस मधुरा कविता मुखरा च सन्ति। **2.** (क) चरणौ (ख) शरणं (ग) शरण्या। **3.** हे देवी सरस्वती! तुम्हारी जय हो। तुम्हारे चरणों में हम प्रणाम करते हैं। हे नाद ब्रहमस्वरूप वाली वीणा देवी! हम तुम्हारी शरण में जाते हैं। **4.** (क) पैरों (ख) देवी सरस्वती (ग) शरण देने वाली (घ) मुखरित (ङ) मुस्कान (च) नमस्कार।

द्वितीयः पाठः संस्कृत भाषा

हिन्दी अनुवाद– संस्कृत भाषा का साहित्य अत्यन्त सरल है। संस्कृत की ही सूक्ति है– वाणी को सुशोभित करती है जो पुरुष संस्कृत धारण करते हैं। मनुष्य के गुणों और संस्कारों का उद्गम स्थान (उत्पत्ति का स्थान) संस्कृत ही है। भारतीय जीवन में संस्कृत इस प्रकार फैली हुई है, जैसे इसका अलग होना सर्वथा असम्भव हो। संस्कृत के अध्ययन से ही हम सब भारतीय हैं। प्राचीन संस्कृत भाषा जिसने न पढ़ी होती तो उसके सारे प्रयास शून्य होते। विश्व के आदि ग्रन्थ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद संस्कृत भाषा में ही हैं। इसलिए संस्कृत भाषा सभी भाषाओं की जननी मानी जाती है। प्राचीन काल में संस्कृत के अध्ययन के लिए बालक गुरुकुल जाते थे। गुरु की सेवा करके संस्कृत शिक्षा फल प्राप्त करते थे। जैसे ही संस्कारों में वेदों का आरम्भ होता है वही संस्कार होता है। यज्ञोपवीत संस्कार संस्कृत में ही होता है। संसार में सोलह संस्कार होते हैं। संस्कृत भाषा के बिना कुछ भी सिद्ध नहीं होता।

संस्कृत भाषा की मुख्यता है–

आचार्य देव होते हैं, माता देवी होती हैं। पिता देव होते हैं।

किसी विद्वान ने सत्य ही कहा है–

भाषाओं में मधुर मुख्य दिव्य है संस्कृत भाषा।

धन्य है संस्कृत विषय का अध्ययन करना।

1. (क) पुरा संस्कृत अध्ययनार्थम् बालकाः गुरुकुले गच्छन्ति स्म। (ख) आचार्यदेवो भव। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। इति संस्कृत भाषायाः मुख्यतया सिद्धान्ताः। (ग) विश्वस्य आदिम ग्रन्थः ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः अथर्ववेदः च सन्ति। (घ) संसारे षोडष संस्काराः भवन्ति। **2.** (क) भाषायाः (ख) संस्कृता (ग) मानवीय गुणानां (घ) संस्कृत (ङ)सिद्धयतीति। **3.** (क) संस्कृत भाषा येन न आधीता तस्य सकल प्रयासः शून्यसदृशः भवति। (ख) भारतीय जीवने संस्कृतम् इत्थम अभिव्याप्तं। (ग) संस्कृत भाषा सर्वासां भाषाणाम् जननी मन्यते। (घ) विश्वस्य आदिमः ग्रन्थः संस्कृत भाषायाम् एव सन्ति। (ङ) अहम् संस्कृत भाषां अवश्य पठिष्यतम। **4.** (क) यज्ञोपवीत संस्कारं संस्कृते एव भवति। (ख) भाषासु मधुर रस मख्य दिव्या गीर्वाणभारती। (ग) संस्कृतस्य महत्वं सर्वत्र अभिव्याप्तं। (घ) वेदस्य अङ्गानि अपि संस्कृत भाषायामेव सन्ति। (ङ) विश्वस्य आदिमः ग्रन्थः संस्कृत भाषायाम् एव सन्ति। **5.** स्वयं करें।

तृतीयः पाठः संघेः शक्ति

हिन्दी अनुवाद– आचार्य– एकता में शक्ति होती है। **एक शिष्य–** श्रीमन! कैसी एकता में शक्ति होती है।

आचार्य– मैं उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ।

कथा– एक गाँव में एक पुरुष था। उसके चार पुत्र थे। वे हमेशा आपस में झगड़ते रहते थे। उनके कलह को देखकर वह पुरुष दुखी रहता था। वह वन जाकर पेड़ों से चार लकड़ियाँ लाया। लकड़ी पुत्रों को एक-एक दे दी। उनको तोड़ने का आदेश दिया। एक क्षण में उन्होंने सरलता से उन्हें तोड़ दिया। पुनः चारों डण्डों को एकत्रित करके सबसे बड़े पुत्र को तोड़ने के लिए आदेश दिया। वह तोड़ने में असमर्थ रहा। क्रमशः सभी पुत्रों को फिर से दोहराया। चारों में से कोई भी पुत्र सफल नहीं हुआ। तब पुरुष बोला संघरहित तुम सब कमजोर हो गए थे। इकट्ठे होकर सबल हो गए हो।

शिष्य– श्रीमन! आज हम सब संघटित हो गए हैं, आपस में कलह कभी नहीं करेंगे।

आचार्य– हे शिष्य! गीताशास्त्र में भी लिखा है संघ में शक्ति कलयुग में भी है।

शिष्य– श्रीमन दूसरी कथा कहिए। सुनो दूसरी कथा- चार बैल साथ-साथ रहते थे। सभी वन के जानवर उन्हें मारने में असमर्थ थे। एक बार चतुर सिंह ने एक के कान में कुछ मुख स्पर्श किया। क्रम से सभी बैलों के कान में यही पुनरावृत्ति की। सिंह से मेरी बुराई की यह सोचकर मित्रता छिन्न (टूट) हो गई। एक-एक सिंह का भोजन बन गया। अतः अलग होने का यह परिणाम हुआ।

1. (क) स्वपुत्रस्य कलहवन्तान् दृष्टवा सः पुरुषः दुखितः अभवत्। (ख) चत्वारः लगुडम् एकत्रितं कृत्वा जेठपुत्राय अददत् त्रोटितुम् अदिशत्। (ग) असंघठिता वयम् अपि निबलाः भविष्यामः। (घ) परस्परं कलहं कदापि न करिष्यामः। **2.** (क) ग्रामे (ख) अत्रोटयन (ग) वृक्षात् (घ) सह-सह **3.** (क) संघे शक्ति भवति। (ख) सः चत्वारः लगडुम् एकत्रित कृत्वा पुत्राय अददत्। (ग) संघठित लगडुम् कोऽपि पक्षः त्रोटितुम् न सफलं अभवत्। (घ) गीता शास्त्रेऽपि लिखितम-संघे शक्ति भवति। **4.** (क) अहं एकं उदाहरण प्रस्तोमि। (ख) ते सर्वदा परस्परं कलहं कुर्वन्ति।

(ग) असंघठिता वयं निबला: भविष्यथ। (घ) लगडुम् एकत्रितं कृत्वा स: पुत्राय अददत्। (ङ) गीता शास्त्रेऽपि लिखितम्– संघे शक्ति भवति। (च) ग्रामे एक: पुरुष: आसीत्।

(छ) छिन्नताया इदम फलम् जातम्।

चतुर्थ: पाठ: परोपकार:

हिन्दी अनुवाद– संसार में परोपकार श्रेष्ठ धर्म है। दूसरों पर उपकार को ही परोपकार कहते हैं। संसार में जो लोग परोपकार करते हैं वे लोग श्रेष्ठ होते हैं। न केवल मनुष्य अपितु प्रकृति भी परोपकार में संलग्न है। सूर्य, चन्द्र, रात्रि, दिन परोपकार के लिए प्रकाशित होते हैं। हवा परोपकार के लिए बहती है। वृक्ष परोपकार के लिए फल देते हैं बादल परोपकार के लिए बरसते हैं। नदी परोपकार के लिए बहती है।

परोपकार के लिए महर्षि दधीचि ने देवताओं को अपनी अस्थियाँ दे दी थी। राजा शिवि ने परोपकार के लिए अपना शरीर भी दे दिया था। महात्मा गाँधी परोपकार के लिए बार-बार जेल गए और विविध कष्टों को सहा। महात्मा बुद्ध ने लोगों के दुख दूर करने के लिए अपना राज्य छोड़ दिया। दयानन्द, विवेकानन्द ने लोगों के दुख दूर करने के लिए आजीवन प्रयत्न किया। जो लोग दूसरों पर उपकार करते हैं, ईश्वर उनकी सहायता करते हैं।

किसी ने उचित कहा हैं–

अट्ठारह पुराणों में व्यास के दो वचन हैं।

परोपकार पुण्य के लिए और पाप दूसरों को पीड़ा देने के लिए होता है।

1. (क) परोपकार: परमो धर्म: अस्ति। (ख) वृक्षा: परोपकाराय फलन्ति। (ग) महर्षि दधीचि स्व अस्थीनि अददात्। (घ) ये जना: परेषां उपकारं कुर्वन्ति, ईश्वर: तेषां सहायताम् करोति। **2.** (क) परोपकार: (ख) पवन: (ग) वर्षन्ति (घ) संसारे **3.** (क) वयम् परोपकारं कर्तव्यम्। (ख) सज्जना: परोपकारं कुर्वन्ति। (ग) वृक्षा: परोपकाराय फलन्ति। (घ) मेघा: परोपकाराय वर्षन्ति। **4.** (क) नदी परोपकार के लिए बहती है। (ख) दूसरों पर उपकार को ही परोपकार कहते हैं। (ग) सूर्य, चन्द्र, रात, दिन परोपकार के लिए प्रकाशित होते हैं। (घ) संसार में परोपकार परम धर्म है।

5. (क) दूसरों को कष्ट पहुँचाना (ख) दे दिया (ग) सहन किया (घ) बहती है। (ङ) अस्थियाँ (च) दूसरों को।

पंचम: पाठ: विनयप्रश्नोत्तरम्

हिन्दी अनुवाद– आचार्य– हे छात्रों! आज विनय का पाठ पढ़ेंगे।

रमेश– श्रीमन! विनय क्या?

आचार्य– मनुष्य का अभूषण विनय होता है।

मोहन– गुरुवर! विनय कहाँ से उत्पन्न होता है।

आचार्य– विनय सदाचार से उत्पन्न होता है।

रमेश– सदाचार क्या होता है?

आचार्य– सज्जनों का आचरण सदाचार होता है।

मोहन– गुरुवर! सज्जन कैसा आचरण करते है?

आचार्य– सज्जन सत्य का आचरण करते हैं।

रमेश– श्रीमन! सत्य क्या होता है?

आचार्य– सत्य ही परम धरम होता है।

मोहन– गुरुवर! धर्म क्या होता है?

आचार्य– जिससे संसार बनता है वही धर्म होता है।

रमेश– श्रीमन! सदाचार से क्या-क्या गुण विकसित होते हैं?

आचार्य– सदाचार से धैर्य, निपुणता, संयम, आत्मविश्वास, निडरता इत्यादि गुण विकसित होते हैं।

मोहन– गुरुवर! विनय से लोग कैसे होते है?

आचार्य– विनयी व्यक्ति सभी जनों का प्रिय होता है।

रमेश– श्रीमन! धर्म से अलग व्यक्ति कैसा होता है?

आचार्य– धर्महीन जानवर के समान होता है।

मोहन– गुरुवर! अन्य कौन–कौन लोग जानवर के समान होते हैं?

आचार्य– अन्य संगीत, साहित्य, कलाविहीन जानवर के समान होते हैं।

रमेश– श्रीमन! संगीत क्या होता है?

आचार्य– स्वरों का मेल संगीत मनोरंजन का साधन होता है।

1. (क) विनय सदाचारात् उद्भवति। (ख) सत्येव परमो धर्मः भवति। (ग) येन लोकाः घृताः सः धर्मः भवति। (घ) पशुतुल्याः भवति धर्मेण हीनाः। **2.** (क) जनानाम् (ख) विहिना (ग) मनुष्याणां (घ) सदाचारः **3.** (क) येन लोकाः घृताः सः धर्मः भवति। (ख) धर्मेणहीनाः जनाः पशु तुल्यः भवति। (ग) संगीतः मनोरंजनस्य साधनं भवति। (घ) विनय सर्वेषां जनानाम् प्रिय भवति। **4.** (क) सत्य ही परम धर्म होता है। (ख) सदाचार क्या होता है? (ग) जिससे संसार बनता है वह धर्म होता है। (घ) गुरुवर! विनयी व्यक्ति कैसा होता है? (ङ) मनुष्यों का आभूषण विनय होता है।

षष्ठः पाठः गीता रहस्यम् श्लोकाः

हिन्दी अनुवाद– 1. न जन्म लेता है न मृत्यु होती है न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला है। यह नित्य, सनातन है यही पुरातन है। न मृत शरीर में भी नहीं मरता है।

2. हे प्रथापुत्र अर्जुन! जो पुरुष इस आत्मा का नाश रहित नित्य, अजन्मा और अव्यय जानता है, वह पुरुष कैसे किसको मरवाता है और कैसे किसको मारता है।

3. पुराने वस्त्रों को त्याग कर जिस प्रकार मनुष्य नए वस्त्र धारण करता है। उसी प्रकार पुराने शरीर को छोड़कर आत्मा नई देह को धारण करती है।

4. न ही शस्त्र इसे काट सकते हैं न अग्नि जला सकती है इसे जल गला नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकती।

5. कोई एक महापुरुष ही इस आत्मा को आश्चर्य की भाँति देखता है और वैसे ही दूसरा कोई महापुरुष ही इसके तत्व का आश्चर्य की भाँति वर्णन करता है तथा दूसरा कोई अधिकारी पुरुष ही इसे आश्चर्य की भाँति सुनता है और कोई–कोई तो सुनकर भी इसको नहीं जानता।

6. हे अर्जुन! यह आत्मा सबके शरीर में ही अवध्य है। इस कारण सम्पूर्ण प्राणियों के लिए तू शोक करने योग्य नहीं है।

1. (क) शरीरे हन्यमाने न हन्यते। (ख) शरीराणि जीर्णानि विहाय नवानि संयाति (ग) आत्मानं शस्त्राणि न छिन्द्रन्ति। (घ) मारूतः आत्मानं न शोषयति। (ङ) आत्मनः आश्चर्यवत्पश्यति। **2.** (क) म्रियते (ख) एनमजमव्ययम् (ग) नवानि (घ) छिन्दन्ति, दहति (ङ) तस्माव्सर्वाणि **3.** (क) आत्मा न जायते म्रियते वा कदाचन। (ख) जीर्णानि वासांसि विहाय नवानि धारयति। (ग) तथा शरीराणि अपि नवानि देही धारयति। (घ) आत्मनं शस्त्र न छिन्दन्ति। (ङ) मारूतः कदापि न शोषयतुम् शक्यते। **4.** (क) शरीराणि विहाय आत्मा नवीन श्ररीराणि धारयति। (ख) आत्मा कदापि न म्रियते। (ग) आत्मा जीर्णानि शरीराणि विहति। (घ) शरीरे हन्यमाने न हन्यते। (ङ) मारूतः आत्मानं न शोषयति। **5.** (क) पुरातन

(ख) अचम्भे की तरह (ग) सुखाती है (घ) फटे पुराने

सप्तमः पाठः गीर्वाणभारती महत्वम्

हिन्दी अनुवाद– संस्कृत भाषा संस्कारों की जननी मानी जाती है। भारतीय जीवन में संस्कृत भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। देवताओं की वाणी संस्कृत भाषा, सुरभारती, अमरभारती इत्यादि संस्कृत के नाम हैं। विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृत भाषा को ही मानते हैं। भारतीय भाषाओं में कम या अधिक रूप से इसके शब्दों का प्रयोग करते हैं। इसलिए भाषाओं के जानकार इसे सभी भाषाओं की जननी मानते हैं।

विश्व के आदिम ग्रंन्थ- ऋग्वेद, संस्कृत, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद संस्कृत भाषा में ही हैं। चारों उपवेद भी संस्कृत भाषा में ही रचे गए हैं। सभी उपनिषद् भी संस्कृत भाषा में ही उपनिवद्ध शिक्षाकल्य ज्योतिष, छन्द, व्याकरण समस्त संस्कृत में ही हैं। वाल्मीकि कृत रामायण व्यास कृत महाभारत और महाकाव्य संस्कृत भाषा में ही विद्यमान हैं। संस्कृत भाषा का साहित्य अत्यन्त सरल है। संस्कृत भाषा का व्याकरण नितान्त व्यवस्थित है। मानवीय गुणों का और संस्कारों का उद्गम (उत्पत्ति) स्थान संस्कृत ही है। भारतीय जीवन में संस्कृत इस तरह से फैली हुई है कि इसका अलग होना सर्वथा असम्भव है। हम सब भारतीय संस्कृत अध्ययन से श्रेष्ठ होते हैं। इसी भाषा में लिखने व बोलने में सब जगह एकरूपता होती है। इसलिए हमें सभी को संस्कृत भाषा को पूजना चाहिए।

किसी ने सत्य ही कहा है–

भाषाओं में मधुर मुख्य दिव्य संस्कृत भाषा है।

1. (क) संस्काराणां जननी संस्कृत भाषा मन्यन्ते। (ख) ऋग्वेद:, यजुर्वेद:, सामवेद, अथर्ववेद: इति नाम। (ग) संस्कृत भाषाया: व्याकरणं नितान्त व्यवस्थितं अस्ति। (घ) भारतीय भाषासु न्यूनाधिकरूपेण संस्कृत शब्दा: प्रयुज्यन्ते। (ङ) अस्माकं सर्वेषां संस्कृत भाषा समाराधनीया:। **2.** (क) ऋग्वेद (ख) सरसं (ग) संस्कृत (घ) समाराधनीया: (ङ) गीर्वाणभारती **3.** (क) मानव जीवने संस्कृत भाषा उपयोगी अस्ति। (ख) आदिम: ग्रन्थ ऋग्वेद: संस्कृत भाषायामेव अस्ति। (ग) अस्या: साहित्यं अति सरसं अस्ति। (घ) संस्कृत भाषाया: व्याकरणं नितान्तं व्यवस्थितं अस्ति। (ङ) वयम् भारतीया: संस्कृत भाषा समाराधनीया: **4.** (क) संस्कृत भाषाया: साहित्यम् सरसं अस्ति। (ख) वयम् संस्कृत अध्ययनेन् श्रेष्ठ भवाम:। (ग) अस्माकं सर्वेषां संस्कृत भाषा समाराधनीया:। (घ) मानवीय गुणानाम् उद्गम स्थान संस्कृतमेव अस्ति। (ङ) पत्रध्वने संस्कृत भाषा सर्वत्र एकरूपता वर्तते। (च) भारतीय जीवने संस्कृतम् अभिव्याप्तम् अस्ति।

अष्टमः पाठः व्याकरणम्

स्वयं याद करें व समझें।

नवमः पाठः देशभक्तिः

हिन्दी अनुवाद– माता पुत्र को कष्ट से जन्म देती तथा उसका पालन करती है। बालक माता की गोद पाकर स्वर्ग से अधिक सुख अनुभव करता है। इसलिए माँ को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ मानते हैं। लेकिन जन्मभूमि हमारी मातृभूमि है। मातृभूमि हमें अनेक प्रकार के अन्न और फल देती है। यह हमें वस्त्र, कपास आदि देकर शरीर को भी सुन्दर वस्त्र देती है। हम सब मातृभूमि के जल स्रोतों से जल पीते हैं। भूमि की मिट्टी से

भवन बनाते हैं अनेक प्रकार की धातु और रत्नों से पृथ्वी से लाभ लेते हैं।

इस प्रकार मातृभूमि बहुत प्रकार के द्रव्यों से हमारा उपकार करती है। उसके लिए हमारा भी कर्त्तव्य है कि हम सब तन-मन वाणी और धन से अपनी मातृभूमि की उन्नति करें। हमारे देश के लिए हमारे देशवासियो के हृदय में प्रेम होना चाहिए।

यदि कभी कोई देश हमारे देश के ऊपर आक्रुमण करता है तब हमारा कर्त्तव्य है कि हमें प्राण देकर भी अपने देश की स्वतन्त्रता की रक्षा करनी चाहिए। यही देशभक्ति है, इसी से प्रेरित हम सब स्वदेश के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा करके मातृभूमि के कर्ज से मुक्त हो सकते हैं। किसी ने कहा हैं- माता जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।

1. (क) मातृभूमि अस्मभ्यम् नाना विविधानि अन्नानि, फलानि च यच्छति। (ख) वयं मातृभूमेः स्रोतेभ्यः जलं पिवामः। (ग) अस्माकं देशवासिनां हृदयेषु प्रेम भवेत्। (घ) कार्पासादिकं दत्वा शरीराणि अपि शोभनैः वस्त्रैः ददाति। (ङ) देशभक्तिः प्रेरिता वयम् स्वकर्तवयम् पूरयन्तः। **2.** (क) मातृभूमि (ख) लभामहे (ग) द्रव्यैः (घ) स्वतन्त्रतायाश्च (ङ) शक्नुमः **3.** (क) बालकः मातु अङ्कम् प्रापित्वा सुत्वं अनुभवति। (ख) मातृभूमि अस्मभ्यम् नाना विविधानि अन्नानि फलानि च यच्छति। (ग) इत्थं या मातृभूमिः बहुविधैः द्रव्यैः अस्मान् उपकरोति। (घ) वयम् प्राणपणेनापि स्वदेशस्य स्वतन्त्रतायाश्य रक्षां कुर्यामः। **4.** (क) माता पुत्रं कष्टेन पालयति। (ख) मातृभूमिः अस्मभ्यम् नाना विविधानि अन्नानि फलानि च यच्छति। (ग) भूमेः मृतिकया भवनानि रचयामः। (घ) पृथिवी नाना विधान धातून ददाति। (ङ) यदि कदाचित् कश्चित देशः अस्माकं देशोपरि आक्रमणं कुर्यात् तदा वयम् अस्य रक्षां कुर्यामः। **5.** (क) माता पुत्र को कष्ट से पैदा करती व पालती है। (ख) भूमि की मिट्टी से भवन बनाते हैं।

दशमः पाठः गणतंत्र दिवसः

हिन्दी अनुवाद– गणतंत्र दिवस स्वतंत्र प्रतिवर्ष भारत का महान् राष्ट्रीय उत्सव है। यह उत्सव प्रतिवर्ष जनवरी मास के 26वें दिन मनाया जाता है। हमारा देश 1947वीं शताब्दी में अगस्त माह के पंद्रहवें दिन स्वतंत्र हुआ था। नवीन संविधान की घोषणा 1950 वीं शताब्दी में जनवरी माह की छब्बीस तारीख को हुई। तब से आज तक यही दिन गणतंत्र दिवस कहलाता है। गणतंत्र में राष्ट्रपति सबसे ऊँचा शासक होता है।

गणतंत्र दिवस पर नगर-नगर में सभी लोग उत्साहित होकर यह त्योहार मनाते हैं। परन्तु भारत की राजधानी दिल्ली तो इस समारोह पर विशेष रूप से देखने योग्य होती है।

राष्ट्रपति भवन से राष्ट्रपति महोदय चार घोडों के आकर्षक रथ पर बैठकर आते हैं। वहाँ सेना और प्रजा उनको अभिनन्दन करती है। समारोह का मुख्य स्थल विजय पथ होता है। उनके आते ही राष्ट्रध्वज को फहराया जाता है। इसके पश्चात् गणतंत्र दिवस की शोभा यात्रा निकलती है। लाखों लोग भारतद्वार के दोनों तरफ एकत्रित होते हैं। लोग अनेक प्रकार के युद्ध के उपकरण की शोभा और दृश्य देखकर खुश होते हैं। रात में राष्ट्रपति भवन और केन्द्रीय सचिवालय बिजली के दीपों से अनोखे प्रकाश से प्रकाशित होता है।

1. (क) अस्माकं देशः 1947 तमे ख्रीष्टाब्दे

अगस्त मासस्य पंचदशे दिवसे स्वतंत्र अभवत्। (ख) नवीन संविधानस्य घोषणा 1950 तमे ख्रीष्टाब्दे जनवरी मासस्य षड्विंशति तमे अभवत् (ग) लक्षण: जना: भारतद्वारं उभयत: एकत्रिता भवन्ति। **2.** (क) राष्ट्रपति: (ख) विजय चतुष्यपथं (ग) आरोहणं (घ) निर्गच्छन्ति (ङ) भवन्ति **3.** (क) गणतंत्र दिवस: स्वतंत्र भारतस्य महान् राष्ट्रीय: उत्सव: विद्यते। (ख) गणतंत्रे राष्ट्रपति: सर्वोच्च: शासक: भवति। (ग) समारोहस्य मुख्यम् स्थलम् विजय चतुष्पथं भवति। (घ) गणतत्रं दिवसे नगरं-नगरं सर्वे जना: उत्साहेन एतत् पर्वं मानयन्ति। (ङ) लक्षश: जना: भारतद्वारं उभयत: एकत्रिता भवन्ति। **4.** (क) भारतद्वार के दोनों ओर लाखों जनसमूह एकत्र होते हैं। (ख) तभी से आज का दिन गणतंत्र दिवस कहा जाता है। (ग) गणतंत्र में राष्ट्रपति शासक होता है। (घ) यह उत्सव प्रतिवर्ष जनवरी माह के 26वें दिन मनाया जाता है। (ङ) वहाँ सेना और प्रजा उनका अभिनन्दन करती हैं। **5.** (क) लक्षश: जना: तत्र एकत्रिता: भवन्ति। (ख) अस्मिन दिने राष्ट्रध्वजस्य आरोहणं भवति। (ग) अद्य पञ्चदशे तिथि अस्ति। (घ) अस्माकं देश: 1947 तमे ख्रीष्टाब्दे स्वतंत्र अभवत्।

एकादश: पाठ: सदाचार:

हिन्दी अनुवाद– सज्जनों का आचरण सदाचार कहलाता है। जैसे- मनुष्य को कभी भी असत्य नहीं बोलना चाहिए। दूसरे का धन नहीं चुराना चाहिए। पाप नहीं करना चाहिए। मूर्ख के साथ मित्रता नहीं करनी चाहिए। कभी भी किसी को भी अपशब्द नहीं कहना चाहिए। आलसी नहीं होना चाहिए। मानव को प्रयत्न से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। अपने देश के लिए धर्म के लिए और कुल के लिए प्राण भी छोड़ देना चाहिए। ईश्वर को भजना चाहिए। समयानुसार अच्छा मधुर बोलना चाहिए। अपना हित कभी नहीं त्यागना चाहिए। निर्धन को दान देना चाहिए। विद्या पाने में धन प्राप्त करने में सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। ऊपर दिए नियमों का पालन करने से मनुष्य सदाचारी होते हैं। इसलिए हमें भी ऊपर कहे गए सदाचार के नियमों का पालन करने में तत्पर होना चाहिए। हमेशा बड़े छात्रों को छात्रों छोत्रों से प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। विद्यालय में भी गुरुओं को छात्रों के साथ सद्भावपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। बड़े बूढ़े जिस प्रकार का आचारण करते हैं बच्चे भी वैसा ही आचरण करते हैं। शिष्ट वंश में वृद्ध, युवा, बालक और महिला सभ्यता से मिलते हैं। बड़ों का सद्व्यवहार देखकर शिशु भी आपस में 'जी' शब्द बोलते हैं। अपशब्द नहीं बोलते। सब का सत्कार करते हैं। बड़े बूढ़ों की आज्ञा का पालन करते हैं। शिष्टाचार से मनुष्य अत्यन्त सुख प्राप्त करते हैं। इसलिए हम सब को सदा शिष्टचारी होना चाहिए।

1. (क) सज्जनानाम् आचार: सदाचार: कथ्यते। (ख) मूर्खै: सह मित्रता न कूयर्ति्। (ग) मानव प्रत्यनेन ब्रह्मचर्यम् पालयेत्।

2. (क) त्यजेत् (ख) सद्भावेन (ग) बालोऽपि (घ) नियमानाम् (ङ) शिष्टाचारिण: **3.** (क) स्वदेशाय, धर्माय कुलाय च प्राणान् अपि त्यजेत्। (ख) ईश्वरं भजेत्, मधुरम् वदेत् च। (ग) धनोपार्जने विद्योपार्जने च सदा प्रयत्नशील: भवेत्। (घ) निर्धनेभ्य: दुखिना च दानम् यच्छेत्। (ङ) नर: कदापि असत्यं न वदेत्। **4.** (क) सज्जनों का आचरण सदाचार कहलाता है। (ख) मूर्खों के साथ मित्रता नहीं

करनी चाहिए। (ग) कभी किसी को अपशब्द नहीं बोलने चाहिए। (घ) शिष्टचार से मनुष्यों को अत्यन्त सुख प्राप्त होता है। **5.** (क) सर्वदा सत्यं वदेत्। (ख) सभ्यताया मानवाः सुखं लभन्ते। (ग) अपशब्दम् कदापि न वदेत्। (घ) शिष्टाचारिणः सुखिनः भवेत्। (ङ) अस्माभिः सदाचारः पालनेतत्परेः भवितव्यम्।

द्वादशः पाठः अस्माकं प्रिय देशः

हिन्दी अनुवाद– प्राचीन काल में भारत पराधीन था। महात्मा गाँधी जवाहरलाल नेहरू आदि के प्रयत्नों से यह देश 1947वें वर्ष में स्वतन्त्र हुआ। यहाँ गणतन्त्र शासन है। सभी राज्यों को मिलाकर भारतीय विधान मानकर देश की उन्नति के कार्य करते हैं। माता की तरह प्रिय मातृभूमि के प्रति हमारा कर्त्तव्य है कि हमें मन वचन, कर्म से देश की स्वतन्त्रता की रक्षा करके भारत की उन्नति करनी चाहिए।

भारत की उत्तर दिशा में पर्वतराज हिमालय स्थित है। यह उत्तर दिशा में प्रहरी की भाँति भारत की रक्षा करता है। हिमालय भारत देश की समृद्धि है। हिमालय से ही नदियाँ निकलती हैं और देश के विशाल भू-भाग को सींचती हैं। अनेक कारणों से भूमि हरी-भरी होती है। अन्न उत्पादन में नदी का महत्व होता है।

भारत का प्राचीन नाम आर्यावर्त था। प्राचीन काल में दुष्यन्त नाम का राजा था। उसका पुत्र भरत महान् वीर था। उसके नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। इसलिए देश हमें प्राणों से भी प्रिय है। भारत देश हमारी मातृभूमि है।

1. (क) भारतः 1947 तमे वर्षे स्वतन्त्रम् अभवत्। (ख) भारतस्य उत्तर दिशायां पर्वतराज हिमालयः विद्यते। (ग) भारतस्य प्राचीन नाम आर्यावर्तः आसीत्। (घ) महान वीरः भरतस्य नाम्ना अस्य नाम 'भारतम्' जातम्। (ङ) नद्यः हिमालयात् निस्सरति। **2.** (क) पराधीनं (ख) गणतंत्रम् (ग) रक्षयन् (घ) नदीनाम् (ङ) भारतस्यः

3. (क) अत्र गणतन्त्रं शासनं वर्तते। (ख) वयं मनसा-वाचा कर्मणा देशस्य रक्षयन् कुर्यामः। (ग) भारत देशः अस्माकं प्राणैः अपि प्रियः। (घ) मातृभूमिस्य रक्षा कुर्यान् अस्माकं धर्मः अस्ति। (ङ) सर्वे मनुष्यः मातृभूमिस्य रक्षार्थ तत्परं भवामः। **4.** (क) पुराकाले दुष्यन्तोनाम राजा अभवत्। (ख) वयं देशस्य उन्नत्यै कार्यं कुर्यामः। (ग) इदं अस्माकं प्रिय भारत देशः अस्ति। (घ) भारतभूमि अस्माकं मातृभूमि अस्ति। (ङ) भारत देशः अस्माकं प्राणैः अपि प्रियः। **5.** (क) सभी (ख) मिलाकर (ग) पृथ्वी को (घ) प्रयास से।

त्रयोदशः पाठः नीति-श्लोकाः

हिन्दी अनुवाद– पाँच वर्ष तक प्यार करना चाहिए। दस वर्ष तक डाँट कर रखना चाहिए। सोलह वर्ष के पुत्र से मित्र की तरह व्यवहार करना चाहिए।

सर्वनाश होते देख ज्ञानी व्यक्ति आधे को छोड़ देते हैं। कठिनाई से सर्वनाश होने पर आधे से ही कार्य करते हैं।

गुण का आभूषण रूप, भोग का आभूषण धन है। सिद्धि का आभूषण विद्या, शील सभी का धन है। प्रिय वाक्य बोलने से सभी मनुष्य खुश होते हैं तो फिर प्रिय बोलने में आलस्य कैसा, अर्थात् आलस्य नहीं करना चाहिए। उत्सव में, व्यसन (बुरी आदत) में अकाल में, शत्रु संकट में, राजा के द्वार पर शमशान घाट में जो साथ दे वही भाई है। अभिवादनशील युक्त तथा नित्य वृद्धों की सेवा करने वाले की चार चीजें बढ़ जाती हैं।

आयु, विद्या, यश और बल। एक अच्छे वृक्ष से पुष्प की सुगन्ध पूरे वन में फैल जाती है जैसे, सुपुत्र से कुल की।

1. (क) षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रमिवाचरेत्

(ख) सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः।

(ग) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे मानवाः तुष्यन्ति।

(घ) आयुर्विद्या यशोबलम् वर्धन्ते।

2. (क) षोडशे (ख) सर्वनाशे (ग) विद्यां (घ) वृद्धोपसेविनः (ङ) सुपुत्रेण

3. (क) षोडशवर्षे पुत्रं मित्रमिवाचरेत। (ख) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे मानवाः तुष्यन्ति। (ग) उत्सवे, शमशाने, व्यसने च पः तिष्ठन्ति सः बान्धवः (घ) पुष्पितेन सुवृक्षेण वन सुवासितं भवति। **4.** (क) पञ्चवर्षाणि पुत्रं लालयेत्। (ख) सर्वनाशे अर्द्धं त्यजति पण्डितः।

(ग) प्रियवाक्यप्रदानेन कः दरिद्रता? (घ) अभिवादनशीलस्य चत्वारि वर्धन्ते। **5.** (क) गुण रूप का आभूषण है धन भोग का। (ख) सारा वनं सुवासित हो जाता है एक सुगन्धित पुष्प से, जैसे एक सुपुत्र से कुल होता है। (ग) उत्सव में, व्यसन में, अकाल में या शत्रु के संकट पर।

चतुर्दशः पाठः होलिकोत्सवः

हिन्दी अनुवाद– हमारे देश में अनेक उत्सव हैं। उनमें से होलिकोत्सव महान है। यह उत्सव फाल्गुन माह की पूर्णिमा को चैत्र मास की प्रतिपदा को होता है। वसन्त के आने पर प्रकृति का सौन्दर्य बढ़ जाता है। वन–उपवन में विविध प्रकार के फूल खिल जाते हैं। आम के वृक्ष पर कोयल बोलती हैं। शीतल मंद और सुगन्धित हवा बहती है। लोग भी प्रसन्न हो जाते हैं। उसी उल्लास का प्रतीक यह उत्सव है।

होलिकोत्सव के आरंभ की कथा यह प्रसिद्ध है– प्रहलाद दैत्यराज हिरण्यकश्चप का पुत्र था। प्रहलाद परम भक्त था। उसने अनेक प्रकार से प्रहलाद को मारने का प्रयत्न किया, परन्तु वह असमर्थ रहा। होलिका उसकी बहन थी। होलिका प्रहलाद को गोद में लेकर अग्नि में प्रवेश कर गई। ईश्वर कृपा से प्रहलाद तो बच गया, किन्तु वह जल गई। अधर्म के ऊपर धर्म की विजय हुई। तब से आज तक यह उत्सव प्रचलित है। प्रथम दिन रात्रि में होलिका दहन करते हैं। फिर दूसरे दिन रंग खेला जाता है। सभी लोग नाचते हैं, गाते हैं और परस्पर मिलते हैं। इस दिन हँसी खुशी का साम्राज्य होता है।

1. (क) होलिकोत्सवः फाल्गुन मासे भवति।

(ख) प्रह्लादः हिरण्यकशिपोः पुत्रः आसीत्।

(ग) तस्य भगिनी होलिका आसीत् (घ) प्रथम दिवसे रात्रौ होलिका दाह क्रियते। (ङ) द्वितीय दिवसे रंग क्रीडा भवति। **2.** (क) अनेके (ख) वसन्तस्य (ग) कुसुमानि (घ) दैत्यराज (ङ) अङ्के **3.** (क) प्रह्लाद परम भक्तः अस्ति। (ख) सः प्रह्लाद हन्तुं प्रयत्नं करति। (ग) होलिका अग्निं प्रविशति। (घ) आम्रेषु कोकिलाः कूजन्ति। (ङ) अधर्मस्य उपरि धर्मस्य विजयः भवति। (च) होलिका तस्य भगिनी अस्ति। **4.** (क) शीतलः पवन वहति। (ख) पुष्पाणि विकसन्ति। (ग) वयम् परस्परं मिलन्ति। (घ) कोकिलाः कूजन्ति। (ङ) दुग्धं मधुरं भवति। (च) ते मनुष्याः सन्ति । **5.** (क) मारने के लिए (ख) जल गई (ग) हवा (घ) गोद में (ङ) बहन (च) प्रथम तिथि

पंचदशः पाठः मातृममता

हिन्दी अनुवाद– एक बार न्यायालय में अनेक लोग एकत्रित थे। वे सभी न्यायधीश के निर्णय को सुनने के लिए उत्सुक थे। दो वकीलों के

साथ एक स्त्री एक बालक को गोद में लेकर आगे की पंक्ति में बैठी थी। इस बालक का नाम शुभाशीष था। दस बजे न्यायालय में कुर्सी पर बैठकर प्रथम अपराध फाईल को पढ़ा। कुछ विचार कर अचानक निर्णय सुनाने के लिए उठ गया। रमा और माला उपस्थित थीं। उन्होंने अपराध फाइल को देखा। शुभाशीष को दोनों गोद लेने को इच्छुक थीं। रमा के द्वारा उपस्थित तथ्य सत्य प्रतीत हो रहे थे और उसी प्रकार माला के तथ्य भी सत्य थे। न्यायाधीश ने कहा, पिछले माह एक भवन के दो अधिकारी का विवाद न्यायालय में आ गया था। एक पूरे भवन का स्वामी कहता था। मैंने आधा-आधा कर दिया। अतः झगड़ा समाप्त हो गया, इसलिए शुभाशीष के दो भाग हो जाने चाहिए। शुभ भाग रमा का एवं आशीष भाग माला का होगा। इसे सुनकर माला मूर्छित हो गई। हाथ जोड़कर आँसू से भरी आँखों से बोली। भगवान! सम्पूर्ण भाग रमा को दे दीजिए। रमा की गोद में आशीष सौ वर्षो तक जीवित रहे। रमा अत्यन्त प्रसन्न हो गई। न्यायाधीश ने पुनः कहा- माँ का प्यार सिद्ध हो गया। माला की ममता के कारण विवाद हुआ। बालक को पालने में माता ही मुख्य होती है। इसलिए माला का ही यह पुत्र है यह सिद्ध हो गया। सभी लोग प्रसन्न हो गए। न्यायाधीश के बुद्धि वैभव की अत्यन्त प्रशंसा की। धन्य हैं न्यायाधीश।

1. (क) ते सर्वे न्यायाधीशस्य निर्णयम् श्रवणाय उत्कण्ठिताः आसन। (ख) रमायाः उपस्थितानि तथ्यानि सत्यानि प्रतीयन्ते। (ग) शुभाशीषः उभयोः अङ्कयोः इच्छतीति। (घ) न्यायाधीशस्य बुद्धिवैभवम् भूरि-भूरि प्रशंसितम्। (ङ) सर्वेजनाः निर्णय श्रुत्वा प्रसन्ना अभवन्। **2.** (क) इच्छतीति (ख) सम्यक् (ग) विधातव्यम् (घ) न्यायाधीशेन् (ङ) लालने **3.** (क) एका स्त्री एकं बालकं अङ्के निधाय तिष्ठतिस्म। (ख) न्यायाधीशः अपराध फाइलम् अपठत्। (ग) अयं बालक रमायाः अङ्के शतम् जीवेत्। (घ) बालकस्य लालने माता एवं मुख्या। (ङ) सम्पूर्ण भागं रमायै देयम्। **4.** (क) न्यायालय परिसरः अनेकाः जनाः उपस्थित स्म। (ख) अग्रिम पंक्त्यां रमाया तिष्ठति। (ग) सः इदं भवनस्य स्वामि अस्ति। (घ) हस्तमुकुलितेन वास्पपूरितेन नयनेन कथयति। (ङ) शतम् जीवेत् मम् आशीषः।

षोडशः पाठः महात्मा गाँधी

हिन्दी अनुवाद– भारतवर्ष के महापुरुष महात्मा गाँधी थे। इन महोदय का पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था। ये सदा सत्याचरण के लिए तैयार रहते थे। महात्मा गाँधी माता-पिता के भक्त थे। बचपन से ही अत्यन्त बुद्धिमान थे। शिक्षकों का आदर उनका मुख्य कर्त्तव्य था। सहपाठियों के साथ प्रेम का व्यवहार था। दुखी लोगों की सहायता के लिए बचपन से महान् धर्मात्मा गिने जाते थे। उच्च शिक्षा हेतु विदेश गए। मोहनदास ने प्रतिज्ञा की कभी मदिरा पान नहीं करूँगा, माँस नहीं खाऊँगा। दूसरी स्त्रियों को माता समान स्वीकारूँगा। पराधीनता के समय अंग्रेज भारतीय लोगों को दुत्कारते थे। अंग्रेज बहुमूल्य रत्न, वस्तुएँ और धन अंग्रेजी राज्य भेज देते थे। यह सोचकर गाँधी महोदय ने आन्दोलन किया। कई बार सत्याग्रह भी किया। अंग्रेज अधिकारियों ने बहुत बार जेल में सजा दे दी। परन्तु महात्मा गाँधी नहीं डरे। अन्त में इस महापुरुष के प्रयत्नों से भारत स्वतन्त्र हुआ। हम सब उन महापुरुष को सादर नमन करते हैं।

1. (क) अस्य महोदस्य पूर्णनाम मोहनदास करमचन्द गाँधी आसीत्। (ख) सः प्रतिज्ञाअकरोत- कदापि मदिरापानं न करिष्यामि मांसं न भक्षिष्यामि। परनारीं मातृवत् स्वीकरिष्यामि। (ग) गौराङ्गाः बहुमूल्यरत्नानि वस्तूनि धनानि च आंग्लदेशं प्रेशयन्तिस्म। (घ) वयं तम् महापुरुषं (महात्मा गाँधी) सादरं नमामः। **2.** (क) महात्मा गाँधी एकः महान पुरुषः आसीत्। (ख) गाँधीजी स्वप्रयासेन भारतं स्वतन्त्रम् अकरोत्। (ग) वयं तम् महापुरुषं सादरम् नमामः। **3.** (क) इस महोदय का पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था। (ख) दूसरी स्त्रियों को माता समान स्वीकार करूँगा। (ग) अंग्रेज अधिकारियों ने अनेक बार कारागार में सजा दी।

सप्तदशः पाठः पत्र-लेखनम्

हिन्दी अनुवाद– (बीमारी के अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र)

सेवा में

आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय

महर्षि विद्यामन्दिर बुलन्दशहर नगर

महोदय

यह प्रार्थना है कि पिछले दिन से मैं ज्वर से पीड़ित हूँ। चिकित्सक (डॉक्टर) महोदय ने विषम (कठिन या तेज) ज्वर बताया है। इस कारण मैं विद्यालय में अध्ययन के लिए आने में असमर्थ हूँ।

इस कारण प्रार्थना है कि पाँच दिन का अवकाश प्रदान करें। आपकी अति कृपा होगी।

आपका शिष्यः

आशुतोष द्विवेदी चार (अ)

तारीखः 5-7-2015

(जन्मदिन के लिए निमंत्रण-पत्र)

धर्म एन्क्लेव कानपुर नगर

27-7-2015

प्रिय मित्र रविकान्त

सप्रेम हृदयमिलन

यहाँ सब कुशल हैं वहाँ भी होंगे। कुशलता के उपरान्त समाचार जानने योग्य है कि मेरा जन्मदिन जुलाई माह की 25 तारीख को होगा। इस शुभ अवसर पर आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है। इस कारण समयानुसार आकर कृतार्थ करो, यह मेरी विनती है।

आपका मित्र

रमाकान्त शर्मा

धर्म एन्क्लेव, निकट

हरि एन्क्लेव कानपुर

अष्टादशः पाठः दूरदर्शनम्

हिन्दी अनुवाद– यह विज्ञान का युग है। विज्ञान के अनेक आविष्कार हैं। टेलीविजन की खोज मनोरंजन के क्षेत्र में आश्चर्यजनक और महत्त्वपूर्ण है। टेलीविजन से लोग न केवल कार्यक्रम सुनते हैं। परन्तु कहे हुए का चित्र भी देखते हैं।

दूरदर्शन मनोरंजन का साधन है। दूरदर्शन शिक्षा का साधन भी है। दूरदर्शन से खेल समाचार, देश विदेश की स्थिति का ज्ञान होता है। दूरदर्शन पर अनेक विज्ञापन भी देखते हैं। उपग्रह से खेल का सीधा प्रसारण दिखता है। संगीत, नृत्य, चलचित्र, नाटक, भक्ति, संगीत आदि का प्रसारण दूरदर्शन से होता है। हमारे देश में दूरदर्शन का प्रसारण बढ़ गया है। दूरदर्शन से गणतंत्र दिवस, स्वतन्त्रता दिवस का प्रत्यक्ष प्रसारण होता है। हम सब घर में रहकर ये कार्यक्रम देखते हैं। आज रविवार है। हम सब चलचित्र देखेंगे। दूरदर्शन

एक श्रेष्ठ यन्त्र है। नित्य नए नाटक, गीत और नृत्य दूरदर्शन दिखाता है।

1. (क) दूरदर्शन, दूरभाष, राकेट यन्त्रम, इत्यादि विज्ञानस्य अनेके अविष्कारा: सन्ति। (ख) दूरदर्शने शिक्षा, समाचार, क्रीडा, संगीत आदि पश्यन्ति। (ग) दूरदर्शनं एकं श्रेष्ठं यन्त्रं अस्ति। **2.** (क) विज्ञानस्य (ख) आविष्कारा: (ग) दूरदर्शनम्: (घ) प्रत्यक्ष (ङ) यन्त्रम्

3. (क) दूरदर्शनम् शिक्षाया: साधनं अपि अस्ति। (ख) एतत् विज्ञानस्य युगम्। (ग) उपग्रहेन क्रीडाया प्रत्यक्ष प्रसारणम् दृश्यन्ते। (घ) अद्य रविवार: अस्ति। (ङ) दूरदर्शनं मनोरंजनस्य महत्वपूर्णं साधनं अस्ति।

4. (क) हमारे देश में दूरदर्शन का प्रसारण बढ़ा है। (ख) उपग्रह से खेल का सीधा प्रसारण बढ़ा है। (ग) रोज नए नाटक, गीत नृत्य दूरदर्शन दिखाता है। (घ) विज्ञान के अनेक अविष्कार: हैं। (ङ) दूरदर्शन एक श्रेष्ठ यन्त्र है।

5. (क) विज्ञानस्य अनेके अविष्कार: सन्ति। (ख) दूरदर्शनं मनोरंजनस्य साधनं अस्ति। (ग) उपग्रहेण क्रीडाया प्रत्यक्ष-प्रसारणम् दृश्यन्ते। (घ) वयम् दूरदर्शने चित्रानि पश्याम:

6. (क) नए (ख) युग (ग) सुनते हैं। (घ) देखते हैं।

एकोनविंश पाठः वन्दे मातरम्

हिन्दी अनुवाद– हे मातृभूमि माँ शतशत नमन करें हम। जलवायु अन्न सुमधुर फल, फूल दायिनी माँ, गौरव प्रदायिनी माँ।

अति शुभ्र ज्योत्सना से, पुलकित सुयामिनी है। द्रुमदल लता आदि खिली है शोभा सुहावनी है। सुमधुर वाणी से युक्त, सुखद वर देने वाली मातृभूमि माँ को नमन है।

संस्कृत श्लोक-5

प्रथम पाठः वंदना

1. (क) गोदावरी, सह्यकन्यादय: (ख) राज राजा विश्वन्द्यां **2.** (क) यहाँ व्यास, वाल्मीकि, बाण आदि कवि:, शुक्र, चाणक्य, कामन्दका मंत्री, धर्मराज (युधिष्ठिर) और महाराजाधिराज हुए। संसार में वन्दनीय भारतीयों की इस भूमि को हम सब नमस्कार करते हैं।

3. (क) सिन्धु नदी अति विस्तृत अस्ति। (ख) इयम् गोदावरी नदी अस्ति। (ग) नर्मदा भारतदेशस्य प्रमुख नद्य: अस्ति। (घ) धरा अत्यन्त विस्तृत भवति। (ङ) भुवम् अनेका: जना: निवसन्ति।

द्वितीयः पाठः विद्यामहत्वम्

हिन्दी अनुवाद– माता की तरह रक्षा करती है पिता की तरह हित के कार्यों में लगती है। पत्नी की तरह दुख को दूर कर देती है। लक्ष्मी देवी है चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है क्या-क्या नहीं देती है अर्थात् कल्पलता की भाँति विद्या सब कुछ देती है। कामधेनु की तरह गुणी विद्या आने वाले समय में फल देने वाली है। विदेश में माता जैसी विद्या गुप्त धनं की तरह याद की जाती है। न चोर चुरा सकते हैं न राजा छीन सकता है न भाई बाँट सकता है न ही भार है।

खर्च करने से प्रतिदिन बढ़ती है विद्या धन सभी धनों में प्रधान धन है।

अन्न दान करना श्रेष्ठ दान है विद्या दान उससे अधिक श्रेष्ठ है अन्न से कुछ क्षण तृप्ति होती है और विद्या जीवन पर्यन्त तृप्ति देती है।

विद्या धन श्रेष्ठ धन है वह मुख्य और अलग प्रकार का धन है, दान देने से बढ़ता है तथा ले जाने में बोझ नहीं होता।

1. (क) कीर्तिम् वितनोति। (ख) मातृसदृशी

भवति। (ग) सर्वधनम् प्रधानम्। (घ) अन्नदानात् परम् दानम् विद्यादानम् अस्ति।

2. (क) वितनोति (ख) मातृसदृशी (ग) भ्रातृभाज्यं (घ) विद्यादानं (ङ) दानेन

3. (क) विद्या कल्पलतेव किं किं न साधयति? (ख) विद्या कामधेनु गुणा अस्ति य प्रकाले फल ददाति। (ग) विद्याधनं चौर न हार्यं शक्यते। (घ) अन्नदानेन क्षणिक तृप्तिः भवति।

4. (क) प्रवासे विद्या मातृसदृशः भवति। (ख) अन्ने क्षणिक तृप्ति भवति। (ग) विद्याधनं नीयते सरलम् अस्ति। (घ) विद्या लक्ष्मी तनोति कीर्तिं वितनोति च। (ङ) विद्या पितेन हिते नियुक्ते।

तृतीय पाठः मातृभक्तिः देशभक्तिश्च

हिन्दी अनुवाद– माता और मातृभूमि दोनों ही सबसे उत्तम है। माता पुत्र के लिए अपने कष्ट नहीं सोचती है। वह सदा उसके सुख की चिन्ता ही करती है। माता बालक के लिए सब कुछ भी त्याग सकती है। अतएव लोगों को माता की पूजा हमेशा करनी चाहिए।

हमारी माता जिस प्रकार हमें प्यार करती है उसी प्रकार यह हमारी जन्मभूमि भी हमें पालती है। इसके ही जल से वायु और मिट्टी से हम सब निरन्तर परिपुष्ट होते हैं। इसकी ही गोद में अपने बालमित्रों के साथ स्वच्छन्द खेलते हैं। इसलिए अपने देश के प्रति हमारे हृदय में सम्मान और आदर स्वभाविक ही है। कहीं भी गया मनुष्य जन्मभूमि को सदा याद रखता है। भारतवर्ष हमारी जन्मभूमि है प्राचीन समय में चक्रवर्ती भरत नाम का राजा था। उसके राज्य करते हुए देश ने 'भारतवर्ष' नाम प्राप्त किया। यहाँ गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी आदि महानदियाँ हैं। द्राक्षा, दाडिम, जामुन, आम आदि फलों से परिपूर्ण यह सुफला है। हम सब भारतीय देवों से भी श्रेष्ठ हैं क्योंकि देवता भी हमारी जन्मभूमि में जन्म लेने के लिए प्रकट होते हैं। विष्णुपुराण में ठीक कहा गया है–

देवता भी गीत गाते हैं कि वे लोग धन्य हैं जो भारतभूमि में जन्मे हैं।

हमारी पराधीनता का मुख्य कारण एकता का अभाव था। अतः हम सभी को यथाशक्ति कलह छोड़ देनी चाहिए। जन्मभूमि के गौरव को बढ़ाने के लिए प्रयास करना चाहिए। इस देश के गौरव को बढ़ाने के लिए प्राण भी त्याग देते हैं–

''माता व जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं।''

1. (क) भारतवर्षः (ख) देवाः अपि अस्माकं जन्मभूमौः जन्मगृहणाय स्पृहयन्ति। (ग) स्वर्गादपि गरीयसी (घ) गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमि भागे स्वर्गापवर्गास्पदमार्ग भूते भवन्ति भूयः पुरुषाः पुरस्तात् (ङ) एकतायाः अभावः **2.** (क) बालकस्य (ख) बालमित्रैः (ग) जन्मभूमिः (घ) पुराचक्रवर्ती (ङ) जन्मभूमेः **3.** (क) माता पुत्रस्य कृते निजं कष्टम् नैव चिन्तयति। (ख) स्वदेशं प्रति अस्माकं हृदये सम्मानः आदरश्च स्वभाविक एवं अस्ति। (ग) अस्माकं पराधीनतायाः मुख्य कारणम् एकतायाः अभावः आसीत्। (घ) अतः अस्मीभि यथाशक्ति कलहः परिहर्तव्यः। (ङ) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी।

चतुर्थः पाठः धनस्य महत्त्वम्

हिन्दी अनुवाद– संसार में सर्वश्रेष्ठ वस्तु धन ही है। धन के बिना कार्य नहीं सिद्ध होते, जीविका का निर्वाह कभी नहीं होता। धन के बिना विद्या प्राप्त नहीं की जा सकती, न्यायालय में न्याय भी नहीं हो सकता। धन बिना सभी वस्तुएँ नीरस प्रतीत होती हैं।

जिसके पास धन नहीं होता उसकी (कोई भी इच्छा) पूरी नहीं होती। धन से मनुष्य सुख के सागर में तैरते हैं। निर्धनता सभी मुसीबतों का घर है। गरीबी और क्लेश से मरना अत्यन्त दुखकारी है। धन नष्ट होने पर कोई मित्र नहीं होता। धनहीन के प्रेम से भी लोग अलग रहते हैं। उसका अपना भी पराया होता है। धन के बिना शील से युक्त शशि की भी कान्ति मलिन हो जाती है। धन के बिना बन्धु के वाक्य पर भी विश्वास नहीं होता। धनहीन व्यक्ति का जीवन व्यर्थ ही प्रतीत होता है।

प्राचीन समय के मुनियों ने भी धन की आवश्यकता और उपयोगिता को स्वीकारा है। चारों फल (धर्म अर्थ काम मोक्ष) की प्राप्ति धन से ही संभव है। धन से ही धर्म भी फैलता है। अत: सभी को धन संग्रह करना चाहिए। धन से अकुलीन भी कुलीन हो जाते हैं। संसार में समस्त गुण धन पर ही आश्रित हैं। उचित कहा गया है–

जिसके पास धन है वह कुलीन पण्डित सुनने योग्य गुणी है वह ही वक्ता सच देखने वाला सब गुणों वाला स्वर्ण समान है।

1. (क) धनै मानवा: सुखसागरं तरन्ति।

(ख) संसारे सर्वश्रेष्ठ वस्तु धनमेव अस्ति।

(ग) निर्धनता सर्व आपदां गृहं अस्ति।

(घ) धननैव धर्मोऽपि प्रसारति। (ङ) धनै अकुलीनाऽपि कुलीना भवन्ति। **2.** (क) विद्योपार्जनं (ख) कार्याणि (ग) धन बिना (घ) अकुलीनाऽपि (ङ) धनमेवाश्रयन्ति **3.** स्वयं कीजिए। **4.** (क) स: अत्यन्त दरिद्रम अस्ति। (ख) धर्मोऽपि धनेन प्रसरति। (ग) धनेन बिना न कोऽपि बान्धवा: (घ) सर्वे: कार्याणि धनेन सिद्धयन्ति। (ङ) कार्याणि परिश्रमेणसिद्धयते (च) धनै सुखसागरं मानवा: तरन्ति (छ) धनेन बिना न कोऽपि पिण्ड:।

पंचम: पाठ: सदाचार:

हिन्दी अनुवाद– सज्जनों का आचरण सदाचार कहलाता है। सदाचारी व्यक्ति अपनी इन्द्रियों को वश में करके सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करता है। वह सत्य बोलता है। प्रात: काल उठकर पिता को नमस्कार करता है। गुरु का आदर करता है और परोपकार करता है। वह मानव सदाचारी होता है।

सदाचारयुक्त व्यक्ति सब जगह आदर प्राप्त करता है। सदाचार से बुद्धि बढ़ती है कीर्ति दिशाओं में फैलती है दुर्गुण भी दूर होते हैं। कुविचारों की उत्पत्ति नहीं होती। पाप कर्म प्रवृत्ति की सदाचार से विश्व में प्रतिष्ठा होती है। सदाचार से मानव दीर्घायु होता है। अत: महर्षि भी 'आचार परम धर्म है' यह स्वीकार करते हैं। आचारवान पुरुष धर्म का ज्ञाता होता है सत्चरित्र सत्यवादी होता है। जो दुराचारी हैं वे निष्क्रिय अधर्मकर्ता, पापी और अल्पायु होते हैं। वह जो चरित्रवान है दूसरी स्त्रियों से माता की तरह व्यवहार करता है। कन्या और बालिका को अपनी बहन की तरह देखता है, दूसरे के धन को मिट्टी की तरह देखता है। सदाचार से संसार की उन्नति होती है। अत: हमें सदाचारी होना चाहिए। सदाचार से आयु प्राप्त होती है सदाचार से धन प्राप्ति होती है सदाचार से कीर्ति प्राप्त होती है।

1. (क) सज्जनानाम् आचार: इति सदाचार कथ्यते। (ख) सदाचारयुक्त: जन: सर्वत्र आदरं लभते। (ग) दुराचारी अल्पायु: भवति। (घ) सच्चरित्र: परदारेषु मातृवत् व्यवहारम् करोति। (ङ) आचार: आयु: लभते। **2.** (क) आदरं

(ख) पापकर्मणि (ग) सदाचारेण (घ) दीर्घायुः (ङ) स्वभगिनीवत् **3.** (क) सदाचारी सर्वदा सत्यं वदति। (ख) सदाचारी जनाः स्वकीयानि इन्द्रियाणि वशेन करति। (ग) देशस्य उन्नति सदाचारी जनेन भवति। (घ) सदाचारी परद्रत्येण लोष्टवत् मन्याति। (ङ) वयम् सदाचारिणः भव देशस्य रक्षा कुर्याम। **4.** स्वयं करें।

षष्ठः पाठः वैज्ञानिकोपकरणानि

हिन्दी अनुवाद– आधुनिक युग आविष्कार का युग है। हमारे घर में भी विज्ञान से निर्मित अनेक यन्त्र हैं।

यह फ्रीज उपकरण है इसमें स्थित वस्तु ठंडी रहती है आज घर–घर में इसका उपयोग है।

यह रेडियो यन्त्र है। यह संसार में आकाशवाणी शब्द से परिचित है। इस यन्त्र की सहायता से हम सब वृतान्त, भाषण, बातें और गीत सुनते हैं। अनेकों शैक्षिक कार्यक्रम प्रान्त में और देश–विदेश में वार्ता भी प्रसारित होती है। यह दूरदर्शन है। यह अत्यन्त आधुनिक साधन है। दूरदर्शन में हम विविध कार्यक्रम देखते हैं और सुनते हैं।

यह वायुयान है। यह तेज गति से आकाश में उड़ता है। इससे लोग आकाश मार्ग से थोड़े समय में ही दूर स्थान अथवा विदेश जाने में सफल होते हैं।

यह कम्प्यूटर यन्त्र है। इससे सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। आज शिक्षा क्षेत्र में भी इसकी बड़ी भूमिका है। इसके लिए संस्कृत भाषा अत्यन्त उपयोगी है।

यह अस्थिर टेलीफोन है। इस यन्त्र से लोग दूर से लोगों के साथ बात करने में समर्थ होते हैं। यह आपस में बातचीत के आदान–प्रदान के लिए उपयोगी यन्त्र है।

यह चित्र यन्त्र है। इसकी सहायता से महत्वपूर्ण लेख पुस्तकों की प्रतिछाया होती है। आज इसकी बहुत से क्षेत्रों में आवश्यकता है।

1. (क) वृत्तानि, भाषणानि, वार्ता, गीतानि च श्रणवन्ति। (ख) अनेन यन्त्रेण वयं दूरस्थैः जनैः सह वार्तालापं समर्थाः भवामः। (ग) अस्य सहाथ्येन महत्वपूर्णलेखानां पुस्तकानां च प्रतिच्छाया भवति। (घ) वायुयानं आकाश मार्गे उड्डयति। **2.** (क) महत्वपूर्णलेखानां (ख) अत्याधुनिक (ग) शीतलानि (घ) शिक्षाक्षेत्रै **3.** (क) आधुनिक युगं विज्ञानस्य युगं अस्ति। (ख) अद्य गृहे–गृहे अस्य उपयोगः भवति। (ग) अनेकै शैक्षिकाः कार्यक्रमाः अस्येन प्रसारिता भवन्ति। (घ) एतद् द्रुतगत्या आकाशे उड्डयते। **4.** (क) दृश्यश्रव्ययन्त्रम् (ख) संवादयन्त्रम् (ग) त्वरितकार्ययन्त्रम् (घ) आकाशगामिवाहनम् (ङ) श्रव्ययन्त्रम् (च) प्रतिच्छाया

सप्तमः पाठः संघे शक्ति

हिन्दी अनुवाद– इस समय संसार में एकता की अति आवश्यकता है। जिस राष्ट्र में एकता का अभाव है वह राष्ट्र पराधीनता के जाल में फँसा है। हमारा देश भी एकता के अभाव में कुछ वर्षों पूर्व परतन्त्रता के जाल में बँधा था। पर जैसे ही भारतीयों में एकता की भावना जागी तब उन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्त की। जलबिन्दु के समूह से नदी और सागर बनते हैं। मिट्टी के कण के समूह ही पर्वत होते हैं। तन्तु के समूह से ही पट बनते हैं। छोटे तृण ही बड़ा रूप (रस्सी) धारण करते हैं, उससे हाथी भी बँध जाते हैं। एकता से मानव बलवान होता है।

एकता से ही समाज, राष्ट्र और संसार उन्नति पथ पर जाता है। सभी मनुष्य एकता की भावना से युक्त हों। उनके गमन, विचार, मन, भाषण

और संकल्प आदि एकता की भावना से प्रेरित हों। इस प्रकार हम सब संसार में सुख-शान्ति प्राप्त करने में समर्थ होंगे। जहाँ एकता का अभाव हो वहाँ सुख-समृद्धि का भी अभाव होता है। अत: देश में सुख समृद्धि प्राप्त करने के लिए एकता धारण करनी चाहिए। एकता का अद्‌भुत प्रभाव है जैसे- छोटा होने पर भी वस्तु से कार्य सिद्‌ध होते हैं तृण में गुण होने पर ही वह मस्त हाथी को बाँध लेता है।

1. (क) यद् राष्ट्रे एकताया: अभाव: अस्ति, तद् राष्ट्रं परतन्त्रता पाशबद्धं भवति। (ख) तन्तु समूहेन पर: जायते। (ग) यत्र एकताया अभावो तत्र सुख समृद्धि: अपि अभाव:। (घ) अल्पानापि वस्तुनाम् संहति कार्यसाधिका । तृणगुणत्वमापन्नै: बध्यते मत्तदन्दिवन: ।।

2. (क) जलबिन्दु (ख) बलवान् (ग) एकत्व (घ) सुखशान्तिं **3.** (क) एकतयैव समाज: राष्ट्रं च बलवान भवति। (ख) यदा भारतीयेषु एकताया भावना जागृति अभूत, तदा ते स्वातन्त्रयं अलभत्। (ग) यत्र एकता अस्ति तत्र जना: शान्ति सुखेन च निवसन्ति। (घ) वयम् एकताया: भावना निवसाम:। (ङ) एकताया मानवो बलवान भवति। **4.** स्वयं करें।

अष्टम: पाठ: विद्यामन्दिरम्

हिन्दी अनुवाद– हमारे ज्ञान नेत्र को खोलने के लिए ही विद्या मन्दिर होते हैं। विद्या मन्दिर हमारे लिए न केवल विद्यालय है अपितु हमारा सबकुछ हैं। यहाँ पुस्तकों का पठन-पाठन ही नहीं होता, अपितु सदाचार का पाठ भी पढ़ते हैं। विनय और अनुशासन का शिक्षण होता है। समाज सेवा और देशभक्ति छात्र ग्रहण करते हैं। हमारा विद्यालय नगर से बाहर सुन्दर स्थान पर एकान्त में स्थित है। हमारे विद्या मन्दिर में सुयोग्य अध्यापक हैं वे हमें स्नेह से पढ़ाते हैं। गुरुओं के सद्‌व्यवहार से सभी छात्र आनन्दित रहते हैं। शिक्षा के विषय में हमारा विद्यामन्दिर सभी प्रदेशों में प्रसिद्ध है। इसलिए अन्य प्रान्तों से भी छात्र यहाँ अध्ययन के लिए आते हैं। प्रतियोगिता परीक्षाओं में हमारे विद्यालय के छात्र विशेष स्थान पाते हैं। वे न केवल पढ़ने में योग्य हैं, अपितु खेलने, दौड़ने संगीत के अभ्यास में और बाजा बजाने में प्रवीण हैं। हमारे विद्यालय में छात्रों के खेलने के लिए बड़ा खेल का मैदान है। यहाँ सैनिक शिक्षा का भी प्रबन्ध है। जो खेल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाते हैं उन्हें पुरस्कार प्राप्त होते हैं। जो अच्छा कार्य करते हैं वे सदा पुरस्कृत होते हैं। छात्रों के स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए व्यायाम, मल्लयुद्‌ध आदि का भी प्रबन्ध है। इसलिए छात्र हष्ट-पुष्ट शरीर विकसित तन और भद्र दिखने वाले हैं। आज हमारा यह कर्त्तव्य है कि सभी प्रकार से हम सब अपने अपने विद्या मन्दिर की कीर्ति, चारों दिशाओं में बढ़ाने का प्रयास करें।

1. (क) अस्माकं विद्यामन्दिर: नगरात् बहिरेकान्ते सुरम्यस्थले स्थितोऽस्ति। (ख) ते सदा पुरस्कृता भवन्ति। (ग) वयं श्व श्व विद्यामन्दिरस्य कीर्तिं चतुर्दिक्षु: विस्तारयितुं प्रत्येक क्षेत्रे अव्वल प्रयाशम कुर्म: (घ) गुरूणां सद्‌व्यवहारेण छात्रा: पाठयन्ति।

2. (क) क्रीडाक्षेत्रम् (ख) विद्यामन्दिरे (ग) अस्माकं (घ) विस्तारयितुं

3. (क) अस्माकं विद्यालय सुरम्यस्थले स्थितोऽस्ति। (ख) छात्रस्य ज्ञानचक्षु: विकासार्थम् एवं विद्यामन्दिरम् भवति। (ग) छात्राणाम् क्रीडनाय् सुव्यवस्था अस्ति। (घ) अस्माकं विद्यामन्दिरे सुयोग्या: आचार्य: सन्ति।

(ङ) ये छात्राः शोभनं कर्म कुर्वन्ति, ते पुरस्कृता भवन्ति। **4.** स्वयं करें।

नवमः पाठः महान् पुरुषः प्रश्नोत्तरि

हिन्दी अनुवाद– यह कौन हैं, यह राष्ट्रपिता मोहन दास करमचन्द गाँधी हैं। यह कैसे राष्ट्रपिता हैं? यह वर्तमान भारत के पिता हैं। गाँधी जयन्ती कब होती है? गाँधी जयन्ती अक्टूबर महीने के दूसरे दिन होती है। यह कैसे प्रसिद्ध हैं? इन्होंने सत्याग्रह और अहिंसा आन्दोलन से परतंत्र भारत को स्वतंत्र कराया। इन्होंने अन्य क्या कार्य किया? इन्होंने देश हित के लिए अपना जीवन दे दिया।

यह कौन है? यह हमारे राष्ट्र के वर्तमान राष्ट्रपति माननीय ए०पी०जे० अब्दुल कलाम हैं। हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति माननीय डॉ० राजेन्द्र प्रसाद थे। हमारे दूसरे और तीसरे राष्ट्रपति कौन हैं? दूसरे राष्ट्रपति डॉ जाकिर हुसैन और तीसरे सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन् महाशय हैं।

डॉ० जाकिर हुसैन की क्या विशेषता थी?

यह नवीन प्राथमिक शिक्षा पद्धति के विशेष जानकार थे। यह कौन? यह डॉ० भीमराव अम्बेडकर हैं। यह क्यों प्रसिद्ध हैं? स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण में इनका महत्वपूर्ण योगदान था। डॉ० अम्बेडकर न समाज के हित के लिए तथा दलित लोगों के उत्थान के लिए बहुत प्रयत्न किया।

1. (क) गाँधी जयन्ती अक्टूबर मासस्य द्वितीय-दिवसे भवति। (ख) डॉ० जाकिर हुसैन नूतनायाः प्राथमिक शिक्षा पद्धतेः विशेषज्ञः आसीत्। (ग) स्वतन्त्र भारतस्य संविधान निर्माणे अस्य महत्वपूर्ण च योगदानम् आसीत्। (घ) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद अस्माकं राष्ट्रस्य प्रथमः राष्ट्रपति आसीत्। (ङ) सर्वपल्ली डॉ० द्वितीय राष्ट्रपति आसीत्। **2.** (क) फलम् (ख) ईश्वरं (ग) जाकिर हुसैनं (घ) विश्वविद्यालयम् (ङ) भवनं (च) विदूषीम् (छ) पुत्रीः **3.** (क) गाँधी जयन्ती अक्टूबर मासस्य द्वितीय दिवसे भवति। (ख) राजेन्द्रप्रसाद राष्ट्रस्य प्रथमा राष्ट्रपति आसीत्। (ग) डॉ० भीमराव अम्बेडकर कथम् प्रसिद्धम्? (घ) डॉ० जाकिर हुसैन कथं क्षेत्रं विशेषज्ञः आसीत्? (ङ) सर्वपल्ली राधाकृष्णम् तृतीय राष्ट्रपति आसीत्। **4.** (क) इन्होंने देश के हित के लिए अपना जीवन दे दिया। (ख) ये प्राथमिक शिक्षा के विशेषज्ञ थे। (ग) संविधान निर्माण में उनका अपूर्ण योगदान है। (घ) ये वर्तमान भारत के पिता हैं। (ङ) डॉ० अम्बेडकर ने दलित जनों के उत्थान के लिए बहुत प्रयास किए। **5.** (क) अयं (ख) कार्यम् (ग) कदा (घ) वैशिष्ट्यम् (ङ) अयं **6.** (क) पिता (ख) अपना जीवन (ग) विशेष जानकार (घ) विशेषता (ङ) भलाई के लिए (च) भलाई के लिए

दशमः पाठः पिपासु काकः

हिन्दी अनुवाद– एक बार कोई कौआ गर्मी से प्यास से पीडित हो गया। जल पाने के लिए वह इधर-उधर घूमने लगा। लेकिन जल पाने में समर्थ न हो सका। अन्त में एक बगीचे में पेड़ के नीचे एक पानी का घड़ा देखा। उस पानी के घड़े को देखकर वह प्रसन्न हो गया। वह घड़े के समीप आया। उस पानी के घड़े में थोड़ा ही जल था। वह अत्यन्त निराश हुआ। भाग्यवश उस पानी के घड़े के समीप कुछ पत्थर के टुकड़े पड़े थे। कौए ने एक-एक पत्थर का टुकड़ा चोंच में लेकर उस पानी के घड़े में डाल दिया। धीरे-धीरे पानी घड़े में ऊपर आ गया। तब कौए ने मन भर के पानी पिया। पानी पीकर कौआ

सोचने लगा। मुझे कार्य का ही फल मिला। जो लोग संसार में कार्य करते हैं वे सफल होते हैं।

1. (क) काकः, पिपासाया (ख) जलं (ग) देवयोगात्, पाषाणखण्डाः (घ) यथेष्टम् (ङ) संसारे, सफलाः **2.** (क) जलं प्राप्तम् सः इतस्ततः अभ्रमत्। (ख) जलकुम्भं विलोक्य सः प्रसन्नो अभवत्। (ग) जलकुम्भे अल्पमेव जलम् आसीत्। (घ) ये जनाः परिश्रम कुर्वन्ति, ते सफलाः भवन्ति। (ङ) सः अतीव निराशः अभवत्। (च) उद्यमम् कर्तुम् प्राणिनाः सफलाः भवन्ति। **3.** (क) लेकिन जल प्राप्त करने में सफल न हुआ। (ख) वह घड़े के पास आ गया। (ग) वह अत्यन्त निराश हुआ (घ) तब कौए ने इच्छानुसार जल पिया। (ङ) उस घड़े में पानी थोड़ा था। **4.** (क) काकः (Crow)(ख) उद्याने (Garden) (ग) जलं (Water) (घ) कुम्भं (Pitcher) (ङ) प्राणिनः (Creature) (च) पाषाण (Stone)

एकादशः पाठः ज्ञानम् चेतनायाम्

हिन्दी अनुवाद– बातचीत

(तब आचार्य प्रवेश करते हैं)

आचार्य– कक्षा के सभी छात्र उपस्थित हैं।

कक्षानायक– हाँ श्रीमान सभी उपस्थित हैं।

आचार्य– आज में ज्ञान के विषय में पढ़ाऊँगा।

कक्षानायक– हे श्रीमान! ज्ञान क्या होता है?

आचार्य– 'ज्ञान' यह श्रेष्ठ है। यह श्रेष्ठ नहीं है तथा पुरुष के हानि लाभ क्या हैं? यह अपना है वह पराया है हित-अहित के विषय में जानन में समर्थ होता है। यही ज्ञान कहलाता है ज्ञान चेतना में निहित है।

कक्षानायक– हे श्रीमान। चेतना क्या होती है?

आचार्य– हे बालक! समस्त ज्ञान का आधार चेतना ही होती है। सावधानी से सुनो सम्पूर्ण विश्व के ज्ञान का आधार, भूत वर्तमान की व्यवस्था ज्ञान 'चेतना' है। शुद्ध चेतना ही शुद्ध ज्ञान होती है। चेतना के बिना ज्ञान का विकास नहीं हो सकता। अतः पुरुष को पहले ईश्वर चेतना देते हैं। चेतना से स्वतः ही ज्ञान प्राप्त हो जाता है। ज्ञान प्राप्त करने में गुरु की कृपा आवश्यक होती है।

कक्षानायक– हे आचार्य! गुरु की क्या परिभाषा है?

आचार्य– जो अंधकार से प्रकाश में लाए वह गुरु है। गुरु हमारे ज्ञान के नेत्र खोलने में समर्थ हैं अन्य कोई समर्थ नहीं है। गुरु की आज्ञा का हमेशा पालन करना चाहिए। कभी भी आज्ञा भंग नहीं करनी चाहिए। हमें त्रिदेव की तरह सम्मान करना चाहिए।

कक्षानायक– हे श्रीमान! त्रिवेद कौन हैं?

आचार्य– मातृदेव, पितृदेव, आचार्य देव ये तीन ही त्रिदेव हैं। हमें इनकी आज्ञा का हमेशा पालन करना चाहिए। गुरु ही हमें अन्धकार से निकालने में समर्थ होता है।

1. (क) चेतना एवं भवति। (ख) अन्धकारात् प्रकाशयति (ग) मातृदेव, पितृदेव, आचार्यदेवः च त्रिदेवाः। (घ) चेतनायाम् निहितम् भवति। **2.** (क) छात्रा (ख) शद्धज्ञानं (ग) अंधकारात् (घ) आज्ञा सर्वदा **3.** (क) गुरु अज्ञानतयः दूरं कर्तुम् समर्थः अस्ति। (ख) अद्य अहम् चेतनाया विषये पाठयामि। (ग) सर्वे छात्राः सावधान भव श्रुणोत् (घ) माता-पिता गुरु च आदरणीयाः भवेत्। (ङ) अस्माकं गुरु आज्ञा सर्वदा पालनीया। **4.** स्वयं करें।

द्वादशः पाठः धर्मस्य प्रथमं लक्षणम्
(अहिंसा)

हिन्दी अनुवाद– आचार्य– हे बालकों, आज

हम सब अहिंसा के विषय में पढ़ेंगे। सुनो मैं एक कथा प्रस्तुत करता हूँ। एक बार मुनि यज्ञ की लकड़ी लाने हेतु वन गए। वहाँ बहुत से पशुओं को बाँधकर लाते हुए एक निषाद को देखा। मुनि ने यह मनु वाक्य बोले–

अहिसां सत्य है इन्द्रियों को वश में करना, विद्या प्राप्त करना शान्तिवान होना दस धर्म के लक्षण हैं, इसलिए हिंसा का परित्याग करो। बहेलिये ने मुनि के वचन सुनकर कहा– हे मुनिवर! सत्य कहा है– भूख के लिए क्या पाप नहीं करना चाहिए। मुनि ने उत्तर दिया– अहिंसा तीन प्रकार से होती है। व्यक्ति यदि किसी मानव का अनिष्ट न सोचे, वह मन से अहिंसा है। यदि कठोर वचन न बोले, अच्छे वचन या किसी को दुखी न करे अपितु मधुर वचन या सुख दे, वह बोलने की अहिंसा है। यदि व्यक्ति किसी के जीवन का हनन न करे, प्रहार आदि से दुख न दे, वह शारीरिक अहिंसा है।

इस उपदेश से वह बहेलिया अति दुखी हो गया। भविष्य में मैं हिंसा नहीं करूँगा। यह दृढ़ संकल्प किया। जीवों पर सदैव दया करूँगा, क्योंकि जीव हिंसा अधर्म है। यह स्वीकार किया, अहिंसा के धर्म का पालक पुरुष दयालु होता है। मानव की आत्मा अहिंसा के सुख का अनुभव करती है। मन सदैव प्रसन्न रहता है। अहिंसा से शत्रु मित्र बन जाते हैं। अहिंसा पालन से उत्तम कार्य कर सकते हैं। मानव के सभी कार्य अहिंसा से सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। अत: ''अहिंसा श्रेष्ठ धर्म है हिंसा सभी प्रकार से वर्जित है'' ऐसा कहते हैं।

1. (क) कुशसमिधां आनेतुं (ख) हिंसाया: परित्यागो करणीयम् (ग) पापम् (घ) दयां करणीयम् **2.** (क) मुनिवचनं श्रुत्वा (ख) करिष्यामि (ग) तर्हि सा (घ) अहिंसाव्रतेनैव

3. (क) मुनि अकथयत यत् अहिंसा त्रिविध: भवति। (ख) असत्य वचनेन वा कमपि दुखितं न कुरू (ग) जीवेषु सर्वदां दयां कुर्वेत। (घ) अहिंसा परमोधर्म: आस्ति। (ङ) अहम् जीवेषु सर्वदा दया करष्यामि। (च) अहं एकं कथां प्रस्तोमि। **4.** स्वयं करें।

त्रयोदश पाठः हिमालयः

हिन्दी अनुवाद– 1. उत्तर दिशा में देवात्मा हिमालय नाम का पर्वतों का राजा है, समुद्र की भाँति फैला हुआ पृथ्वी के मापक यन्त्र जैसा है।

2. सभी पर्वत बनकर मेरे में स्थित दोहन कार्य रत्नों की प्राप्ति के लिए राजा की आज्ञा से पृथ्वी दुही गई।

3. अनंत रत्नों के प्रभाव से इसकी बर्फ सौभाग्य से कम नहीं होती गुणों के समूह में एक ही दोष है।

4. गंगा के झरने से सीकर के कम्पित देव है जहाँ मृग आदि भिन्न-भिन्न जगहों पर स्वच्छता से विचरते हैं।

5. बीच में स्थित घने बादलों से ढ़का हुआ वर्षा से ओत-प्रोत शृंगार युक्त सिद्ध होता है।

1. (क) तोयनिधि (ख) पृथुपदिष्टां (ग) घनानां छायामघ: सानुगतां संचरतं। (घ) वृष्टि: श्रृगाणि आतपवन्ति। **2.** (क) मानदण्ड: (ख) दुदुहु (ग) निर्झर (घ) यस्यातपवन्ति **3.** (क) उपस्यउत्तरायां दिशि नगाधिंराज: हिमालय: अस्ति। (ख) दोहदक्षे समेरू दोग्धरी स्थिते। (ग) अनंत रत्नप्रभावस्य समुद्रस्य सुन्दरता विलोपुम न जाता:। (घ) एकोहि दोषो गुणसन्निपाते। **4.** स्वयं करें।

चतुर्दशः पाठः राष्ट्रियचिह्नानि

हिन्दी अनुवाद– भारत राष्ट्र का राष्ट्रीय चिह्न है– तीन वर्णों का राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान, कमल का फूल, मोर और व्याघ्र।

1. तीन वर्णों का राष्ट्रध्वज

हमारे राष्ट्रध्वज में तीन रंग हैं। ध्वज में तीन पट्टियाँ है। प्रथम पट्टी केसरिया रंग की हैं,

द्वितीय पट्टी सफेद रंग की, तीसरी पट्टी हरे रंग की। सफेद पट्टी के बीच में अशोक चक्र है। अर्थ के अनुसार ध्वज के तीनों वर्ण हैं; जैसे- केसरिया रंग उत्साह ज्ञान, सौहार्द्र का द्योतक है। सफेद रंग शांति, सत्य, निर्मलता का द्योतक है। हरा रंग सुख-समृद्धि और विकास का सूचक है। ध्वज के मध्य भाग में विराजमान अशोक चक्र धर्म, सत्य, अहिंसा का द्योतक है।

2. राष्ट्रगान

हमारा राष्ट्रगान विश्व कवि कवीन्द्र रवीन्द्र ने 'जन-गण-मन' रचा है। प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रगान का सम्मान करता है। सभी के समापन पर राष्ट्रगान आवश्यक होता है। विद्यालय में प्रार्थना के पश्चात प्रतिदिन राष्ट्रगान करना चाहिए। राष्ट्रगान श्रृद्धा का प्रतीक होता है। श्रृद्धा से ही इसे गाना चाहिए।

3. कमल का फूल

कमल हमारा राष्ट्रीय पुष्प है। कीचड़ में उत्पन्न होने पर भी यह कीचड़ रहित स्वच्छ होता है। यह सौन्दर्य, कोमलता, निर्मलता और शान्ति का सन्देश वितरित करता है।

4. मोर

यह हमारा राष्ट्रीय पक्षी है। इसका सौन्दर्य और नृत्य प्रसिद्‌ध है। यह सुन्दरता, शिक्षा और कला का द्योतक है। सभी कुछ खाना इसका जन्मजात गुण है। विष कारक उपद्रव कारक तत्वों से विनाश होता है यह इसका मानव के लिए शुभ सन्देश है।

5. व्याघ्र

प्राचीन भारत में राष्ट्रीय पशु सिंह ही था। आज व्याघ्र को राष्ट्रीय पशु स्वीकार किया गया है। यह पशु अत्यन्त तेजस्वी और पराक्रमी है। राष्ट्रीय जन शक्ति सम्पन्न है। यही इसका सन्देश है। ये हमारे राष्ट्रीय चिह्‌न राष्ट्र के गौरव स्वीकृत किए गए हैं।

1. (क) त्रिपट्टिका: विराजन्ते (ख) विश्वकविना कवीन्दुेण रवीन्द्रेण (ग) कमलम् पुष्पम् (घ) मयूर: राष्ट्रीय खग: अस्ति। **2.** (क) त्रिपट्टिका: (ख) मयूर: (ग) पुष्पम् (घ) व्याघ्र: **3.** (क) त्रिवर्णक: राष्ट्रध्वज: (ख) मयूर: नृत्यति। (ग) कमल सुन्दर पुष्पम् अस्ति। (घ) स: गृहम् गच्छति (ङ) भारतस्य राष्ट्रिय पशु: सिंह एव अस्ति।

4.

(क)	पुष्पम्,	पंङकजम्,	जलजम्
(ख)	पक्षी:	चिड़िया	खग:
(ग)	फूलं	कुसुमं	सुमनं
(घ)	तिरगा:	त्रिवर्णा:	राष्ट्रप्रतीक
(ङ)	सिंह	केसरी	शार्दूल

पंचदश: पाठ: जीवनोददेश्यम्

हिन्दी अनुवाद– संसार में मनुष्यता दुर्लभ है। मानव शरीर धारण करके तीन सूत्र धारण करने चाहिए-

पहला उद्‌देश्य- उद्योग (कार्य) कार्य बिना मानव शरीर व्यर्थ प्रतीत होता है। जिस देश के लोग कार्य को श्रेष्ठ मानते हैं, वे सफलता पाते है। बालकों की शिक्षा के लिए और विकास के लिए उद्योग की शिक्षा अति आवश्यक है, अन्यथा हमारा देश विकास नहीं कर पायेगा। लोग संसार की उन्नति के लिए कार्य करते हैं। उद्योगी मनुष्य को लक्ष्मी प्राप्त होती है। यह सिद्‌ध है अत: हमें कार्य करना चाहिए।

दूसरा उद्‌देश्य- भक्ति। प्रात: काल से सायंकाल तक कार्य करके देव आराधना करनी चाहिए। प्रात: उषाकाल में शय्या त्यागकर नित्य क्रिया के उपरान्त परमेश्वर का स्मरण और ध्यान करना चाहिए। शास्त्र में भक्ति से नव प्रकाश होता है। इससे नौ प्रकार की भक्ति कहलाती है। वे हैं केशव कीर्तन श्रेष्टठम भक्ति गीता में इसका ही महत्व है। श्रीकृष्ण ने गीता में स्वयं ही कहा है।

तीसरा उद्देश्य– मानव का सार्थक कर्म। पढ़ना पढ़ाना अर्थात् कुछ कुछ संग्रह करना, दान करना। संसार में अनेक वस्तुएँ दान–ज्ञान की हैं, किन्तु विद्या दान महादान होता है। यह सभी धनों में प्रधान है। यह व्यय करने से बढ़ता है। कभी नष्ट नहीं होता। अत: विद्या अध्यायन व अध्ययपन ही जीवन का मुख्य उद्देश्य है।

1. (क) नवधा प्रकारा: भक्ति: भवति। (ख) यत् अधीतम् तत अध्यापितम्। (ग) विद्यादानेन महादानं भवति। (ङ) भक्ति: (घ) ताषु केशव कीर्तन श्रेष्ठतमा: भक्ति:। **2.** (क) नरत्वम् (ख) उद्योगं (ग) किंचित संगृहं (घ) व्यये (ङ) अनेकानि वस्तुनि **3.** (क) संसारे नरत्वम् जन्मम् दुर्लभम् भवति। (ख) मानवशरीरेण उपकारं कुर्वेत्। (ग) विद्यादानं महादानं अस्ति। (घ) विद्या दानेन कदापि न क्षयति। (ङ) वयम् उद्योगम् कुर्याम:। **4.** स्वयं करें।

षोडश: पाठ: ऋतु: वसन्त:

हिन्दी अनुवाद– ऋतुओं का राजा वसन्त है। भारतवर्ष में छह ऋतुएँ हैं। वसन्त कामदेव के सखा हैं। वसन्त में सौन्दर्य का अभिनव साम्राज्य उल्लासित होता है। पक्षियों का समूह दिशा–दिशा में दौड़ता है। चतुर भँवरों का समूह इधर–उधर बिना रोक के गुंजन करता है। पलाश के लाल फूल खिल जाते हैं। पेड़ों पर कोमल पुष्प देखकर मन प्रसन्न होता है। कोयल अति प्रसन्नता से बोलती व गाती है। भौंरे फूलों को देखकर इधर –उधर घूमते हैं। किसान नई फसल देखकर खुश होते हैं। आर्यों का मुख्य उत्सव वसन्तोत्सव है। यह उत्सव माघ माह के शुक्ल पक्ष को पंचमी को होता है। इस दिन लोग माँ शारदा की पूजा करते हैं। बहुत से लोग पीले वस्त्र धारण करते हैं। इस ऋतु में होली का उत्सव होता है। सभी जन प्रसन्नचित्त होते हैं। परस्पर प्रेम का व्यवहार करते हैं। इस ऋतु में अनेक सुगन्धित वायु बहती हैं। आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार वसन्त में भ्रमण से बहुत लाभ होते हैं। केवल मात्र भ्रमण व वायु सेवन से अनेक गुण प्रभावित होते हैं। सुगन्ध युक्त पवन स्वास्थ्य वृद्धि हेतु अति उत्तम होती है। अत: वसन्त भ्रमण औषधि होती है।

1. (क) वसन्ते खगकुलम् दिशि दिशि धावन्ति। (ख) भ्रमरा: पुष्पाणि विलोक्य इतस्ततो भ्रमन्ति। (ग) कृषका: नवसस्यानि दृष्ट्वा प्रसन्ना: भवन्ति। (घ) अस्मिन ऋतौ वसन्तोट्सव: सम्पद्यते। **2.** (क) कामदेवस्य (ख) किसलयानि (ग) इतस्ततो (घ) मुख्योत्सव: (ङ) पीत वस्त्राणि **3.** (क) वसन्त ऋतवै: सुगन्धिता वातावरण भवति। (ख) सुगन्धयुक्तेन वायुना: सेवनाय स्वास्थ्य उत्तमं भवति। (ग) वसन्त ऋतवै: पिक: मधुर स्वरं कूजति। (घ) ऋतुणांराजा वसन्त: कथ्यते।

4. स्वयं करें। **5.** (क) प्रेम से बातें (ख) ऋतुओं का (ग) औषधि (घ) सेवन करने से (ङ) नई फसल से (च) भौंरा

सप्तदश: पाठ: सम्राट अशोक

हिन्दी अनुवाद– इस संसार में बहुत से लोग जन्म लेते हैं। वास्तविक जीवन उसका है जो शुभ कर्म करता है। जो सप्तविश्व कल्याण तथा शान्ति प्रदान करता है। उसी का जन्म धन्य है। दयामूर्ति अशोक ने विश्व कल शान्ति के लिए अनेक कार्य किए। सम्राट अशोक मौर्यवंश के महान् शासक थे। वह वीर चन्द्रगुप्त के पौत्र थे। अशोक के पिता का नाम बिन्दुसार था। सम्राट अशोक ईशा की दो सौ सत्तर वर्ष पूर्व मगध के सिंहासन पर सुशोभित थे। इस नववर्ष के पश्चात् सम्राट अशोक ने कलिंग भूपति के साथ युद्ध किया। इस युद्ध में अनेक सैनिक वीरगति को प्राप्त हो गए और अनेक घायल हो गए।

इसके पूर्व अशोक का स्वभाव कठोर था। परंतु इस युद्ध में वीरगति प्राप्त सैनिक और घायलों को देखकर उनका हृदय परिवर्तन हो गया। उसने विचार किया– मानव का स्वार्थ भयानक है। स्वार्थवश मैंने युद्ध किया। मेरे स्वार्थ का परिणाम वश अनेक लोग मर गए। अनेक परिवार अनाथ हो गए। अत: स्वार्थ भावना उचित नहीं है। ऐसा मानकर उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। संसार में बौद्ध धर्म के प्रचार एवं प्रसार करके प्रजा के ऊपर अत्याचार को रोकने के लिए, सबके हित के लिए सम्राट अशोक ने योग्य अधिकारी नियुक्त किए। क्षेत्र-क्षेत्र में जाकर पत्थर व शिला के ऊपर, खम्भों के ऊपर न्याय व धर्म के उपदेश लिखवाए। 'सत्यमेव जयते' तीन शेर नीचे वाले खम्भे पर लिखवाया। भारत के शासन में यह लेख चिह्न रूप में हो गया है। हम सत्य पर विजय करेंगे, यह निश्चय करके कार्य किया।

1. (क) सम्राट अशोक: कलिङ्ग भूपतिना सह युद्धम् अकरोत्। (ख) युद्धे वीरगति सैनिकानाम् एवम् व्रणवर्ताश्च दशां दृष्ट्वा तस्य हृदय परिवर्तनं अभवत्। (ग) पाषाणशिलोपरि न्याय धर्मोपदेशं लेखनम् अकारयत्। (घ) तेन विचारितम् यत् मानवस्य स्वार्थ: भंयकर: अस्ति। अत: स्वार्थ भावना नैवोचिता भवति। अस्या: कारणेन अत्यन्त हानि भवति। अत: स: धर्मस्य प्रचाराय प्रयासम् कुर्वेत। (ङ) सम्राट अशोक: ईशात: सप्तति: अधिकं द्विशतम् वर्षाणि पूर्व सिंहासनम् सुशोभितम् अकरोत्। **2.** (क) अशोकस्य हृदय व्रणवर्तानाम् वीरगति सैनिकानाम् च दशां दृष्टवा परिवर्तितं अभवत्। (ख) अनेका परिवारा: अनाथा: जाता:। (ग) नववर्ष पश्चात् सम्राट अशोक: कलिङ्ग भूपतिना सह युद्धं अकरोत्। (घ) सत्यस्य सर्वदा विजय भव इति इच्छां कुर्वेत। (ङ) अस्य पूर्वं अशोकस्य स्वभाव: कठोर: आसीत्। (च) बिन्दुसार: अशोकस्य पिता आसीत्।

3. स्वयं करें।

अष्टादश: पाठ: सरदार वल्लभभाई पटेल:

हिन्दी अनुवाद– इस संसार में अनेक देशभक्त एवं स्वतन्त्रता सैनिक उत्पन्न हुए हैं। भारत भूमण्डल में एक सैनिक सरदार वल्लभभाई पटेल थे। इन महोदय का जन्म गुजरात प्रान्त में 'करद' नामक गाँव में अक्टूबर माह की इकत्तीस तारीख को अट्ठारह सौ पिछहत्तर ख्रीष्टाब्दी में हुआ। इस बालक की प्रारम्भिक शिक्षा नाडियाड नगर के विद्यालय में हुई। जनपद की वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करके 'मिडिल टैम्पल' नामक विद्यालय में विधि शास्त्र के अध्ययन के लिए इंग्लैण्ड देश गए। 1913 में अहमदाबाद नामक नगर में वकालत कार्य प्रारम्भ किया। वहाँ साबरमती नदी के तट पर 1916 में 'सत्याग्रह' नामक आश्रम की स्थापना की। इसके पश्चात् 1924 में 'बारदोली' नामक गाँव में स्वराज्य आश्रम की स्थापना की।

उसी वर्ष किसानों का संगठन करके टैक्स विरोधी आन्दोलन का संचालन किया। अखिल भारतीय कांग्रेस महासभा पटेल महोदय को लौह पुरुष मानती थी। वास्तव में पटेल महोदय लौह पुरुष जैसे ही थे। सरदार महाभाग स्पष्ट बोलने वाले अनुशासन प्रिय, कर्त्तव्यपरायण, वचन पालक थे। स्वतन्त्रता आन्दोलन में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के दाएँ हाथ थे। छात्र महापुरुषों के चरित्र को जानकर सद्चरित्र होते है। अत: लोक के कल्याण के लिए हमें हमेशा प्रयास करने चाहिए।

1. (क) सरदार वल्लभभाई पटेलस्य जन्मः गुजरात प्रान्ते करद नामके ग्रामे अभवत्। (ख) साबरमती नदी तटे 'सत्याग्रह' नामक आश्रमस्य स्थापनाम् अकरोत्। (ग) कृषकानां संगठनम् कृत्वा कर विरोधी आन्दोलनम् अकृताम्। (घ) 1924 वर्षे 'बारदोली' नामकग्रामे स्वराज्या श्रमस्य स्थापनामपि अकरोत्। **2.** (क) इङ्गलैण्ड (ख) करद (ग) सरदार वल्लभभाई पटेलः (घ) चरित्रं (ङ) स्वतन्त्रतायाः सैनिकाः **3.** (क) एकताया भावनेन दुष्करं कार्य अपि सफलं भवति। (ख) कृषकानां सहाय्येन आन्दोलनं चालितं। (ग) पटेलस्य शिक्षा नाडियाड ग्रामे अभवत्। (घ) वयं संगठित प्रयासं कुर्मः। **4.** स्वयं करें। **5.** (क) 1875 (ख) 1913 (ग) 1916 (घ) 1924

एकोनविंशः पाठः पर्यावरणम्

हिन्दी अनुवाद– हमारे संरक्षण एवं सम्वर्धन के लिए प्रकृति सदैव प्रयत्न करती है। सागर पर्वत, वन, नदियाँ, तालाब सभी जगत के सुख को बढ़ाते हैं। प्रसन्न होकर उसके विकार को स्वयं पीते हैं। हमें स्वास्थ्य प्रदान करने वाला वायुमण्डल देते हैं। पत्ते फूल, वन, फल देकर ये हम पर बहुत उपकार करते हैं। वातावरण की हवा को शुद्ध करते हैं। वन एवं वन के प्राणियों सागर के जन्तुओं से भी पर्यावरण का सन्तुलन स्थापित करते हैं।

आज तेल से चलने वाले यान और यन्त्रों से तथा अपने धुएँ से स्वस्थ वायुमण्डल प्रदूषित हो गया है। वायुप्रदूषण प्रतिक्षण बढ़ रहा है। शिलाखण्डों को तोड़कर और वनों को नष्ट करके मार्ग निर्माण करके यान (वाहन) दौड़ते हैं। अस्त्रों के परीक्षण से समुद्र का वातावरण प्रदूषित हो गया है। जैसे –जैसे पत्थर काटकर मार्ग बढ़ रहा है; वैसे वैसे प्रदूषण बढ़ रहा है। इसके विपरीत वायुमण्डल परिशोधन के साधन नहीं बढ़ रहे हैं। अपने थोड़े से लाभ के लिए लालचवशं, अज्ञानता वश लोग अपना बहुत विनाश कर रहे हैं। वन के प्राणी मनोविनोद के लिए मार देते हैं। कभी लालच के कारण वनों को काट देते हैं। प्रदूषित जल से गंगा, कावेरी आदि नदियों का जल प्रदूषित हो रहा है।

समुद्र के प्राणी के साथ हिंसा का प्रयत्न करता है। जल, स्थल, गगन सभी जगह प्रदूषण बढ़ रहा है। अतः वन की यत्नपूर्वक रक्षा की जानी चाहिए। गाँव, नगर, स्थान–स्थान में बगीचे लगाए जाने चाहिए। सब्जी की बगिया बढ़ाई जानी चाहिए। वन प्राणियों की रक्षा के लिए वन बढ़ाये जाने चाहिए। वृक्षों का काटना रोका जाना चाहिए। सागर का निर्बाध करके गगन मण्डल को स्वच्छ किया जा सकता है। पर्वत की औषधि नदी के स्रोत बढ़ने चाहिए।

1. (क) प्रकृति अस्माकं संरक्षणाम् सम्वर्धनाय च सदैव यत्नम् करोति। (ख) सम्प्रति तैलचालितानि यानानि यन्त्राणि च स्वकीयैः धूमैः वायुमण्डलम् दूषयन्ति। (ग) अस्त्राणाम् परीक्षणैः समुद्रस्य वातावरणम् प्रदूष्यते। (घ) वन प्राणिनाम् संरक्षणाय अरण्यानाम् सङ्ख्या वर्धनीया। **2.** (क) सागरजन्तवः वनप्राणिनः च (ख) प्रतिक्षणम् (ग) रक्षणीयानि (घ) औषधयाः **3.** (क) सागराः समुल्लसन्तु। (ख) वनाः शोभितुं (ग) धूमः वायुमण्डलम् प्रदूषयति। (घ) अस्त्राणाम् परीक्षणैः समुद्रस्य वातावरणम् प्रदुष्यते। (ङ) जले, स्थले एवं अंतरिक्ष च सर्वत्र प्रदूषणं वर्धते। **4.** (क) समुद्र के प्राणियों पर यत्न पूर्वक हिंसा करते हैं। (ख) वनों की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। (ग) पर्वत पर औषधि एवं नदी स्रोत की वृद्धिध होती है। (घ) अस्त्रों के परीक्षणों से समुद्र का वातावरण प्रदूषित होता है।

संस्कृत श्लोक-6

प्रथमः पाठः - सरस्वती वंदना

हाथ में स्फटिक मणि की माला को धारण किए हुए कमल के आसन पर बैठी हुई उस परमेश्वरी माँ सरस्वती को प्रणाम करते हैं। वह ज्ञान देने वाली ज्ञानदायिनी है।

द्वितीय पाठः – पिजायाः महत्वम्

एक हजार वर्ष पूर्व पिज्जा का अस्तित्व मानव ने प्रकट किया। प्रारम्भिक काल में इसकी रोटी के चूर्ण को हाथों से फैलाकर घर से बाहर चूल्हे के ऊपर अग्नि में परिमार्जित करके (सेंककर) इसके ऊपर रोटी वन औषधि हरे पत्ते सजाते थे। यह भूख बढ़ाने वाला भोजन लोग खाते थे। नेपल्स ने इटली देश में प्रारम्भ में इस भोजन में कालान्तर में टमाटर वन औषधि को उस पर फैलाकर पिज्जा नाम दे दिया। रेफ्रीजरेटर के समय से पूर्व स्त्रियाँ संबंधित चूर्ण को रोटी के रूप में फैला कर अग्नि पर सेंककर सुरक्षित रोटी को रख लेती थीं। इसके ऊपर मन के अनुसार चटनी लगाकर खाने के सामान डालकर हाथ से लेकर खाते थे। खाने के लिए थाली की आवश्यकता नहीं थी। इसलिए यह भोजन शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया। हजारों वर्षों पूर्व पिज्जा पदार्थ से कोई भी व्यक्ति परिचित नहीं था। जब टमाटर औषध की खोज हुई तब यह प्रसिद्ध हुआ। यह विषैली दवा है यह सोचकर शंकित मनुष्य ने बहुत दिनों तक इसे भोजन में शामिल नहीं किया। हजार शताब्दी के अन्तिम भाग में यूरोपवासी मनुष्यों ने टमाटर खाने का आरम्भ किया परिणामस्वरूप पिज्जा खाना सब्जी, टमाटर खाना सहयोगी हुआ।

1. (क) सहस्रवर्षात् पूर्वं पिजायाम् अस्तित्वं मानवैः प्रकटितम्। (ख) पिजायाम् पोलिका चूर्णेन हस्ताभ्यां प्रसारयित्वा ग्रहात् बहिः चुल्यूपरि अग्निना संस्कृतम् अकुर्वन। (ग) पिजयोपरि मनोनुकूलं अवलेहम् अवलिप्य मानवाः भक्षयन्ति स्म। (घ) अस्मिन वाक्ये 'इदं' शब्दस्य अर्थ रक्त वृत्तान्तकम् अस्ति। (ङ) रक्त वृत्तान्तकम् भक्षणत्वेन संयुक्तः अभवत्। **2.** (क) नेपल्स, रक्तवृत्तान्तकेन (ख) शीतकारयुगात् पोलिकां (ग) स्थाल्याः (घ) विषौधम् (ङ) पिजाभक्षणेन **3.** (क) रमा चुल्यूपरि पोलिकां असंस्कृत्। (ख) सहस्रवर्षात् पर्वं मानवैः पिजायाम् परिचितं न आसीत्। (ग) इदम् विषौधम्। (घ) पिजायाम् रक्तवृत्तान्तकम् सहं भक्षपति। (ङ) सहस्रतमाः शताब्दाः अन्तिम भागे यवरूपीय मनुष्याः पिजायाम् महत्वः ज्ञातवान् **4.** स्वयं कीजिए।

तृतीयाः पाठः – हास्य कणिका

स्वामी- चम्पू! देखो यह क्या समय हुआ है?

सेवक- स्वामी मैं समय जानने का कार्य नहीं कर सकता।

स्वामी- अच्छा! कोई बात नहीं। घड़ी की तरफ देखकर कहो- मिनट की सुई कहाँ है और फिर घंटे की सुई कहाँ है?

सेवक- महोदय! दोनों सुइयाँ घड़ी में ही हैं।

सुधा- क्या आपको अंग्रेजी भाषा बोलने में कोई शंका होती है?

रिंकू- नहीं यदि सुनने वाला हों, तब मुझे शंका नहीं है

अध्यापक- एक श्रेष्ठ चित्रकार हँसते हुए चेहरे को एकमात्र रेखा के सहयोग से रोते हुए चेहरे में परिवर्तित कर सकता है।

छात्र- महोदय! मेरी माँ तो यह कार्य हाथ से ही कर सकती है।

रिंकू- कहो, सर्वाधिक मात्रा में आलू कहाँ होता है।

चिंकू- समोसे में।

पिंटू- यह शीशा टूटने का कारण तुम हो।

चिंटू- नहीं, यहाँ तुम कारण हो, मैंने तो केवल गेंद फेंकने का कार्य किया। यदि तुम गेंद के मार्ग से दूर न होते तो शीशा न टूटता।

रोगीजन- (डॉक्टर के पास जाकर) मैं रात्रि में सोते समय पलंग से नीचे गिर जाता हूँ।

चिकित्सक- तो मेरे पास क्यों आये हो? उस बढ़ई के पास जाओ जिसने पलंग को बनाया था

(एक बार सिपाही एक चोर को न्यायालय में

लाए। जीप में बैठा वह चोर प्रसन्नमुख था।)
सिपाही– तुम प्रसन्न क्यों हो? इस समय तो तुम्हें चिन्तित होना चाहिए।
चोर– इसका कारण यह है कि जीप में बैठने का मेरा पहला अवसर है।
माता– (बंटी को देखकर) पुत्र इस प्रकार ढोलक कैसे जमीन पर लुढ़क गई?
बंटी– माता! मैं अपने छोटे भाई के लिए सुख अनुभव कर रहा था।
माता– किंतु यहाँ तुम्हारा छोटा भाई नहीं दिख रहा है?
बंटी– माता! मेरा छोटा भाई तो ढोलक के अन्दर है।
1. (क) वेलायंत्रस्थैव (ख) एकमात्रे रेखाया सहयोगेन रोदितयाने वदने परिवर्तनं (ग) 'त्रिकोणकुण्डे' इति (घ) त्रिकोणकुण्डे (ङ) इस प्रश्न का उत्तर छात्र स्वयं दें। (च) जीपवाहने आरूढने अवसरं प्राप्य अभवत्? **2.** (क) अहं समयगणना कर्तुं न शक्नोसि। (ख) त्रिकोणकुण्डे गोलालवः भवन्ति। (ग) अस्य परिणामस्य कारणम् अहं नास्मि। (घ) रेलयाने आरूढने मम प्रथमो अवसरः वर्तते। (ङ) त्वं कथं ढक्कां लुण्ठसे ? (च) ढक्कोपरि बालकः तिष्ठति।
3. (क) इस समय क्या बजा है ? (ख) यदि सुनने वाले हों तो मैं नहीं जानता /जानती। (ग) मैंने तो केवल गेंद फेंकी। (घ) जिसके द्वारा पलंग बनाया गया। (ङ) चोर खुश था। (च) यहाँ तुम्हारा छोटा भाई नहीं दिख रहा है।
4. छात्र अध्यापक की सहायता से करें।
5. छात्र अध्यापक की सहायता से करें।
6. (क) पराभवति (ख) प्रभवति (ग) अनुभवति (घ) उद्भवति (ङ) सम्भवति। (च) परिभवति।

चतुर्थः पाठः – अति सर्वत्र वर्जयेत्

शिक्षिका– क्या आज मोहन विद्यालय नहीं आया?
नवीन– आचार्या नहीं! वह अस्पताल गया है।
लीसा– वह चॉकलेट नाम की टॉफी को बहुत मात्रा में खाता है। उसके दाँत रोगी और मलिन हो गए।
शिक्षिका– छात्राओं! मैं तुम सब से लगातार कहती हूँ कि किसी भी चीज की तुम्हें अति नहीं करनी चाहिए। उसका परिणाम तो भोगना ही पड़ता है।
सुरेश– आचार्या! कुछ लोग विवाह आदि उत्सव में बहुत भोजन खा लेते हैं। जिससे अगले दिन उनका स्वास्थ्य क्षीण हो जाता है।
शिक्षिका– अति सब जगह बुरी है अर्थात् सीमा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। सीमा क्षेत्र में ही हमें सभी विषयों का आनन्द प्राप्त करना चाहिए।
दिनेश– मेरा मित्र निर्मल रात-दिन दूरदर्शन के सामने बैठा रहता है। परिणामस्वरूप उसकी नेत्र ज्योति कमजोर हो गई है।
शिक्षिका– देखो, मैं तुम्हें उदाहरण सहित पढ़ाऊँगी। जब दाल में अत्यधिक मात्रा में नमक डल जाता है तब क्या होता है?
नवीन– वह खारी हो जाती है और हम उसे नहीं खाते हैं।
अनघा– नमक यदि समुचित मात्रा में होता है तो दाल सुपाच्य और सुस्वाद होती है।
शिक्षिका– सत्य, अच्छा और समुचित मात्रा में ही हमें 'सीमा' में बोलना चाहिए। जिस प्रकार प्रतिदिन व्यायाम से शरीर स्वस्थ होते हैं उसी प्रकार यदि उसके स्थान पर अनियमितता हो तो उचित नहीं होगा।
लीसा– महोदय! जिस प्रकार से अधिक जल वर्षा से नदी में बाढ़ आ जाती है चारों दिशाओं में विनाश का तांडव दिखाई देता है वैसे ही?
शिक्षिका– सत्य है यह उदाहरण। किंतु जल वर्षा तो प्रकृति के आधीन है समुचित आहार व्यवहार और निद्रा मानव आधीन है। आहार व्यवहार और निद्रा मानव आधीन है।
अनघा– महोदय! मैं अपना गृह कार्य और अपना अध्यंयन समय से करता हूँ। अतः रविवार तथा अन्य अवकाश के दिन घूमने के लिए जाता हूँ।
शिक्षिका– तभी तुम्हारा परीक्षाफल प्रथम श्रेणी होता है। सभी छात्र! याद रखे अत्याधिक लालच को छोड़ देना चाहिए। अपनी सीमा क्षेत्र में ही कार्य करना चाहिए ताकि सुखी हो सके। हमेशा याद रखों अधिकता हमेशा बुरी है।
1. (क) चिकित्सालयं (ख) बहुभोजनं भोजयन्ति (ग) सा तिक्तं (घ) यदा लवणः समुचित मात्रायाः भवेत् तदा (ङ) नदीषु जलप्लावनं चतुर्दिगेषु विनाशलीला
(च) पाठानुसारे स्मरेत्–अति सर्वत्र वर्जयेत्।
2. (क) दुष्यन्त विद्यालय नहीं आया। (ख) उसके दाँत खराब और गंदे हैं। (ग) मेरा मित्र मोहन दिन-रात टीवी के सामने बैठा रहता है। (घ) तो क्या होगा? (ङ) इतवार को घूमने जाऊँगा। **3.** (क) सः मधुगट्टिकां खादति।

(ख) अहं स्वकार्यं समयेन करोमि।
(ग) जलेन चतुदिशि: विनाशलीला भवति।
(घ) अत्यधिक लालसां त्यज।
(ङ) अति सर्वत्र वर्जित:। **4.** छात्र अध्यापक की सहायता से करें। **5.** छात्र अध्यापक की सहायता से करें। **6.** (क) मोहन: (ख) स: (ग) वयं (घ) जलवृष्टि: (च) अहं।

पञ्चमः पाठः – पत्र लेखनम्

तुम्हारा भेजा पत्र प्राप्त हुआ। तुमने पूछा है कि संगीत नृत्य का कार्यक्रम 'बूगी-बूगी' इस नाम को जानने की इच्छा कि यह कैसे हुआ, किस प्रकार मैं उसकी प्रतियोगी हुई यह जानने की तुम्हारी प्रबल इच्छा है। इसका रहस्योद्घाटन मैं पत्र के माध्यम से करूँगी। जिस दिन वार्षिक परीक्षा की समाप्ति परीक्षा थी। उसी दिन शाम को मेरी माँ दूरर्शन चलाते समय मुझसे बोली- पुत्री निकिता यह कार्यक्रम देखो यह तुम्हारे योग्य है। उसके पश्चात् मैं कुर्सी दूरदर्शन से दूर रखकर बैठ गई। मै यह जानती हूँ कि दूरदर्शन पास से देखने पर नेत्र ज्योति कमजोर होती है। मैं दूरदर्शन स्क्रीन पर देख रही थी। पहले तीन उद्घोषकों ने कार्यक्रम का संचालन किया। वे दर्शको को हँसा रहे थे। मैंने अनुभव किया कि वे मेरे चिरपरिचित थे। एक-एक करके प्रतियोगी आए, अपने कार्य कौशल का प्रदर्शन किया। अपनी नृत्य क्रिया का प्रदर्शन किया। तब जावेद महोदय ने कार्यक्रम के परिणाम उद्घोषित किए। उस समय मैंने अनुभव किया- "काश यह पुरस्कार मैं प्राप्त करतीं" समय पूरा हो गया। माता बोली पुत्री कैसा लग रहा है? मैं माता से बोली- "माता! क्या मै नृत्य नहीं कर सकती? क्या मुझमे ऐसी योग्यता नहीं है?" "क्यों नहीं? थोड़े परिश्रम से ही तुम योग्य हो जाओगी।" माँ बोली। फिर माँ ने मुझे संगीत के आचार्य के पास भेज दिया। एक बार नृत्य आचार्य ने मेरी तारीफ माँ से की। हम मुम्बई नगर आए। वहाँ अनेक स्पर्धा प्राप्त करके नृत्य किया। परिणामस्वरूप मुझे उत्तम परिणाम प्राप्त हुआ। नमिता आने वाले माह में 17 तारीख को मेरा किया हुआ नृत्य का प्रसारण होगा। अवश्य देखना।

1. (क) नमिता कृत जिज्ञासाया: (ख) पुत्री, निकिता! पश्य कार्यामिदं त्वया योग्य:। इदं पश्य (ग) दूरवीक्ष्यसमीपस्थित: भवन् दृश्यमाणेन (घ) त्रयो: (ङ)नृत्यम् अकुर्वम्।
2. (क) प्राप्तम् (ख) रहस्योद्घाटनं (ग) दूरवीक्ष्ययंत्र (घ) त्रयोद्घोषका: (ङ) श्रमेण (च) सप्तदशदिनांके।
3. (क) प्रिया नमिता, सुखी रहो। (ख) तुमने पूछा/तुम्हारे द्वारा पूछा गया। (ग) मैं पत्र के माध्यम से रहस्य प्रकट करता/करती हूँ। (घ) कार्यक्रम में उन्होंने नृत्य दिखाया। (ङ) मैंने पुरस्कार प्राप्त किए। (च) मुझे उत्तम परिणाम मिला।
4. (क) त्वया प्रेषितं पत्रं प्राप्तम्। (ख) तव बूगी-बूगी कार्यक्रमे कथं जिज्ञासा अभवत्? (ग) मया ज्ञाता यत् त्व माम् पृक्ष्यसि। (घ) समीपस्थिते दर्शनेन दूरवीक्ष्यं नेत्रज्योति: क्षीर्णा भवति। (ङ) आगामी सप्तदिनांके मम् नृत्यस्य प्रसारणं भविष्यति। **5.** (क) नायिका: (ख) गायिका: (ग) वादिका: (घ) नृत्तिका: (ङ) पाठिका: (च) लेखिका: (छ) संगीताध्यापिका: (ज) उद्घोषिका:
6. (क) (i) गमनेच्छा = गमन + इच्छा
(ii) त्रयोद्घोषक: = त्रय + उद्घोषक:
(iii) रहस्योद्घाटनम् = रहस्य + उद्घाटनम्
(iv) अहमिदम् = अहम् + इदम्
(v) कार्यक्रममिदम् = कार्यक्रमम् + इदम्
(vi) करोम्यहम् = करोमि + अहम्
(ख)(i) अहम् + अभवम् = अहमभवम्
(ii) त्वत् + जिज्ञासा = त्वज्जिज्ञासा
(iii) परीक्षा + आसीत् = परीक्षासीत्
(iv) तस्मिन् + एव = तस्मिन्नैव
(v) तत् + उपरान्ते = तदुपरान्ते
(vi) पुरस्कार + इदम् = पुरस्कारेदम्
7. स्वयं करें।

षष्ठः पाठः – ऋक्षः शृगालश्च

एक बार कोई गीदड़ शहद खाने की इच्छा कर रहा था। प्रतिदिन माँस खाने से इसे अरूचि हो गई थी। "मधुमक्खियों के छत्ते के पास जाकर थोड़ा-सा शहद चखूँगा" यह कहकर गीदड़ जब तब वह हाथ से शहद बाहर निकालता तभी मक्खी छत्ते से बाहर आ गई, गीदड़ के शरीर में चिपट गई। उसी क्षण पलायन करके गीदड़ बोला- शहद मीठा है

किन्तु मक्खी काटती है। गीदड़ घर आकर सो गया। उसकी नाक सूज गई। सोते हुए यह सोचने लगा कि यदि मैं झबरूमल भालू से मिल जाँऊ क्योंकि वह मेरी शहद खाने की इच्छा पूरी करने में सक्षम है। क्यों कि भालू को शहद प्रिय होता है। उसके घर में तो अवश्य शहद मिलेगा। यह सोचकर गीदड़ उसके घर जाकर भालू से बोला– ''नमस्ते ऋक्षराज!'' भालू बोला– ''नमस्ते गीदड़ नमस्ते'' ''भालू ने पूछा बहुत समय बाद देखा।'' गीदड़ बोला– ''जब से तुम्हारा भाई मरा है तब से मरे हुए के समान रह रहा हूँ'' भालू ने कहा– ''मैं भी अकेले जीवन गुजार रहा हूँ'' तुम यहाँ आ गए हम दोनों सुख से रहेंगे। वे दोनों सुख से रहने लगे। भालू प्रतिदिन वन जाकर गीदड़ के लिए माँस लाता था। गीदड़ की शहद खाने की इच्छा आज भी पूरी नहीं हुई थी। एकबार गीदड़ बोला– ''एक दिन थोड़ा शहद ले आओ। मेरी बड़ी इच्छा है कि शहद खाऊँ।'' भालू दूसरे दिन वन से दो छत्ते शहद के लाकर गीदड़ से बोला एक छत्ता सर्दी में खाएँगे एक छत्ता आज। पेट भरकर शहद पियो। भालू सरल परन्तु गीदड़ चतुर था। मकान की छत पर रखे छत्ते का शहद खाने को लालायित गीदड़ छत पर किसी प्रकार चला गया। भालू ने कहा तुम छत पर क्यों गए हो? जब ऊपर पहुँच गया तब गीदड़ ने अपनी पूँछ से दीवार में प्रहार किया। तब भालू कहने लगा– यह कैसी आवाज निकल रही है। गीदड़ ने कहा– पास में स्थित पड़ोसी के घर पुत्र उत्पन्न हुआ है। वे मुझे बुला रहे हैं यह कहकर गीदड़ छत पर चला गया। पेट भर कर शहद पीकर निवृत्त हो गया।

भालू बोला– ''उसके उत्पन्न पुत्र का क्या नाम रखा?'' गीदड़ ने उत्तर दिया– ''उसका नाम 'कम-कम खुरचा' रखा है।'' दूसरे दिन छत पर चढ़कर गीदड़ ने फिर अपनी पूँछ से दीवार पर प्रहार किया। भालू बोला– ''यह कैसी आवाज आ रही है?'' जल्दी ही गीदड़ बोला– पास के घर में पुत्री उत्पन्न हुई है– वे मुझे बुला रहे हैं यह कहकर गीदड़ जल्दी से छत पर गया और पेटभर शहद खाकर लौट आया। भालू ने पूछा– लड़की का क्या नाम रखा? गीदड़ ने उत्तर दिया– 'कम बचा' यह नाम रखा। तीसरे दिन फिर गीदड़ ने प्रहार किया। भालू ने फिर पूछा– यह कैसी आवाज निकल रही है? गीदड़ बोला– ''पास में स्थित पड़ोसी के घर एक पुत्री पैदा हुई है। वे मुझे बुला रहे हैं'' यह कहकर छत पर जाकर सारा शहद पी गया। लौटकर जैसे ही आया वैसे ही भालू ने कहा कि पुत्री का क्या नाम रखा। गीदड़ बोला– 'सफाचट' नाम रखा है।

कुछ समय बीत जाने पर भालू की इच्छा शहद खाने की हुई। वह जैसे ही छत पर गया देखा कि सारा शहद किसने चाट लिया? यह सोच कर भालू बोला– गीदड़! तुमने सारा शहद चाट लिया। मै तुम्हें मार दूँगा यह कहकर उसकी तरफ दौड़ा परन्तु चतुर गीदड़ शीघ्र ही दौडकर जंगलों में गायब हो गया।

1. (क) मधुं खादितुम् (ख) अवदत्– मधुमधुरं किन्तु मक्षिका: कट्व्य: (ग) श्रृगाल: मधु: खादितुं झबरूमलस्य समीपं गत: (घ) ऋक्षं विस्मृताय मधुपानाय च (ङ) अपश्यत् यत् तत्र मधु नास्ति। **2.** (क) विरत: (ख) मृतवत् (ग) तावाकण्ठं (घ) प्रबलेच्छा (ङ) निकुञ्जेषु **3.** (क) एक बार किसी गीदड़ ने शहद खाने की इच्छा की। (ख) मैं अकेला जी रहा हूँ। (ग) भालू सरल परन्तु गीदड़ चालाक है। (घ) अरे गीदड़! तुमने सारा शहद खा लिया। (ङ) गीदड़ ने उत्तर दिया–उसका नाम 'कम-कम खुरचा' यह रखा है।

4. छात्र स्वयं करें।

सप्तम: पाठ: – प्रेरकवचनानि

1. मूर्ख शिष्य को उपदेश देने से, और दुष्ट स्त्री के मरने से दुखी के साथ मेल-जोल करने से विद्वान भी प्रभावित होते हैं।

2. धर्म की रक्षा व्रत से और विद्या की योग से होती है कोमल व दयापूर्ण व्यवहार से राजा की व पतिव्रता स्त्री से घर की रक्षा होती है।

3. पृथ्वी सत्य को धारण करती है सूर्य ताप को सत्य के लिए धारण करता है सत्य के लिए वायु बहती है सब कुछ सत्य पर ही स्थित है।

4. गाड़ी को पाँच हाथों से वाजी को दस हाथों से, हाथी को सौ हाथ से, और दुर्जन को देश त्याग से दूर करना चाहिए।

5. हाथी को अंकुश के द्वारा वाजी को हाथ से मारना चाहिए सींगधारी बैल को हाथ के डण्डे से दुर्जन को तलवार से मारना चाहिए।
6. शाक से रोग बढ़ता है दूध से शरीर घी से वीर्य बढ़ता है माँस के द्वारा माँस बढ़ता है।
7. दान से हाथों की शोभा बढ़ती है कंगन के द्वारा। नदी स्नान से शुद्धि होती है न कि चन्दन लेपने से, मान से संतुष्टि होती है न कि भोजन से, ज्ञान से मुक्ति मिलती है न कि तिलक लगाने से।
1. (क) दु:खितै: (ख) वृत्तेन धर्म:, योगेन विद्या, मृदुना भूप:, स्त्रिया गृहं रक्ष्यते च। (ग) पंचहस्तेन, दसहस्तेन, शत (घ) शाकेन (ङ) घृतेन (च) दानेन **2.** (क) वृत्तेन (ख) सत्येन (ग) स्नानेन (घ) मानेन (ङ) सत्येन
3. (क) धर्मेण वृत्तिं रक्ष्यते। (ख) पतिव्रतास्त्रिया गृहं रक्ष्यते। (ग) दुर्जन: खड्गेन कर्त्तय। (घ) योगेन विद्या रक्ष्यते। (ङ) हस्तस्य शोभा दानेन भवति। (च) शरीरस्य शोभा स्नानेन भवति न तु चन्दनेन। **4.** (क) मूर्खशिष्योपदेशेन दुष्टस्त्रीमरणेन च। –दु:खितै: संप्रयोगेण पण्डितोऽप्यवसीदति।। (ख) सत्येन धार्यते पृथिवी सत्येन तपते रवि:।–सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।। (ग) शकटं पञ्चहस्तेन दशहस्तेन वाजिनम्।–हस्तिनं शतहस्तेन देशत्यागेन दुर्जनम्।। (घ) शाकेन रोगा: वर्द्धन्ते पयसा वर्द्धन्ते तनु:।– स्नानेन शुद्धिर्न तु चन्दनेन। घृतेन वर्द्धते वीर्यं मांसान्मांसं प्रवर्द्धते।। (ङ) दानेन पाणिर्न तु कंकणेन–स्नानेन शुद्धिर्न तु चन्दनेन।। (च) मानेन तृप्तिर्न तु भोजनेन–ज्ञानेन मुक्तिर्न तु मण्डनेन। **5.** (क) सच्चरिता (ख) सुखी (ग) अधर्म: (घ) सहस्रेण (ङ) प्राप्येन (च) अपमानेन **6.** (क) शिष्य + उपदेशम् = शिष्योपदेशम् (ख) वायु: + च = वायुश्च
(ग) शुद्धि: + च = शुद्धिश्च
(घ) पण्डित: + अपि = पण्डितोऽपि
(ङ) अपि + अवसीदति = अप्यवसीदति
(च) मांसात् + मांसम् = मांसान्मांसम्

अष्टम: पाठ: – गुप्तचर ००२

(विवेक छत पर गुलेल के साथ चढ़ता है। यह गुलेल से पक्षी को निशाना बनाकर शिकार करने को प्रयत्नशील होता है तभी उसका मामा आ जाता है।)
विवेक– (मामा को देखकर प्रसन्नता से) मामा! प्रणाम!
मामा– आज रविवार है अत: में आ गया। किन्तु तुम यहाँ छत पर क्या कर रहे हो?
विवेक– मामा मैं तो बिजली के खम्भे पर बैठे उल्लू को उड़ाने का प्रयत्न कर रहा हूँ (गुलेल पर पत्थर चढ़ाता है।)
मामा– किंतु भान्जे! उल्लू ने तुमसे क्या बुरा व्यवहार किया है? किससे प्रेरित होकर तुम इससे दुर्व्यवहार कर रहे हो?
विवेक– नहीं, उसने नहीं किया बुरा व्यवहार। किन्तु लोग कहते हैं कि यह पक्षी अशुभ करने वाला होता है इसको अपने घर के सामने बैठने नहीं देना चाहिए।
मामा– यह अंधविश्वास है। वास्तव में ऐसा नहीं है उल्लू एक उपयोगी पक्षी है वह हमारा मित्र है।
विवेक– (छत से नीचे उतरता है) इसका क्या कारण है?
मामा– उल्लू चूहों व कीड़ों को खाकर उनसे होने वाले हानि प्रदत्त तत्वों से हमें बचाता है। हमारी भूमि की रक्षा करता है।
विवेक– मामा! क्या उल्लू वास्तव में मूर्ख होता है?
मामा– नहीं विवेक, यह तो बुद्धिमान पक्षी है। शिकार कार्य में तो बहुत पारंगत है।
विवेक– कैसे? मामा– (सिखाता है) उल्लू की यह आँखों की पुतलियाँ अंधकार में फैल जाती हैं। यह अति कम रोशनी में भी दो हजार परिमाण मीटर की दूरी से चूहे को देखने में सक्षम होता है।
विवेक– किंतु घास में छिपे हुए चूहों को झट से वह किस प्रकार पकड़ लेता है?
मामा– वास्तव में उसकी पैनी नजर ही नहीं अपितु उसके कान भी अति क्रियाशील होते हैं। उसके कान पंखों में स्थित होते हैं। उसकी चोंच आँख के ऊपर भी गोल होती है।
विवेक– क्या यह गोल होने पर भी सुनने में सहायक है?
मामा– भान्जे! उल्लू का पूरा गर्दन से ऊपर का भाग सुनने के कार्य में सहायक होता है। इसलिए जब घास में अन्दर छिपा चूहा जरा

भी हरकत करता है तभी यह झट से पकड़ लेता है।
विवेक- क्या उल्लू माँसाहारी होता है?
मामा- हाँ, वह चूहे, मेंढ़क, कीट पतंगों को खाता है। वह अपने खाने के कीडों को झट से पकड़ लेता है।
विवेक- लगता है यह उल्लू सबसे उत्तम शिकारी है। मामा! मामा उल्लू एक बार में कितने अंडे देती है?
मामा- भान्जे! यदि उसे सन्तुलित भोजन मिलता है तो मादा उल्लू एक बार में आठ से दस अण्डे देती है। किन्तु यदि सन्तुलित भोजन न प्राप्त होता तब वह एक अण्डा देती है अन्यथा एक भी नहीं।
विवेक- उल्लू असंख्य बुद्धि के साथ एक जासूस है जो रात में होने वाली गतिशीलता को देखता है।
मामा- हाँ, हम इसे 'गुप्तचर 002' भी कह सकते हैं।
विवेक- 002 क्यों?
मामा- (हँसकर) उसकी आँखों की आकृति गोल होने के कारण 'O' की तरह होती है इस कारण से।
विवेक- ओह! यह सच हैं। मैं भी आज से ही उल्लू नहीं बोलूँगा, गुप्तचर 002 ही कहूँगा। (दोनों हँसते हैं)
1. (क) गुटिकास्त्रेण खगान् लक्ष्यं कृत्वा आखेटकार्ये प्रयत्नशील: भवति। (ख) आखेटकार्येषु (ग) तयो: आवरणौ अंधकारे प्रसरत: अनेन अति सूक्ष्मरश्मिघु अपि द्विसहस्रपरिणाम मीटरस्य दूरादपि मूषकं दृष्टेषु सक्षम: भवति। (घ) पक्षप्रकोष्ठे (ङ) 'अयं खग: अशुभ कारक:' इति (च) उलूक/अनेन गोलायमान नेत्राकृति कारणात्। **2.** (क) आज रविवार है अत: आऊँगा। (ख) यह अंधविश्वास है। (ग) उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। (घ) उसके दोनों कान पंखों के नीचे स्थित हैं। (ङ) वह एक अण्डा देती है।
3. (क) उलूक: वृक्षम् उपविशति।
(ख) विवेक: गुटिकास्त्रे पाषणखंडकम् आरोहति। (ग) उलूक: मानवानां शत्रु: अस्ति।
(घ) उलूक: रमाया: वाहनम् अस्ति।
(ङ) उलूकस्य नेत्राकृति: गोलायमान: भवति।
4. छात्र अध्यापक की सहायता से करें।
5. छात्र अध्यापक की सहायता से करें।

नवम: पाठ: – पिप्पलोऽस्मि

मैं पीपल हूँ और छोटे-छोटे पौधे मेरे भाई बहन हैं। मेरा परिवार बहुत बड़ा है। मेरे अग्रज वट बहुत घने हैं किन्तु मैं उससे भी श्रेष्ठ हूँ। मैं सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ हूँ, इस कारण रात में भी ऑक्सीजन वाला हूँ कोई दूसरा वृक्ष ऐसा नहीं है। केवल मेरी बहन तुलसी ही मेरे अनुसार कार्य करती है। श्वाँस से जो वायु बाहर जाती है वह अशुद्ध वायु होती है। विद्वान लोग इसे कार्बन डाई-ऑक्साइड नाम देते हैं। मैं उसको पचाती हूँ और शुद्ध वायु छोड़ती हूँ। यद्यपि मेरे अन्य वृक्ष भी प्राणवायु उत्पन्न करते हैं किन्तु वे केवल दिन के समय, मैं तो दिन-रात प्रदान करता हूँ। इसलिए लोग रात्रि में मेरे नीचे बैठते और सोते हैं। प्राचीन काल में ऋषि मुनि मेरे नीचे बैठकर ध्यान मग्न होते थे। वेदों की पुराणों की रचना, वेद अध्ययन, मनन चिंतन मेरी जड़ में ही हुआ। गौतम बुद्ध ने तो ज्ञान ही मेरे संसर्ग से प्राप्त किया। इसी कारण 'बोधवृक्ष' मेरा दूसरा नाम हुआ। सम्राट अशोक तो मुझे बहुत मानते थे। उन्होंने मेरी एक शाखा श्रीलंका भेजी। वहाँ आज भी अनुराधापुर के महाविहार में बोध वृक्ष के रूप में स्थित हूँ। 'अश्वत्थ' मेरा पहला नाम है। यह नाम संस्कृत माँ ने दिया। फिर लैटिन भाषा से 'फाइकान रिलिजियोसा' नाम प्रदान किया। भारतीय स्त्री मुझे पूजा योग्य मानती हैं। वह मेरे ऊपर सूत का धागा, रोली हरिद्राचूर्ण फल और जल अर्पित करती है। व्रत और उपवस करती है। मैं उष्णकटिबंधीय क्षेत्र का पेड़ हूँ। सम्पूर्ण भारत के भूतल पर बसता हूँ। पत्ते, जड़, फल, छाल, लकड़ी इकट्ठा करके मेरे अवशेषों से चिकित्सक दवा का निर्माण करते हैं। क्षय रोग, दमा रोग, कुष्ट, प्लेग, खून के विकार आदि गुणों को जानकर लोग मेरी पूजा करते हैं। किन्तु दुख है कायर पुरुष कहते हैं- पीपल के पेड़ के ऊपर भूत, प्रेत, राक्षस, ब्रहमराक्षस और चाण्डाल निवास करते हैं। वे छोटी बुद्धि वाले लोग यह नहीं जानते कि मेरे पत्ते बड़े आकार के होते हैं। रात में जब तेज हवा चलती है, तब पत्ते

आपस में टकराने के कारण ताली की आवाज के समान बजते हैं। वहाँ वे लोग कहते हैं। कि भूत-प्रेत ताली की आवाज करते हैं वे सभी मूर्ख हैं। मेरी जड़ में तो देवी-देवता रहते हैं। मैं तो मनुष्य का हित करने वाला उपकारी वृक्ष हूँ। मानवजाति के लिए, देश के लिए, समाज के लिए, प्राणियों के संरक्षण के लिए मेरे परिवार का संरक्षण आवश्यक है।

1. (क) पिप्पलः रात्रौरपि प्राणवायुदातारः अस्मात् कारणात् सर्वोत्तमः वर्तते। (ख) विद्वज्जनाः अपानवायुं 'कार्बन डाई-ऑक्साइड' इति संज्ञा ददन्ति। (ग) पुराकाले पिप्पलस्य अधस्थिते ऋषे-मुनयः ध्यानमग्नाः अभवन्। (घ) भारतीय नारी पिप्पलं पूजनीयं मानयति सा तस्योपरि यज्ञोपवीतं कुमकुमं, हरिद्राचूर्णं, फलं, जलं च अर्पयति। व्रतोपवासं च करोति। (ङ) पिप्पलः क्षयरोगः अस्थमा कुष्ट प्लेग-खतविकारम् रोगनि हरन्ति। (च) "पिप्पलोपरि भूतःप्रेत- राक्षसाः ब्रह्मराक्षसाः चाण्डालाः च वसन्ति" इति अल्पबुद्धि जनाः आरोपयन्ति।

2. (क) वृन्दा (ख) बोधत्वं (ग) अशोकः (घ) अश्वत्थः संस्कृतेन (ङ) वेगवायुः करतलध्वनीव (च) मानवस्य। **3.** (क) मम परिवारः वृहदस्ति। (ख) अहम् अहर्निशं प्राणवायुं ददामि। (ग) 'ममोपरि भूत-प्रेत-राक्षसाः वसन्ति' इति कापुरुषाः एव वदन्ति। (घ) मम मूले देव्याः देवताः वसन्ति।

(ङ) मम कवचेन औषधं निर्मितं भवति। (च) मम पत्राणि वायु वेगेन करतलध्वनिं कुर्वन्ति।

4. (क) बरगद मेरा बड़ा भाई मुझसे सघन और ऊँचा है, किन्तु मैं उससे श्रेष्ठ हूँ। (ख) रात में भी मैं ऑक्सीजन देने वाला हूँ। (ग) लोग रात में मेरी जड़ में बैठते और सोते हैं। (घ) भारतीय नारी मुझे पूजनीय मानती है। (ङ) कायर लोग कहते हैं –पीपल के पेड़ पर भूत-प्रेत, राक्षस निवास करते हैं।

(च) मेरी जड़ में तो देवी-देवता रहते हैं।

5. (क) मम शुष्क, काष्ठान् एकत्रीकृत्य जनाः हवनं कुर्वन्ति। (ख) अस्थमा प्राणघातकः रोगः अस्ति। (ग) मूढाः मिथ्याः वदन्ति। (घ) पिप्पलः जनानां संरक्षणाय भवति। (ङ) इयं वायु ममानुकूलं नास्ति। (च) वटः सघनः वृक्षः अस्ति।

दशमः पाठः – एकबुद्धिर्जयति

किसी एक जलाशय में दो मछलियाँ रहती थीं एक शतबुद्धि दूसरी सहस्रबुद्धि। उनका एक बुद्धि नाम का मेढ़क मित्र था। वे तीनों प्रतिदिन, कुछ समय आपस में बात करके अच्छा अनुभव करते थे। एक बार सूर्यास्त के समय कुछ मछुआरे जलाशय के तट पर आ गए। उनमें से एक बोला- अरे! इस जलाशय में बहुत सी मछलियाँ हैं जल थोड़ा है। अतः प्रातः आकर सभी को ले जाएँगे यह सुनकर तीनों मित्र आपस में विचार करने लगे। मेंढ़क बोला हे शतबुद्धि! सुनो मछुआरे ने सही कहा है अब क्या करना चाहिए। भागना अथवा ठहरना। जो उचित लगे वही करो। यह सुनकर सहस्रबुद्धि हँसकर बोली- हे मित्र! मैं नहीं जाऊँगी। जल में पलायन करने के बहुत प्रकार के तरीके जानती हूँ जब मछुआरे आएँगे तब मैं तुम्हारी भी बुद्धि के बल से रक्षा करूँगी। उसको सुनकर शतबुद्धि बोली- अरे! ठीक कहती है। आप सही कहती है। अपना स्थान छोड़कर कहीं और नहीं जाना चाहिए।

मेंढ़क बोला- मेरी तो एक बुद्धि है। वह यहाँ से भागने की है, इसलिए मैं आज ही पत्नी के साथ दूसरे जलाशय में जाता हूँ। धीवर भी प्रातःकाल आ गए। वे मछलियों कूर्मों, मेंढकों, कंकड़ों को और जलजीवों को ले गए। भागने में असफल शतबुद्धि, सहस्रबुद्धि मछुआरे के जाल में फँसकर चली गईं। इस प्रकार शतबुद्धि धीवर के साथ चली गई। इस प्रकार शतबुदिद्ध धीवर के सिर पर थी और सहस्रबुद्धि उसके हाथ में लटकी थी। यह देखकर एकबुद्धि मेंढक अपनी पत्नी से बोला प्रिय देखा- ''शतबुद्धि सिर पर स्थित है, सहस्रबुद्धि लटकी है। एक बुद्धि मैं आज साफ जल में खेल रहा हूँ।''

1. (क) शतबुद्धि सहस्रबुद्धिः (ख) एकबुद्धिः (ग) धीवराः (घ) अन्य जलाशयं (ङ) धीवराणां जाले (च) एकबुद्धेः **2.** (क) मण्ड्कः अन्य जलाशयं गतः। (ख) तौ मत्स्यौ जाले आबद्धौ। (ग) मम बुद्धिः पलायनं इच्छति। (घ) अत्र अस्माकं जन्मस्थानम् अस्ति। (ङ) त्वं अत्र कथं निवससि? (च) धीवराः अपि प्राप्तः आगतः। **3.** (क) इदानीं

वार्तालापस्य वेला नास्ति। (ख) सूर्यास्तसमये खगाः प्रत्यागच्छन्ति। (ग) सा विहस्य अवदत्। (घ) बुद्धिबलेन कार्याणि सिद्धयन्ति ते।
(ङ) ते पलायनम् कुर्वन्ति।

4. (क) (i) त्रय + अपि = त्रयापि
(ii) तदा + अहम् = तदाहम्
(iii) विचारम् + अकुर्वन् = विचारमकुर्वन्
(iv) त्वाम् + अपि = त्वामपि
(v) मण्डुकः + अवदत् = मण्ड्कोऽवदत्
(vi) अतः + अहम् = अतोऽहम्
(ख) (i) धीवरोक्तम् = धीवर + उक्तम्
(ii) सहस्रबुद्धिश्च = सहस्रबुद्धिः + च
(iii) एकबुद्धिर्नाम = एकबुद्धिः + नाम
(iv) स्वल्पम् = सु + अल्पम्
(v) शतबुद्धिरकथयत् = शतबुद्धिः + अकथयत्
(vi) अतोऽहम् = अतः + अहम्

एकादशः पाठः – ज्ञान-साधना

1. जब मानव क्रोधित होता है तब उसके चेहरे पर दो हजार माँसपेशियाँ काँपती हैं, किन्तु खुशी के समय मात्र सत्रह मांसपेशियाँ ही कार्य करती हैं। दो हजार बार क्रोध करने से मनुष्य के चेहरे पर एक झुर्री बन जाती है।
2. बिल्ली की हृदयगति मनुष्य से दुगुनी होती है। बिल्ली अपने जीवन का तीन सौ प्रतिशत भाग सँवरने में ही लगाती है।
3. खुले नेत्रों के बीच छींकना असम्भव है।
4. हम सब अनुमानतः एक सम्वतसर में पाँच हजार चार सौ इक्कीस से अधिक बार हँसते हैं।
5. अकेले हाथी ही ऐसा जन्तु है जो कूद नहीं सकता।
6. एक बालक सामान्यतः सप्ताह में अट्ठारह घंटे तक दूरदर्शन देखता है। जो उसके विद्यालय के समय से दुगुना होता है।
7. सामान्यतः लोग सात पल ही सोते हैं।
8. क्या आप टूथब्रश करते हैं? करते हुए यह जान लें कि यह टूथब्रश सन् 1780 ई० में एडिस महोदय ने बनाया था, किन्तु इसका प्रयोग 21वीं शताब्दी में सफल हुआ। उस समय टूथब्रश इतना लोकप्रिय नहीं था।
9. कीड़े अपने पेट से सुनते हैं। कीड़ों के पास सुनने के लिए कान नहीं होते किन्तु उनका शरीर का बीच का भाग सुनने के लिए विशेष संरचना का होता है।
10. सम्पूर्ण विश्व में सेवफल की पाँच हजार पाँच सौ से अधिक किस्में होती हैं।
11. वृक्ष प्रतिफल बढ़ते हैं। पत्ते छोड़ते समय भी जब दूसरे छोटे पौधों की फूल पत्तियाँ और मेरूदण्ड सूख जाती है तब भी वृक्षों का बढ़ना जारी रहता है। उनके पत्ते भी गिरते हैं। इस समय उनकी बढ़ने की क्षमता कुछ धीमी होती है। बसन्त-ग्रीष्म के समय वे अति गतिशील होते हैं। शरद ऋतु में वे निष्क्रिय हो जाते हैं।
12. मकड़ी के आठ पैर होते हैं। किन्तु दो-दो जोड़े में बँटे होते हैं। मकड़ी का कोई भी पैर यदि टूट जाता है तो कुछ समय बाद नया पैर फिर से उग जाता है।
13. कराटे शब्द का संज्ञा शब्द-खाली हाथ।

1. (क) क्रोधः मुखमण्डलस्य त्रिचत्वारिंशत् मांसपेशिनान् कम्पनं करोति। (ख) उद्धारितौ नेत्रयोरमध्ये छिल्का-क्रिया नास्ति सम्भवम्। (ग) सप्ताहे अनुमानतः अष्टविंशति होरा पर्यन्तम् एकः बालकः दूरवीक्ष्यं दृश्यते।
(घ) दन्ततूलिका एडिसमहोदयेन निर्मितं कृतम्।
(ङ) कीटपर्णाः स्वोदरेणश्रृणोति।
(च) मर्कटकस्य यः कोऽपि पादभग्नः भवति कालान्तरे नूतन पादः पुनरुद्भवति। **2.** (क) एकलैव गजः एतादृशः जन्तु यः न कूर्दितं शक्नोति। (ख) तस्य विद्यालयगमनसमयं द्विगुणितं भवति। (ग) उद्धारितौ नेत्रयोरमध्ये छिल्काक्रिया असम्भवम्। (घ) किं भवान् दन्ततूलिकां कुर्वन्ति। (ङ) वृक्षाः शरर्दुतु निष्क्रियशीलाः भवन्ति। (च) अस्य कोऽपि पाद भग्नः भवेत् नूतन (पाद) उद्भवति।
3. (क) खुले नेत्रों के बीच छींकना असम्भव है। (ख) किन्तु यह प्रयोग उन्नीसवीं शताब्दी में सफल हुआ। (ग) कीट अपने पेट से सुनता है। (घ) उस समय ब्रश अति लोकप्रिय नहीं था। (ङ) जब दूसरे छोटे पेड़ों की फूल-पत्तियाँ और तने सूख जाते हैं। (च) वसन्त समय में वे अधिक गतिशील होते हैं। **4.** (क) हर्षकाले (ख) मनुष्यात् (ग) 1780, एडिसन महोदयेन (घ) वृद्धि क्षमता (ङ) नूतन पादः **5.** छात्र अध्यापक की सहायता से करें। **6.** छात्र अध्यापक की सहायता से करें।

द्वादशः पाठः – आस्तिक पुत्रः

यह शाम का समय था। ईश्वर को साक्षी

मानकर प्रचार-प्रसार के अपराध में आठ वर्षीय बालक को आज सबके सामने मृत्युदंड मिलेगा। इस बालक का मृत्युदंड देखने अनगिनत नर-नारी न्यायालय के विस्तृत प्रांगण में एकत्रित हैं। ऊँचे-ऊँचे भवनों के झरोखों से देखते हुए संभ्रान्त स्त्रियाँ इस दृश्य को सोचने मात्र से शोक युक्त हो जाती हैं। इस बालक प्रह्लाद की माता कयाधु अत्यन्त शोकाकुल है। निश्चित समय पर राजपुरुषों ने प्रह्लाद को लेकर दैत्यराज राजा हिरण्यकशिपु के सामने उपस्थित किया। राज सिंहासन पर राजा हिरण्यकशिपु आसीन हैं। जंजीर से जकड़े बालक को देखकर राजा ने कहा- हे दुर्बुद्धि पुत्र अब भी समय शेष है अपना अपराध स्वीकार करके आत्मसमर्पण कर दो। मैं संसार में वर्गरहित, धर्मरहित और ईश्वररहित समाज की स्थापना करूँगा। तुम व्यर्थ में मेरी बाधा मत बनो। अन्यथा मृत्युदंड के अधिकारी बनोगे।

''क्षमा करें पिताजी! सारे संसार में कोई भी लालच अथवा भय प्रह्लाद को अपने रास्ते से नहीं रोक सकता है।'' प्रह्लाद बोला। अपने पुत्र के इन वचनों को सुनकर क्रोध के आवेग से हिरण्यकशिपु अति विचलित हो गया। वह तेज आवाज में बोला- ''बैठ, पागल मत बन। सैनिकों! उस दुराग्रही को पकड़ो। सिंह का भोजन बनना आज इसी के भाग्य में लिखा है।'' प्रांगण में लोहे से बने जेल में प्रह्लाद बिना किसी भय से मृत्यु की प्रतीक्षा में उपस्थित हो गया। 'श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा' यह पावन ध्वनि मुख से उच्चारित हो रही थी। अचानक पहले से सावधानी से पिंजरे का द्वारा खोल दिया गया। भूखा शेर प्रहलाद के सामने एक छलांग में उपस्थित हो गया। भीड़ चकित हो गई। प्रह्लाद ने सिंह को देखकर फिर बाहें फैलाकर भावावेश में भरे गले से कहा- ओह! मेरे स्वामी आज तो आप अनोखे वेश में आ गए, किन्तु मेरे नेत्रों ने आपको पहचान लिया। सिंह उसके चरणों में गिर गया। भीड़ आश्चर्यचकित हो गई। धन्य है यह सत्य ईश्वर की आराधना में संलग्न बालक। इसकी रक्षा के लिए ईश्वर ने नरसिंह अवतार धारण किया।

1. (क) बालकस्य मृत्युदण्डं दर्शनाय (ख) प्रह्लादस्य माता (ग) शृंखलायाः बद्धमानं (घ) जनकस्य वचनं श्रुत्वा प्रह्लादः अवदत्– "क्षम्यताम् तात! खलु संसारस्य कोऽपि प्रलोभनं भयं वा प्रह्लादाय स्वमार्गात् नावरोधकः भवितुं शक्यते।" (ङ) यदा बुभुक्षितः सिंहः पादमेकं उत्थाय प्रह्लाद सम्मुखे उपस्थितम् अभवत् तदा जनसम्मर्दः स्तब्ध जातः। **2.** (क) इयं सन्ध्यावेला आसीत्। (ख) क्षम्यताम्! तात! (ग) त्वं वृथा मम बाधकः न भव। (घ) पुत्रः पितुः वचनम् अश्रृणोत् (ङ) ईशः सर्वेषां रक्षां कुर्वन्ति। **3.** (क) खिड़कियों से झाँकने वाली कुलीन स्त्रियाँ शोकाकुल हो गईं। (ख) इस बालक की माँ कयाधु अति शोकग्रस्त थी। (ग) अरे दुबुद्धि! अब भी थोड़ा समय (बचा) है। (घ) अचानक पहले से तैयार पिंजरे का दरवाजा खुला। (ङ) सत्य ईश्वर की आराधना में संलग्न यह बालक धन्य है। **4.** (क) वदति (ख) अस्ति (ग) भवति (घ) वदति (ङ) भवति **5.** छात्र अध्यापक की सहायता से करें। **6.** छात्र अध्यापक की सहायता से करें।

7. (क)(i) विस्तृत + अजिरे = विस्तृताजिरे
(ii) शोक + आक्रांता = शोकाक्रांता
(iii) उच्च + उच्चमुखी = उच्चोच्चमुखी
(iv) दुः + मते = दुर्मते
(v) अधुना + अपि = अधुनाऽपि
(vi) मृत्युदण्ड + अधिकारी = मृत्युदंडाधिकारी
(ख) (i) निर्द्वन्द्वभावेन = निः + द्वन्द्वभावेन
(ii) वेलासीत् = वेला + आसीत्
(iii) प्रसारापराधे = प्रसार + अपराधे
(iv) स्वापराधाम् = स्व + अपराधाम्
(v) प्रहलादमादाय = प्रहलादम् + आदाय
(vi) वचनमिदम् = वचनम् + इदम्

त्रयोदशः पाठः – असमीक्षितं न कर्त्तव्यम्

प्रसिद्ध उज्जयनी में विश्वकर्मा नाम का ब्राहमण रहता था। उसके घर में ब्राहमणी ने जिस दिन पुत्र को जन्म दिया, उसी दिन उसकी पाली हुई एक नकुली ने शिशु नकुल को जन्म दिया और मर गई। ब्राहमणी ने उस बिना माँ के नकुल शिशु को बचपन से पुत्र की तरह पाला। वह ब्राहमणी उस नकुल शिशु को पालकर भी उसे स्वभाव से ही शत्रु

सोचकर रात-दिन अन्दर रहती थी।
एक बार वह ब्राहमणी अपने पुत्र की रक्षा के लिए ब्राहमण को बैठाकर जल लाने तालाब गई। उसी समय राजा के महल से कुछ दान लेने के लिए आमन्त्रण आ गया। विश्वकर्मा धन के लालच में उस नकुल को पुत्र की रक्षा के लिए नियुक्त करके महल आ गया।
उसी समय एक काला साँप बिल से निकलकर बालक के समीप आ गया। उस साँप के साथ युद्ध करके नकुल ने उसे मार दिया और उसके टुकड़े कर दिए। तब उस नकुल का मुख खून से लाल हो गया। इसके पश्चात् वह नकुल अपना पराक्रम दिखाने के लिए घर के दरवाजे पर बैठ गया। आती हुई विमाता को देखकर वह यह समाचार बताने के लिए बाहर दौड़ा। दौड़ते हुए नकुल वहाँ आ गया जिस मार्ग ब्राहमणी आ रही थी। वहाँ खून से सने नकुल को देखकर वह सोचने लगी- ''इस नकुल ने अवश्य मेरे पुत्र को मार दिया है।'' इसलिए उसने गुस्से में जल से भरे घड़े को नकुल के ऊपर फेंक दिया। वह नकुल वही गिर गया और मर गया।
इसके पश्चात् उस ब्राहमणी ने दौड़कर घर आकर देखा कि पुत्र सुख से सो रहा है और उसके पास मरा हुआ साँप पड़ा है। इस प्रकार वह जान गई कि नकुल ने ही सर्प के टुकड़े करके उसके पुत्र की रक्षा की है। अतः पुत्र समान नकुल की हत्या के कारण ब्राहमणी अत्यन्त शोकाकुल हो गई। सत्य कहा है- बिना जाँच पड़ताल के कार्य नहीं करना चाहिए।
1. (क) उज्जयिन्या (ख) जलमानेतुं तड़ागम् (ग) विलात् (घ) नकुलं दृष्ट्वा ब्राह्मणी अचिंतयत्–"एषः नकुलःअवश्यमेव मम पुत्रं मारितवान्।" अतः सा क्रोधेन जलपूर्णं घटं नकुलस्य उपरि अक्षिपत्। तेन नकुलः तत्रैव पतितः मृतः च। (ङ) तस्य पुत्रः स्र्वपिति सुखेन। **2.** (क) बिना विचारे कुछ नहीं करना चाहिए, विचार कर कार्य करना चाहिए। (ख) एक बार वह ब्राह्मणी पानी लेने तालाब पर गई। (ग) बिल से काला साँप निकला। (घ) नेवले का मुँह खून से रँग गया। (ङ) रास्ते में ब्राह्मणी आ रही थी। **3.** (क) क्षिपति (ख) मृत्युम् आप्नोति/मरति (ग) चिन्तयति (घ) भवति (ङ) तिष्ठति।
4. (क) (i) तस्मिन् + एव = तस्मिनैव
(ii) किम् + अपि = किमऽपि
(iii) तत्र + एव = तत्रैव
(iv) शिशुः + अपि = शिशुरपि
(v) पुत्रः + च = पुत्रश्च
(vi) अस्मिन् + एव = अस्मिनैव (ख)
(i) जलमानेतुम् = जलम् + आनेतुम्
(ii) नकुलस्योपरि = नकुलस्य + उपरि
(iii) निर्गत्य = निः + गत्य
(iv) सत्यमुक्तम् = सत्यं + उक्तम्
(v) अवश्यमेव = अवश्यम् + एव
(vi) पुत्रश्च = पुत्रः + च

चतुदर्श पाठः – सुभाषितानि

1. विद्या बल ब्राहमण का तथा सैनिक बल राजा का होता है उसी प्रकार वित्त (धन) का बल व्यापरियों का, सेवा कार्य शूद्रों का होता है।
2. दुर्जन और सर्प में सर्प श्रेष्ठ है क्योंकि सर्प का डसा हुआ एक ही बार मरता है दुर्जन तो पग-पग पर डसता है।
3. कोयलों का रूप स्वर है स्त्री का रूप पतिव्रत है विद्या कुरूपों का रूप है क्षमा तपस्वियों का रूप है।
4. पक्षियों में कौआ दुष्ट जीव है, पशुओं में कुत्ता। मुनियों में क्रोधी दुष्ट होता है इन सभी से निंदा करने वाला।
5. इकट्ठा किए हुए धन का त्याग ही रक्षा करता है क्योंकि तालाब में स्थित कीचड़ सडांध (बदबू) की भाँति होता है।
6. जिसके पास अपनी बुद्धि न हो, शास्त्र उसका क्या करेंगे नेत्रों से हीन शीशे का क्या करेगा।
7. पानी की बूँद गिरने से घड़ा भर जाता है जैसे सभी विद्याओं का धर्म और धन का।
1. (क) शूद्राणां (ख) स्वरः (ग) कुक्कुरः (घ) यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा तस्य (ङ) निन्दकः **2.** (क) विप्राणां-शूद्राणां
(ख) सर्वस्य-कालेन (ग) वित्तानां-परिस्राव
(घ) प्रज्ञां-तस्य-विहीनस्य
(ङ) जलबिन्दुनिपातेन-धर्मस्य **3.** (क) वैश्यानां बलं धनमस्ति। (ख) नृपस्य बलं सैन्यम्।

(ग) दुर्जनः पदे-पदे दंशति। (घ) तस्य शास्त्र किमपि न करोति। (ङ) बिन्दुनिपातेन घटं पूर्यते। **4.** (क) विप्राणां (ख) नारीणां
(ग) विहीनस्य (घ) वित्तस्य (ङ)कोकिलानां
5. (क) मुनीनाम् (ख) दुर्जनात् (ग) विप्रेण (घ) कुरूपान् (ङ) वैश्ययोः
(च) कुक्कुराणाम् **6.** (क) कोकिलानां रूपं स्वरः भवति। (ख) विप्राणां क्षीरं शोभते।
(ग) सर्वविद्यानाम् सा श्रेष्ठा या विभुक्तये। (घ) विद्या सर्वस्य वै धनम्। (ङ) मुनीनाम् आचरणः श्रेष्ठः। (च) सर्वेषां उत्सवानां अयं उत्सवः श्रेष्ठ।

पञ्चदशः पाठः – ध्रुवसंकल्पम्

इन्द्रप्रस्थनगर के ज्वालहेड़ी क्षेत्र में श्रीराम पालीवाल नाम का कोई धनी रहता है। उसकी दो पत्नियाँ एक सुनीति, दूसरी सुरुचि है। सुनीति बड़ी और सुरुचि छोटी पत्नी है। छोटी सुरूचि धनिक को अति प्रिय है। सुरुचि का पुत्र विशाल पिता का प्रिय है अतः वह बहुत जिद्दी है। किंतु सुनीति का पुत्र सुधांशु अत्यन्त सौम्य होते हुए भी धनिक के स्नेह का पात्र नहीं है।

एक अवसर पर श्री राम पालीवाल पलंग के ऊपर बैठा था। उसकी गोद में उसी समय दौड़ता हुआ हाथ में रिमोट लेकर विशाल नाम का पुत्र स्थित था। फिर सुधांशु भी विशाल के पीछे दौड़ते हुए वहाँ आ गया। सुधांशु बोला– ''पिताजी!' विशाल मेरा रिमोट नहीं देता है। मैं आज दूरदर्शन देखूँगा।'' विशाल ने उत्तर दिया– 'नहीं, पिताजी!' मैं नहीं दूँगा। मैं अन्य प्रसारण देखूँगा, दूरदर्शन नहीं। श्रीरामपाल बोले– पुत्र सुधांशु तुम बड़े हो, इसलिए छोटे पर क्रोध नहीं करते। सुधांशु ने कहा, ''ठीक है पिताजी!'' फिर विशाल की तरफ देखकर बोला– ''पिताजी! मैं भी पिता की गोद में चढ़ने के लिए इच्छा रखता हूँ।'' उसके पास स्थित सुरुचि ने द्वेष के कारण, घमण्ड के कारण उसे देखकर डाँटकर बोली, ''पुत्र! तुम्हारी अभिलाषा बेकार है। दूसरी पत्नी से उत्पन्न तुम कैसे मेरे पुत्र समान हो सकते हो? इस गोद के योग्य तो मेरा पुत्र विशाल ही है'' इस अपमान से चोटें खाया हुआ बालक सुधांशु माता के पास जाकर रोकर अपने दुख को निवेदन करता है। इसके पश्चात् माता सुनीति बोली– पुत्र! दुख त्याग दो। सरस्वती की शरण में जाओ। वह ही अपनी कृपा से तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगी। इसलिए हे पुत्र लगातार पढ़ो, ध्यान से, अभ्यास से जितनी जल्दी हो सके विद्वान बनो। पढ़कर धन का अर्जन करो। धन को प्राप्त करके भौतिक सुख साधन का लाभ लो। माता की आज्ञा मानकर सुधांशु रात-दिन ध्यान से लगातार अभ्यास से पढ़ा। कक्षाध्यापक प्रधानाचार्य की सलाह से मुश्किल पाठ की समस्या का समाधान करके वह थोड़े समय में ही विद्वान हो गया। सुधांशु अध्यापकों के परामर्श से ''ॐ नमो भगवते सरस्वतै नमः'' नामक मंत्र को घोर तपस्या करके सीखा। तपस्या से प्रसन्न भगवती सरस्वती सपने में आकर उस बालक को दर्शन देकर लक्ष्मी देवी ने आशीर्वाद दिया। उनके आशीर्वाद से सुधांशु ने अति सर्वश्रेष्ठ राजकीय पद प्राप्त किया। अपना सम्मान, धन, भौतिक सुख और सुविधाएँ प्राप्त कीं। पिता का घर छोड़कर अपनी माता के साथ अपने बनाए महल में आ गया। माता की सेवा के लिए सेवक और सेविका नियुक्त कर दीं। इस प्रकार अटल इरादे से सुधांशु धनी हो गया।

1. (क) सुनीतिः सुरुचिः (ख) सुनीतिः (ग) स्वजनकस्य अंकम् (घ) वनं (ङ) भातुः वचनपालनेन **2.** (क) श्रीराम पालीवालस्य द्वे पत्न्ये आस्ताम्। (ख) एकदा श्रीरामपालीवालः पर्यंके अतिष्ठत्। (ग) सुरुचिः ईर्ष्यया सुधांशु अकोपयत्। (घ) पुत्र! शारदा शरणं गच्छ। (ङ) सुधांशु स्वध्रुवसंकल्पेन राजकीय पदं अलमत्। **3.** (क) इंद्रप्रस्थ राज्ये इन्द्रसेनस्य राज्यम् आसीत्। (ख) जनकस्य अङ्के सः तिष्ठति। (ग) वृथा ते मनोरथः। (घ) जीवनाय राजकीय पदं आवश्यकम्। (ङ) स्वयंकृत ध्रुवसंकल्पेन कार्यसिद्धिः भवति। **4.** (क) आस्ताम् (ख) वदति (ग) गच्छ (घ) पपाठ (ङ) लभति **5.** (क) कृ + क्त्वा = कृत्वा
(ख) भू + क्त्वा = भूत्वा
(ग) वद् + क्त्वा = वदित्वा
(घ) गम् + क्त्वा = गत्वा
(ङ) तर्जय् + क्त्वा = तर्जयित्वा
(च) पठ् + क्त्वा = पठित्वा

षोषडशः पाठः – दुर्गा पूजा

सम्पूर्ण संसार में सभी देशों में उत्सव प्रचलित है। इसी क्रम में भारतवर्ष में विविध प्रकार के उत्सव होते हैं। उन सब में दुर्गा पूजा महोत्सव मुख्य है। दुर्गा पूजा हिन्दुओं का उत्सव है। शरद काल में अश्वन माह में यह पूजा पूरे भारत में श्रद्धा और आनन्द से मनाई जाती है। शरद काल में भगवती महापूजा होती है इस नियम का अनुसरण समस्त भारत में धर्मनिष्ठापूर्वक ईश्वर में विश्वास रखने वाले लोग नवरात्र महोत्सव में भगवती की अर्चना करते हैं। दुर्गा पूजा के विषय में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। सुनते हैं कि रावण के साथ महासंग्राम में जब श्रीराम चन्द्र जी को विजय प्राप्त न हुई। तब शक्ति प्राप्त करने के लिए उन्होंने इस नवरात्रि में भगवती दुर्गा की आराधना की थी। उसके पश्चात् श्रीरामचन्द्र की भक्ति भावना से प्रसन्न होकर उन्होंने वरदान दिया, उस बल से रावण का जड़ से नाश किया और लंका पर विजय प्राप्त की। उस विजय के स्मरण के लिए प्रतिवर्ष इस दिन भगवती श्री अपराजिता दुर्गा की पूजा की जाती है। इनको पूजने से मानव की कहीं भी पराजय नहीं होतीं। सब जगह और हमेशा विजय की प्राप्ति मनुष्य को प्रसन्नता ही अनुभव कराती है। इस अवसर पर अनेक स्थान पर प्रतिवर्ष रामलीला का प्रदर्शन होता है। पूजा के अन्तिम दिन को विजयदशमी कहते हैं। दूसरे लोग कहते हैं कि इसकी दसवीं तिथि को देवी अपराजिता दुर्गा ने महिषासुर नामक राक्षस को मारा था, इसलिए सब जगह दुर्गा की महिषासुर को मारने वाली विधिवत् स्थापित मूर्ति की पूजा होती है। देवी प्रतिमा और पूजा स्थल उत्तम विधि से सजाए हुए होते हैं। लोग दुर्गा स्तुति पढ़ते हैं और हवन करते हैं। बहुत से स्थानों पर संगीत, नृत्य आदि मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। लोग नए वस्त्र धारण करते हैं। अनेक मिठाइयाँ खाते हैं। बंगाल प्रान्त में इसका महत्व दूसरी तरह से है। बंगाल में पहले देवी भगवती की आदि शक्ति की अराधना में संलग्न होते हैं। वे अष्टमी को सरस्वती, महालक्ष्मी सजी हुई दुर्गा प्रतिमा की पूजा घर-घर में करते हैं। इसके बाद दशमी को बड़ा उत्सव करके जल में विसर्जन करते हैं हिन्दू मत के अनुसार दुर्गा आदि शक्ति जगत जननी है। उसके आशीर्वाद से अधर्म का नाश होता है धर्म की विजय होती है। इनकी पूजा से लोगों में आत्मविश्वास, उत्साह, धार्मिक-भावना भाईचारा भी बढ़ता है। दुर्गापूजा विजय का प्रतीक है।

1. (क) शरदकाले आश्विनमासे (ख) देव्याः (ग) जले (घ) महिषासुर नामकं राक्षसं (ङ) उत्तमरीत्या **2.** (क) भारतः उत्सवानां देशः अस्ति। (ख) अस्यपूजा समस्त भारते श्रद्धयानन्देन च भवति। (ग) पूजायाः अंते दिवसे सिद्धिदात्री पूजा भवति। (घ) जनाः दुर्गास्तुतिं कुर्वन्ति। (ङ) देवी दुर्गा विजयस्य प्रतीका अस्ति। **3.** दशम्याम्—तिथौ, मनोरंजकाः —कार्यक्रमाः, प्रतिष्ठिता—प्रतिमा, जगज्जननी—दुर्गा, अनेकाः— कथा **4.** (क) धर्मः - धर्मस्य जयं भवति। अधर्मः - अधर्मस्य पराजयं भवति।

(ख) जयः - धर्मस्य जयं भवति।
पराजयः - अधर्मस्य पराजयं भवति।

(ग) खादन्ति - बालकः खादन्ति।
खादयन्ति - जनाः बालकान् भोजनं खादयन्ति।

(घ) गच्छन्ति - ते विद्यालयं गच्छन्ति।
आगच्छन्ति - ते गृहं आगच्छन्ति।

(ङ) पूजति - सा सीतां पूजति।
पूजयति - सीता दुर्गा पूजयति।

सप्तदशः पाठः – दानवीर कर्ण

(ब्राहमण के वेश में पुरन्दर का प्रवेश होता है।)

पुरन्दर- हे कर्ण! सबसे महान् भिक्षा दो।

कर्ण- भगवन! मैं कर्ण हूँ, आपको नमस्कार करता हूँ। आज्ञा दें क्या इच्छा है, क्या दूँ?

पुरन्दर- सबसे महान् भिक्षा माँगता हूँ।

कर्ण- सबसे महान् भिक्षा आपको प्रदान करता हूँ। हजार गाय देता हूँ।

पुरन्दर- क्षणभर में दूध पी लूँगा और इच्छा है कर्ण।

कर्ण- आप क्या चाहते हैं? सहस्रों घोड़े तुम्हें देता हूँ।

पुरन्दर- क्षणभर में चढ़ जाऊँगा। नहीं चाहिए कर्ण! नहीं चाहिए।

कर्ण- यह हाथियों का झुण्ड देता हूँ।

पुरन्दर- यह भी नहीं चाहिए।

कर्ण– और सुनिए। असीमित सोना देता हूँ।
पुरन्दर– लेकर जाता है (जाकर पुनः आकर) नहीं चाहिए कर्ण! नहीं चाहिए।
कर्ण– जीती हुई पृथ्वी देता हूँ।
पुरन्दर– पृथ्वी का क्या करूँगा?
कर्ण– तो मैं अपना सिर देता हूँ।
पुरन्दर– नहीं! नहीं!
कर्ण– डरो नहीं! डरो नहीं आप प्रसन्न हों और सुनो भगवन यदि अच्छा लगे तो कुण्डलों के साथ कवच देता हूँ।
पुरन्दर– दे दो, दे दो।
कर्ण– (मन ही मन) यह इनकी इच्छा है। (उजाले में) लीजिए।
शल्य राज– अङ्गराज! मत दो! मत दो!
कर्ण– देखो– समय परिवर्तन से शिक्षा नष्ट हो जाती है। मजबूत जड़ वाले पौधे भी गिर जाते हैं। जलाशय के अन्दर का जल भी सूख जाता है। दिया हुआ दान वहीं रहता है इसलिए ग्रहण कीजिए।

1. (क) इन्द्रः। (ख) कर्णसमीपम् (ग) कवच कुण्डलान् (घ) हुतं दत्तं च (ङ) पादपाः (च) कर्णः गो सहस्रम्। **2.** (क) कर्णः सूर्यस्य पुत्रः आसीत्। (ख) इन्द्रः कर्णाय कवच-कुण्डलानि आयाचत्। (ग) नास्ति दान समं अन्यम्। (घ) दानदातृषु कर्णः श्रेष्ठः। (ङ) कर्ण! तिष्ठ! इन्द्रः त्वयं छलं करोति। **3.** (क) क्षण भर में दूध पीता हूँ। कर्ण इच्छा नहीं है। (ख) तो फिर धरती जीतकर देता हूँ। (ग) देने तथा लेने वाला वहीं रहता है। (घ) अंगराज! मत दो, मत दो। (ङ) आपको यदि अच्छा लगता है, कुण्डलों के साथ कवच देता हूँ।
4. छात्र अध्यापक की सहायता से करें। **5.** छात्र अध्यापक की सहायता से करें। **6.** (क) अहं (ख) कर्णः (ग) त्वं (घ) अहं (ङ) शिक्षा

अष्टादश पाठः – मूर्खो भूपतिः

चोरी के काम में निपुण कोई चोर किसी दिन भवन में प्रवेश करता है। रोशनदान के रास्ते से जैसे ही वह प्रवेश करता है। तभी अचानक रोशनदान की लकड़ी टूटने से उसका पैर टूट जाता है।
दूसरे पैर से घायल चोर चौपट नामक राजा के सामने आकर कहने लगा– मैं चोर हूँ। कल रात्रि में एक घर में घुसते समय रोशनदान टूटने से मेरा पैर टूट गया। चौपट चिल्लाकर बोला– ''घर के स्वामी को शीघ्र बुलाओ।'' डरा हुआ गृह स्वामी राजसभा में आया। चौपट बोला ''तुम्हारे रोशनदान के दोष से चोर का पैर टूट गया।'' काँपते हुए गृहपति ने निवेदन किया ''हे देव! मेरा दोष नहीं है बढ़ई का दोष है।'' क्रोधित राजा बोला– ''बढ़ई को बुलाओ।'' सैनिक बढ़ई को बाँधकर राज्यसभा में ले आये। बढ़ई हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। राजा बोला– ''गृहपति ने रोशनदान बनवाने में अत्यधिक धन खर्च किया। तुम्हारे कारण चोर का पैर टूट गया।'' बढ़ई बोला– ''राजन मेरा दोष नहीं है जब मैं रोशनदान में कील गाड़ने में संलग्न था उसी समय कोई लाल वस्त्र वाला सुंदर बालक सामने आ गया। उसको देखकर मैं मोहित हो गया। इस कारण रूकावट हो गयी।'' क्रोधित राजा ने बालक को लाने के लिए आदेश दिया। जब बालक राजदरबार में आ गया। तब राजा बोला ''यदि तुम लाल वस्त्र वाले न होते तो बढ़ई का ध्यान अपने काम को नहीं भूलता, वह कील लगाने में भटकता नहीं तो, उस चोर का पैर नहीं टूटता। मुस्कुराते हुए बालक बोला– ''राजन! मेरा दोष नहीं है, सौन्दर्य तो विधाता का दिया हुआ है लाल वस्त्र तो धोबी ने रँगे है।'' राजा क्राधित होकर बोला– ''शीघ्र ही धीबी को बुलाओ।'' सैनिक क्षणभर में ही धोबी को ले आए। राजा गरज कर बोला– ''हे धोबी! तुमने कपड़े क्यों सुंदर रंगे जिनसे बढ़ई लाल रंग के बालक को देखकर विचलित हो गया।'' धोबी तो चुपचाप रहा। राजा क्रोध से बोला– ''चुप क्यों हो?'' क्यों उत्तर नहीं देते? धोबी कारण बताता है किन्तु राजा आदेश देता है– ''धोबी को फाँसी पर चढ़ा दो।'' संयोग से धोबी लम्बा था। जेल का द्वार छोटा था। सैनिक धोबी को दरवाजे से कैसे ले जाते। वे राजा से बोले– ''राजन्'' जेल का द्वार तो छोटा है और धोबी लम्बा है। अतः हम उसे सूली पर चढ़ाने में असमर्थ हैं। क्रोधित राजा बोला– मेरे आदेश को तुम नहीं टाल सकते। अतः किसी बौने पुरुष को लाकर फाँसी पर चढ़ाओं अथवा मुझे सूली पर चढ़ा दो। राजा के आदेश से सैनिक बौने पुरुष की खोज

करने लगे। किन्तु संयोग से कोई भी बौना आदमी नहीं मिला, तब वे राजा को बाँधकर जेल में लेजाकर जबरदस्ती उस राजा को फाँसी पर लटका देते हैं।

1. (क) चौर स्वसमस्या निवारणार्थं राज्ञः समीपं गतः। (ख) कक्ष प्रवेश समये सहसा गवाक्षकाष्ठपतनात् चौरस्य पाद भग्नः अभवत्। (ग) काष्ठकारः प्रावोचत्–"राजन् नात्र मम दोषः। यदाऽहं गवाक्षे कीलकं संयोजने संलग्नः तदैव कोऽपि रक्तवस्त्रवृतः सुंदरः बालकः दृष्टिपथम् आगतः। तां वीक्ष्य विमूढोऽहं संजातः। अनवधानस्य कारणमेतत्।" (घ) रजकं प्रति नृपः क्रुद्धः सन् प्राह–"कथं तूष्णीं स्थितः कथं नोत्तरं ददाति।" (ङ) रक्षा पुरुषाः राजानं विज्ञापिता –"राजन्! कारागृहस्य द्वार लघुवर्तते रजकश्च लम्बः। अतस्तं शूलमारोपयितुम् असमर्थाः वयम्।" (च) रक्षा पुरुषाः खर्व पुरुषान्वेषणोपरान्ते राजानं बद्ध्वा कारागारमानयन् बलात् तं शूलमारोपयन्।

2. (क) ह्य रात्रे अहं गृहं प्रविष्टः। (ख) राजन् नात्र मम दोषः। (ग) तं बालकं दृष्ट्वा अहं विमोहितम् अभवम्। (घ) शीघ्रं रंगरेजं आनय। (ङ) रक्त वस्त्र रजकः रंजितः। (च) नात्र मम अपराधः। **3.** (क) कील संयोजने रामः हतः। (ख) सा रक्त वस्त्राणि धारयति। (ग) राजा समाज्ञापयति। (घ) सः प्राह। (ङ) गवाक्ष निर्माणे कथं विलम्बः भवति। (च) राजाज्ञया सर्वे तूष्णीम् अतिष्ठन्।

4. (क) गवाक्षमार्गेण – तृतीया विभक्ति
(ख) गवाक्षपतनात् – पञ्चमी विभक्ति
(ग) अवधानेन – तृतीया विभक्ति
(घ) राजाज्ञया – तृतीया विभक्ति
(ङ) संयोगेन – तृतीया विभक्ति
(च) स्वकार्यात् – पञ्चमी विभक्ति

5. प्राविशत्– प्र-विशत् आगच्छत्– आ–गच्छ, प्रकुपितः– प्र–कुपितः, विमूढः– वि–मूढ! उपागतः– उप–आगत, विस्मरिष्यन्–वि–स्मरिष्यन्, विधात्रा– वि–धात्रा।

6. क्रोधी राजा ने बालक को लाने का आदेश दिया। जब बालक राजद्वार में आया, तब राजा ने कहा–"यदि तुमने लाल कपड़े न पहने होते तो बढ़ई का ध्यान अपने कार्य से अलग न होता, वह कील ठोंकने में प्रामाद न करता और न चोर का पैर टूटता।" सोचते हुए बालक ने कहा–"राजन! मैं दोषभागी नहीं हूँ। सौन्दर्य तो विधाता ने दिया, लाल वस्त्र तो रँगरेज ने रँगे हैं।" राजा क्रोध के साथ बोला–"शीघ्र ही रँगरेज बुलाया जाए।" राजपुरुष उसी क्षण रँगरेज को ले आए।

नवदशः पाठः – शठे शाठ्यं समाचरेत्

किसी वन में एक सियार रहता था। एक बार उसे दो दिन तक खाने को नहीं मिला। भूख से व्याकुल वह एक नगर में घुस गया। नगर के कुत्तों ने उसे देखा। वे उसके पीछे दौड़ने लगे। कुत्तों से रक्षा के लिए वह इधर-उधर दौड़ा। किन्तु कुत्तों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। दौड़ते हुए सियार को एक घर दिखाई दिया। अपने प्राणों की रक्षा के लिए वह उस घर में घुस गया। वह घर एक धोबी का था। उस घर में नीले रंग से भरा एक बड़ा बर्तन था। घने अंधेरे और डर के कारण वह सियार उस बड़े बर्तन में गिर गया। दौड़ते हुए कुत्ते उसे न पाने पर विवश होकर वापस लौट गए। कुछ समय बाद सियार शरीर देखकर वह स्वयं से बोला– ओह! मेरा रंग तो नीला हो गया। रात में ही वह वन में आ गया। वन के जीव उस विचित्र रंग वाले को देखकर डर कर दूर से ही दौड़ने लगे। उसने देखकर अपने मस्तिष्क में एक योजना बनाकर डरे हुए वन के जीवों को बुलाकर उनसे बोला- ईश्वर ने मुझे तुम्हारी प्रजा की रक्षा के लिए राजा बनाकर धरती पर भेजा है। डर छोड़ो। तुम डर छोड़कर मेरे राज्य में सुखी जीवन जियो। मैं तुम सब की रक्षा करूँगा। सभी जन्तुओं ने खुशी से सियार को अपना राजा मान लिया। हाथी, वृक, व्याघ्र, इत्यादि राजदरबार में ऊँचे-ऊँचे पदों पर आसीन कर दिए। सियार ने अपने भाई–बन्धु को कोई पद राजदरबार में नहीं दिया। इससे अधिक, वह उनसे बात तक नहीं करता था। सवर्ण सियार सबके बीच सियारों का अपमान करता था। हाथी शेर छोटे से छोटे अपराध में दण्ड का प्रयोग करते थे। अपने भाई के कटु व्यवहार से सियार बहुत दुखी हुए। वे पहले सोचते थे कि यदि सियार राजा होगा तब हम सुखी होंगे किंतु यहाँ तो उल्टा हो गया। उससे दुखी होकर उन्होंने सभा आयोजित की। उन्होंने

सोचा सवर्ण सियार द्वारा किए अपमान से किस प्रकार हम मुक्त होंगे। एक बूढ़े सियार ने संबोधित किया- हे मित्रों! सुनों जैसे से तैसा व्यवहार करना चाहिए। हम सभी जानते हैं कि हमारा राजा सियार है। किंतु इस स्थान पर नीला रंग प्रमुख कारण है। जानवर इसे ईश्वर का भेजा दूत मानते हैं। वह दुष्ट भी यह जानता है यह रहस्य नहीं खुलेगा। यदि हम सब इकट्ठे होकर 'हुआ-हुआ' मिलकर बोलें तथी स्वाभाविक है उसका भेद अपने आप खुल जाएगा। सत्य प्राणियों के सामने स्पष्ट हो जाएगा। सभी सियार इकट्ठे होकर मिलकर 'हुआ हुआ' उच्चारित करने लगे। जन्म व स्वभाव से ही वह सवर्ण सियार भी चुप न रहा। उनके साथ 'हुआ हुआ' उच्चारण करने लगा। सिंह, व्याघ्र, हाथी आदि सभी के सामने उस सियार की दुष्टता का रहस्य स्पष्ट हो गया। वे अत्यन्त क्रोधपूर्ण हो गए। फिर उन्होंने दुष्ट सियार के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

विंशतिं पाठः – जवाहरलाल महोदयः

जवाहरलाल नेहरू महोदय का जन्म नवम्बर माह की चौदह तारीख को 1881 शताब्दी में काश्मीर के सारस्वत ब्राहमण के वंश में प्रयाग के मीरगंज नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता पं० मोतीलाल नेहरू महोदय और माता स्वरूप रानी थीं। जन्म से पहले इनके पूर्वज दिल्ली नगर के नेहर तट पर रहते थे। इसलिए वह नेहरू उपनाम से प्रसिद्ध हुए। उस समय पण्डित मोती लाल इलाहाबाद के सभी वकीलों में प्रसिद्ध थे। वह आनन्द भवन में रहते थे। बहुत से अंग्रेज लोग भी उस भवन में आने को उत्सुक रहते थे। अनेक बार उन्होंने एक ही अभियोग में लाखों रुपए अर्जित किए। पण्डित जवाहरलाल नेहरू महोदय अपने पिता के अकेले पुत्र थे, इसलिए उन्होंने उनको राजा के पुत्र की तरह पाला था।

जवाहर लाल नेहरू महोदय ने पंद्रह वर्षों तक अपने घर में ही शिक्षा ग्रहण की। इसके बाद वह इंग्लैंड देश में हैरो शिक्षण संख्या में प्रविष्ट हुए। इसके पश्चात् 'ट्रिमिटी केम्ब्रिज' विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण करके वह बी०एस०सी० एम०ए० उपाधि धारण करने वाले हुए। अपने अध्ययन काल में ही उन्होंने अपनी मातृभूमि को स्वाधीन करने की प्रतिज्ञा की। पहले उन्होंने अपने पिता के साथ इलाहाबाद के प्रधान न्यायालय में वकील कार्य करना आरम्भ किया। 1916 शताब्दी में उनका विवाह कमला नाम की कन्या के साथ हुआ। इन्दिरा गाँधी उनकी पुत्री थी। 1918 ई० के वर्ष में उन्होंने भारतीय स्वशासन संस्था का मंत्रिपद का निर्वहन किया। वहाँ पूर्ण निष्ठा के साथ आन्दोलन किया। 1923 शताब्दी में वह कोकोनाडा कांग्रेस अवसर पर प्रथम बार राष्ट्रीय महासभा के प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए। 1929 शताब्दी में वह अखिल भारतीय श्रमिक संघ के राष्ट्रीय महासभा के अध्यक्ष हुए। 1936-37 शताब्दी में उन्होंने सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया। 1938 शताब्दी में वह चीन देश और स्पेन देश का भ्रमण करके स्वदेश लौटे। 1939 शताब्दी में उन्होंने गोरखपुर में कारागार का दण्ड सहा। 1942 शताब्दी में वह मुम्बई में गाँधी आदि नेताओं के साथ निग्रह किए गए। फिर 1945 शताब्दी में वह जेल से मुक्त हुए। उनके जीवन से सम्बन्धी बहुत सी घटनाएँ हैं, हम उन सबका उल्लेख नहीं करेंगे। पण्डित जवाहरलाल नेहरू महोदय विश्व प्रसिद्ध नेता हैं। वह महान् क्रान्तिकारी, गम्भीर विचारक, अध्ययनशील उभरते हुए लेखक, राजनीतिशास्त्र के महान ज्ञाता, अंग्रेजी भाषा के विद्वान् थे। उन्होंने बहुत से ग्रन्थ लिखे; जैसे- मामकी कथा, विश्व इतिहास का प्रकाश, भारत की समस्या, पिता के पत्र पुत्री के लिए, स्खलन संसार इत्यादि। इन महाभाग ने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में बहुत प्रयास किए हमारे देश की स्वतन्त्रता में उनका बड़ा योगदान है। इसलिए पण्डित जवाहरलाल नेहरू महोदय हमेशा याद रखने योग्य आदर्श अनुकरणीय हैं।

1. (क) 1881 तमे नवम्बर मासस्य चतुर्दश दिनांके। (ख) स्वरूपरानी-मोतीलाल च। (ग) बी.एस.सी., एम.ए. (घ) कमलया (ङ) पंडित जवाहरलाल महोदयः विश्वप्रसिद्ध नेता आसीत्। सः महान् क्रांतिकारी, गम्भीरविचारकः, अध्ययनशीलः, उद्भटलेखक, राजनीतिशास्त्रस्य

महत् विशारदः, आंग्लभाषायाञ्च पण्डितः आसीत्। सः वहन् ग्रन्थान् अलिखत्। **2.** (क) नेहरतटे (ख) स्वगृहे (ग) स्वाध्यायकालेव (घ) इन्दिरागान्धि (ङ) 1939 **3.** (क) अतएव वे नेहरू इस उपनाम से प्रसिद्ध हुए। (ख) पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपने पिता की अकेली संतान थे। (ग) वे अखिल भारतीय श्रमिक संघ के राष्ट्रीय महासभा के अध्यक्ष हुए। (घ) पण्डित नेहरू महोदय विश्व प्रसिद्ध नेता थे। (ङ) हमारे देश की स्वतंत्रता में नेहरू जी का महान योग है।

4. (क) तत् + इदानीम् = तदानीम्
(ख) विश्व + इतिहासस्य = विश्वेतिहासस्य
(ग) न्याय + आलये = न्यायालये
(घ) प्रधान + आमात्यः = प्रधानामात्यः (ङ) एकस्मिन्+एव+अभियोगे=एकस्मिन्नेवाभियोगे
(च) उप + अधिकारी = उपाधिकारी।

5. (क) प्रत्यागच्छत्–प्रति + आगच्छत्
(ख) कांग्रेसावसरे–कांग्रेस + अवसरे
(ग) इत्यादयः = इति + आदयः
(घ) स्वाध्याय = स्व + अध्याय
(ङ) विश्वविद्यालये = विश्वविद्या + आलये
(च) कालेव–काल + इव।

एक विंशति पाठः – पञ्चैतानि

1. धनी, ब्राहमण, राजा, नदी और वैद्य ये पाँच जहाँ रहते, वहाँ एक दिन भी नहीं रहना चाहिए।

2. आजीविका भय, लज्जा, चतुरता, त्यागशीलता ये पाँच जहाँ नहीं रहते वहाँ निवास नहीं करना चाहिए।

3. जन्मभूमि माता समान गंगा तथा ईश्वर जाति के बीच प्रतिष्ठा और जकार पाँच दुर्लभ हैं।

4. आयु, कर्म, धन, विद्या तथा मृत्यु ये पाँचों शरीरधारी की गर्भ में ही रची जाती हैं।

5. राजपत्नी, गुरुपत्नी, मित्रपत्नी उसी प्रकार पत्नीमाता (सास) अपनी माता पाँच प्रकार की माताएँ मानी जाती हैं।

1. (क) यस्मिन् स्थाने धनिकः श्रोतियो, राजा, नदी वैद्यः च विद्यते तत्र दिवसमेंक न वसेत्। (ख) जननी, जन्मभूमिः, जाह्नवी, जनार्दनः जातिमध्ये प्रतिष्ठां च इति पञ्च जकाराः दुर्लभाः भवन्ति। (ग) आयुः कर्म, वित्तं, विद्या, निधनं च। (घ) यत्र लोकयात्रा, भयं, लज्जा, दाक्षिण्यं, त्यागशीलता च न विद्यन्ते तत्र स्थाने कदपि न संस्थितं हि मानवाः। (ङ) राजपत्नी, गुरोपत्नी, मित्रपत्नी, पत्नीमाता, स्वमाता इति पञ्चैता मातरः स्मृताः। **2.** (क) तत्र स्थाने दिवसमेंक न वसेत। (ख) जीवस्य निधनसमय गर्भस्थस्थैव निश्चितः जातः। (ग) गुरुपत्नी अपि अस्माकं माता अस्ति। (घ) पञ्चैताः मातराः स्मृताः। (ङ) पञ्चः जकारः दुर्लभः। **3.** (क) पञ्चैतानि मातरः स्मृताः (ख) स वैद्यस्तु (ग) जातिमध्ये प्रतिष्ठाम् अस्ति्। (घ) देहिनः नश्वरः अस्ति। (ङ) वयम् नित्यम् सैर कुर्याम्। **4.** (क) अकरोत् (ख)अवसति (ग) आसीत् (घ) आसन् (ङ) अवसति **5.** (क) चिकित्सक (धनिकः / श्रोत्रियः / **वैद्यः**) (ख) माता (**जननी** / लज्जा / जाह्नवी) (ग) आजीविका (**लोकयात्रा** / वित्तम् / विद्या) (घ) सास (जाह्नवी / गुरुमाता / **पत्नीमाता**) (ङ) गंगा (**जाह्नवी** / जननी / स्वमाता)

संस्कृत श्लोक-7

द्वितीयः पाठः – वसन्त सुषमा

अरे अधिक सुन्दर नयन को प्रिय कुसुमाकर वसन्त आ गया। सुगन्धित शीतल पवन धीरे-धीरे बहती है। विविध प्रकार के फूलों से विभूषित पौधों की पंक्तियाँ वनों और उपवनों की शोभा को अत्यधिक बढ़ा देती हैं। आज किंशुक के फूलों से सजी हुई पृथ्वी लाल साड़ी वाली मूर्ति जैसी वसन्त की आभा है। कमनीय कर्णिका कलियों के खिलने से सुगन्धित सम्पूर्ण वन प्रदेश को नित्य नई शोभा देती है। शाखाओं पर कूजती हुई कोयलों के सुनने में मधुर कूजन से लोग हर्षित होते हैं। पुष्पों पर, लताओं पर, शहद के लालची भौंरे गुञ्जन करके लोगों के मन को प्रसन्न करते हैं। यह ऋतु सभी के हृदय को प्रसन्न करने वाली है। समशीतोष्ण (न ठंडी न गर्म) यह ऋतु सभी मनुष्यों को प्रिय होती है। इसी ऋतु में आम के वृक्षों पर मञ्जरी दूर तक फैलकर लोगों को मस्त कर देती है। नए आम फल के आगमन की सूचना देता है। चारों तरफ भरे हुए खेतों को देखकर किसान खुश होते हैं। सरोवरों में स्वच्छ जल, श्वेत कमल, लाल कमल, नीले कमल, मकरन्द से पूरित अन्य फूल अधिक खिलते हैं। स्वच्छ जल वाले सरिता तट, झरने और

कूल पर पक्षी व पशु स्वच्छन्द घूमते हैं। ऐसी सुन्दरता वन में, सलिल में, स्थल पर और सभी जगह विराजमान होती है। यह ऋतु सभी कवियों को प्रिय होती है। इसकी रमणीयता और सुन्दर स्वरूप तो विविध मनोहर और अपनी अनोखी सुषमा के लिए संसार में 'ऋतुराज' नाम से प्रसिद्ध है।

1. (क) विभूषिता: पाद पंक्तय: वनानाम् उपवनानां च सुषमाम् अतितरां वर्धयन्ति। (ख) वनप्रदेश: रमणीय भवति। (ग) सरिता तटेषु निर्झराणां कूलेषु च स्वछन्दं विहरति मृगा: विहगा: च। (घ) 'ऋतुराज' (ङ) वसन्तोत्सव: **2.** (क) नयनसुभगस्य (ख) स्थलेषु (ग) कवीनां (घ) ऋतुराज **3.** (क) वसन्त ऋतुस्य शोभा मनोहारिणी अस्ति। (ख) एव ऋतौ आम्रस्य मञ्जरीणां जनात् मदयति। (ग) एव ऋतौ कृषका: क्षेत्राणि विलोक्य मोदन्ते। (घ) अयम् ऋतु: सर्वेषामपि कवीनां परमप्रिय:। (ङ) अयम ऋतौ 'ऋतुराज' इति नाम ख्यातोऽपि। **4.** स्वयं कीजिए। **5.** शीत + उष्ण, स: + अयं, ख्यात: + अस्ति, सर्वत्र + एव, एवम + अस्य, सर्वेषाम् + अपि वासन्त + इव

तृतीय: पाठ: – विधातुर्विवेक:

एक निर्जम वन में तीन सखियाँ थीं- एक हंसिनी, एक मुर्गी और एक बत्तख रहती थी। तीनों अपने आप को बुद्धिमान मानती थी। बत्तख कहती- ''शरीर तो मेरा सुन्दर है लेकिन अपने पैरों को देखकर मुझे विधाता की बुद्धि पर दया आती है।'' मुर्गी बोली- ''मैं भी विधाता की बुद्धिमता पर हँसती हूँ, रूप तो मुझे अच्छा दिया है परन्तु वाणी कूकडूँ-कू कर्कश है। जब कोई भी गीत गाने को को कहता है तब फटे बाँस की तरह मेरी आवाज निकलती है।'' अन्त में हंसिनी बोली- ''बहनों! आपने अपना-अपना दुख कह दिया मेरे दुख कौन कहे। मेरी देह में घने बाल पैदा करके विधाता ने क्या बुद्धिमता की है? जब लोग मुझे पकड़ते हैं तब मेरे बालों को भी उखाड़ देते हैं इस प्रकार तीनों सखियाँ विश्वविधाता के ऊपर दोष डालने लगी। एक बार विधाता विश्व भ्रमण के लिए निकले। अपनी निंदा सुनकर विधाता हँसकर बोले- कल प्रात: तुम सब पूर्व दिशा की तरफ मुख करके, आँख बन्द करके बैठकर अपनी इच्छा प्रकट करना सबकी मनोरथ पूर्ण अवश्य होगी। ब्राहमण के वचन सुनकर सब जोर से हँसी। जैसे किसी ने उस दिन इच्छा पूरी कर दी हो। सुबह हुई सभी ने वैसा ही किया। सभी की इच्छा पूर्ण हुई। हंसिनी बालरहित अपने शरीर को देख, मुर्गी मधुरवाणी सुनकर तथा बत्तख अपने शरीर को देखकर बहुत खुश हो गई। कुछ समय पश्चात् हंसिनी छाया में बैठकर भी सर्दी से चिल्लाती है वह अपनी मूर्खता पर बहुत सोचती है। इधर मुर्गी अपनी संतान को बुलाती है- ट्रि ट्रि टुं ट न न न चीं कहकर। पहले न सुनी हुई ध्वनि को सुनकर बच्चे दूर भाग गए। उधर बत्तख स्नान के लिए सरोवर में प्रवेश करती है किन्तु तैर नहीं पाती। तीनों सखियों ने बहुत परेशान होकर पुन: पूर्व दिशा में मुख करके विधाता से प्रार्थना की। विधाता की कृपा से पहले जैसी हो गईं। भाग्य से ही उनकी इच्छा पूर्ति हो गई। तीनों सखियाँ पुन: अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करने लगीं।

1. (क) विजने तिस्र सख्य: अवसन्-एका कुक्कुटी, एका वर्तिकी, एका हंसिनी च।(ख) कुक्कुटी अवदत्- ''अहमपि विधातुर्बुद्धिमत्तां हसामि, रूपं तु मदीयं मनोहरं परं वाणि 'कुकडूँ-कू' कर्कशा विद्यते। यदा कोऽपि गीत-गानाय कथयति तदा भिन्न वंशपत्रवत् मर्मरध्वनिं निस्सरति''। (ग) आत्मनिन्दां श्रुत्वा विधाता प्राह-''श्व: प्रात: यूयं पूर्वस्या दिशि मुखं कृत्वा, नेत्रे निमील्य तिष्ठत स्वेच्छाञ्च प्रकटयत, सर्वासां मनोरथानां पूर्ति: भविष्यति।'' (घ) प्रभाते संजाते हंसिनी केशविरहितं स्वशरीरं वीक्ष्य, कुक्कुटी मधुरावाणि श्रुत्वा तथा च वर्तकी स्वशरीरं वीक्ष्य भृशं प्रहृष्टा: अभवन्। (ङ) तिस्र: सख्यो भृशं प्रतप्ता: पुन: पूर्वस्या दिशि मुखं कृत्वा विधातारं प्रार्थनाम् अकुर्वन्। **2.** (क) स्वपादयोर्दशां (ख) 'कूक डूँ-कू' (ग) विश्वविधातारं (घ) सर्वास्तथैव (ङ) स्नानार्थं **3.** (क) निर्जन जंगल में एक बतख, एक हंसनी और एक मुर्गी रहती थीं। (ख) मेरे शरीर पर घने बाल पैदा करके विधाता ने क्या बुद्धिमानी की? (ग) एक बार विधाता विश्व भ्रमण के लिए निकले। (घ) उन सबके मनोरथ पूर्ण हुए। (ङ) ब्रह्मा के वचन सुनकर सभी खुश हुईं।

4. (क) एवात्मानम् (ख) सर्वास्ता: (ग) कोऽपि (घ) कथञ्चिद् (ङ) विधातुर्का (च) स्वेच्छाञ्च

5. (क) स्वपादयो: + दशाम्
(ख) भाग्य + एव (ग) तिस्र: + अपि
(घ) प्रति + उदासीन + अस्मि
(ङ) काल + अनन्तरम्
(च) नि: + अगच्छत् **6.** (क) तव वाणी कर्कशा नास्ति। (ख) मदीयस्य वृथा श्रूयताम्। (ग) पुस्तकं वीक्ष्य रमा क्रीत:। (घ) सर्वास्ता फलानि प्राप्ता:। (ङ) मीरा कथयति।

चतुर्थ: पाठ: – हास्य-क्षणानि

1. कान्ता- शशि, बताओ गधा मिठाई खाकर क्या सोचता होगा?
शशि- कितना अच्छा होता यदि मिठाई घास की होती।

2. भिक्षुक- मुझे भिक्षा दो।
मार्गगामी- सौ रुपए का नोट मेरे पास है, क्या तुम छुट्टा करोगे?
भिक्षुक- मेरे पास छुट्टे हैं।
मार्गगामी- तो पहले उनको प्रयोग करो।

3. रवि- मुझे फल अच्छे लगते हैं। अनेक बार तो मैं छिलके सहित खा जाता हूँ।
विनोद- अच्छा! तो नारियल छिलके सहित खाओं तब मैं जानूँ।

4. विज्ञान आचार्य- छात्रों! सभी ग्रह अपनी-अपनी कक्षा में (परिधि) घूमते हैं।
छात्र- श्रीमान! जब वे कक्षा में घूमते हैं तब वे कब पढ़ते हैं?

5. डॉक्टर- तुम सुबह, दोपहर और शाम के समय घूमने जाओ। तभी स्वस्थ होगें।
रोगी- तो बैठो थोड़ी देर के लिए मेरे तीनों चौपहिया वाहन किसी प्रयोग (कार्य) के लिए बाहर गए हैं।

6. कंजूस सेठ (सेवक को देखकर) इस महँगाई में रोटी के ऊपर घी क्यों लगाते हो?
सेवक- ठीक है, यह मेरी रोटी है। मैंने भूल से तुम्हें दे दी।

7. ग्राहक- केले के कितने मूल्य हैं?
दुकानदार- दस रुपए के बारह हैं।
ग्राहक- तब मुझे कितने मूल्य कम करोगे?
दुकानदार- ठीक है, दस रुपए के आठ केले ले लीजिए।

8. थानाअध्यक्ष- (अपराधी को देखकर) आज तुम फाँसी पर चढ़ जाओगे। कहो तुम्हारी अन्तिम इच्छा क्या है?
अपराधी- महोदय तरबूज की।
थानाध्यक्ष- लेकिन इस समय तो तरबूज पैदा नहीं होते फिर......।
अपराधी- मैं इंतजार करूँगा।

9. विमल- क्या तुम जानते हो कि किस रानी के पास बड़ा मुकुट था।
उत्कर्ष- जानता हूँ।
विमल- तो बताओ।
उत्कर्ष- वह रानी जिसका सिर बड़ा था।

1. (क) कान्ताया प्रश्नस्य शशि उत्तरति– कति श्लाघनीय: भवेत् यदि भिष्टालं तृणानि भवेत्। (ख) मार्गगामी समीपे शतरूप्यकाणि सन्ति? (ग) विनोद: रविं प्रति कथयति– शोभनं। तर्हि गृहाण नारिकेलम् आवरणं सहितं खाद। तदहं जाने। (घ) सेवक: उत्तरति– अस्तु। इयं मय पोलिका। अहं विस्मृतेन त्वया दद्म:। (ङ) अपराधि: इच्छति कालिन्दी फलम्? (च) यस्या राज्ञी मुण्ड: महत्तम: तस्या: मुकुट: महत्तम: भवति? **2.** (क) फलानि (ख) करिष्यामि (ग) दम: (घ) मूल्यम् (ङ) कस्या राज्ञी समीपे महत्तम मुकुट: आसीत् (च) अल्पकालेनैव, चतुष्पाद वाहना:। **3.** (क) गर्दय: मिष्ठान्नस्य स्मरणं न करिष्यति। (ख) मह्यं फलं देहि। (ग) तर्हि त्वं नारिकेल गृहाण। (घ) मम समीपे त्रयो-चतुष्पाद वाहना: सन्ति। (ङ) कालिन्दीम् आनय। **4.** (क) अनेक बार तो मैं छिलके सहित खाता हूँ। (ख) तब पहले उन्हें प्रयोग कीजिए। (ग) दस रुपए में आठ केले लो। (घ) हाँ, यह मेरी रोटी है। मैंने भूल से तुम्हें दे दी। (ङ) मैं प्रतीक्षा करूँगा। (च) वह रानी जिसका सिर बड़ा था। **5.** (क) आवरणम् (ख) पथिक: (ग) चिकित्सक: (घ) चतुष्पादवाहनम् (ङ) प्रयुज्यताम् (च) मूल्यम्

पंचम: पाठ: – मूर्खलक्षणम्

1. जो हाथ में आए धन को छोड़कर अनिश्चित को पाने की कोशिश करता है। उसका हाथ में आया धन नष्ट हो जाता है और अनिश्चित नष्ट ही होता है।

2. मूर्ख होना कष्टकारी है। यौवन होना

कष्टकारी है। दूसरे के घर में रहना कष्टों से बढ़कर कष्ट है।

3. मूर्ख को त्याग देना उचित है वह साक्षात् दो पैरों वाला पशु है वचन रूपी बाण से अदृश्य काँटे की तरह चुभते हैं।

4. मूर्ख के दीघार्यु होने से उसका मर जाना ज्यादा अच्छा है, मरने पर थोड़ा दुख होता है जीवित रहने पर जीवन भर कष्ट देता है।

5. मूर्ख विद्वान से द्वेष करता है और धनहीन धनवान से, कुलटा स्त्रियाँ कुलीनस्त्रियों से द्वेष करती हैं और विधवा सौभाग्यवती स्त्रियों से।

6. साँप, राजा, व्याघ्र, सूअर, बालक, दूसरे का कुत्ता और मूर्ख ये सात सोते हुए अच्छे लगते हैं।

7. जहाँ स्वयं की बुद्धि न हो शास्त्र उसका क्या करेंगे। नेत्रों से हीन शीशे का क्या करेगा।

1. (क) यः ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवं परिवेषते ते मूर्खाः भवन्ति? (ख) कष्टात् कष्टतरं परगेहेनिवासनम् अस्ति। (ग) मूर्खः चिरायु च जातकस्य मृतो वरः जनः? (घ) मूर्खाणां पण्डितः द्वेषकरः भवति? (ङ) यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं किमपि न करोति। **2.** (क) यौवनम्। कष्टतरं, परगेहेनिवासनम्।। (ख) भिन्नत्ति, अदृष्टः (ग) मूर्खश्चिरायुर्जातोऽपि। यावज्जीवं।। (घ) पण्डितः, अधमानां। सुभगानां।। (ङ) शार्दूलं। सुप्तान्न।। **3.** स्वयं लिखिए।

4. (क) (i) नष्टम् + एव (ii) च + एव
(iii) मूर्खः + तु (iv) मूर्खः + चिरायुः
(v) च + अल्पदुःखाय (vi) सुप्तात् + न
(ख) (i) आयुर्जातः (ii) तस्माज्जातः
(iii) जातोऽपि (iv) चाल्प (v) जातामृतम्
(vi) यावज्जीवनम्

5. (क) मूलशब्द–ध्रुव, लिङ्ग– नपुंसकलिंग, विभक्ति–प्रथमा/द्वितीया
(ख) मूलशब्द–कष्ट, लिङ्ग–नपुंसकलिंग, विभक्ति–पञ्चमी (ग) मूलशब्द–वाक्यशल्य, लिङ्ग–नपुंसकलिंग, विभक्ति–तृतीया
(घ) मूलशब्द–मूर्ख, लिङ्ग–पुल्लिग, विभक्ति–षष्ठी (ङ) मूलशब्द–शार्दूल, लिङ्ग–पुल्लिग, विभक्ति–द्वितीया
(च) मूलशब्द–तत्, लिङ्ग–पुल्लिग, विभक्ति –षष्ठी। **6.** (क) खलु विघ्नभयेन नीचै कार्य न कुर्वन्ति। (ख) यथा राजा तथा प्रजा। (ग) यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्। (घ) यथा राजा तथा प्रजा। (ङ) ब्राह्मणं परितः छात्राः सन्ति। **7.** (क) मूर्खस्तु परिहर्त्तव्यम् कारणय, सः द्विपदः पशु वर्तते। (ख) मूर्खचिरायुजातेन तस्य मरण श्रेष्ठम्। (ग) मूर्खः पण्डितात् देषं करोति। (घ) मूर्खाय शास्त्रज्ञानं न दातुं शक्यते। (ङ) नेत्राभ्यां विहीनस्य दर्पण-दर्शनं वृथा।

षष्ठः पाठः – मृगपतिस्तत्सुतश्च

एक बार एक शेर अपने बड़े पुत्र से बोला– पुत्र! कोई नहीं जानता कि मैं कब मरूँगा। पका हुआ आम कब भूमि पर गिरेगा कोई नहीं जानता। मेरी मृत्यु के बाद तुम ही इस वन का शासन करोगे यह सोचकर पहले ही योग्य हो जाओ। इस राजदुर्ग में तुम ने जन्म लिया है और इसी में बड़े हुए हो। दुर्ग से बाहर क्या है तुम नहीं जानते। इसलिए आज से बाहर निकलकर देखो प्रजा की समस्या लोकमर्यादा और जनभावना को जानकर लोक व्यवहार का ज्ञान प्राप्त करो। वृद्ध पिता के वचन सुनकर सिंह का बच्चा प्रसन्न हुआ राजग्रह के नियन्त्रण से अपने को निकालने को लालायित हो उठा। दुर्भाग्य से वह राजा की बात का अर्थ न पहचान सका। राजभवन से चलकर क्या करूँ, क्या न करूँ इस प्रकार भ्रमित हो गया। वह बुद्धिमान लोगों की संगति न पहचान सका और मूर्खों की संगति में अनुभूति करने लगा। राजकुल के सम्मन दारक का साथ पाकर गधा प्रसन्न हो गया। सिंह का बच्चा भी इसके साथ सुख से अपना समय व्यतीत करने लगा। अन्त में सिंह शिशु सारे कार्य-कलाप गधे की तरह करने लगा। एक बार घूमते हुए वह सूअर के निवास आ गया। सभी सूअर की तरह चेष्टाएँ करने लगा। एक वर्ष के बाद वह पिता के पास वापस आया। युवराज के सारे कार्य व्यवहार को सुनकर चेष्टा से उसे देखकर वह सोचने लगा। पिता का अभिप्राय जानकर युवराज बोला– आप व्यर्थ ही सोच में पड़े हैं। मैं सुयोग्य राजा बनूँगा और कुशलता से राज्य कार्य संचालन करूँगा। मैं अत्यन्त बुद्धिमान चतुर और धूर्त हो गया हूँ। अपने पुत्र की स्वयं द्वारा की गई प्रशंसा सुनकर शेर सन्तुष्ट होकर बोला– ये गुण तुमने कहाँ से सीखे? युवराज ने कहा– ‘‘गधे और सूअर के संसर्ग में एक वर्ष रहा

हूँ। उसको सुनकर शेर अत्यन्त क्रोधित होकर बोला– हे मूर्ख! तुम मेरे कहे अनुसार बुद्धिमान लोगों में नहीं गए। तुम मेरे राज्य के उत्तराधिकारी नहीं बनोगे, जाओ और अपने से नीचे लोगों के साथ आनन्द का अनुभव करके समय बिताओ। अपने पिता को दुखी देखकर आत्मग्लानि से संतप्त यह युवराज पुनः सज्जनों के पास गया। बुद्धिमान लोगों ने युवराज को सन्तुष्ट नहीं किया। गुणी जनों ने उसकी बुराई की। बुद्धिमता से वह उल्लू से मिला। उल्लू ने शिक्षा दी ''विपत्ति में धैर्य धारण करो पुत्र! शक्ति रहित होकर भी परिश्रम से अभ्यास करो। मधुमक्खियों की दिनचर्या देखकर युवराज आश्चर्य चकित हो गया– अरे! इनकी दिन-रात परोपकार की प्रवृत्ति है। इससे सन्तुष्ट होकर वह पिता के पास गया। शेर ने अपने पुत्र का व्यवहार परिवर्तन छोटी-सी बात से देख लिया। उनकी संगति में वह बहुत समय तक रहा। एक बार शेर ने युवराज को अपने पास बुलाकर कहा, ''आओ पुत्र! आओ मेरे जीवन का अन्तिम समय अत्यन्त निकट है आज मुझे विश्वास है कि तुम प्रजा के लिए सुयोग्य, कुशल और न्यायप्रिय राजा बनोगे। राजसुख का अनुभव करते हुए सज्जन बनो, यह कहकर शेर मर गया।''

1. (क) मृगपतिः स्वज्येष्ठपुत्रम् अवादीत्– ''तात! कोऽपि जानाति यदहं कदा मरिष्यामि? पक्वः चाम्रः कदा भुवि चापतिष्यति को न जानाति? मन्मृत्युनन्तरं त्वमेव काननस्याऽस्य शासनं करिष्यति इति विचार्य पूर्वमेव सुयोग्यः भवः अस्मिन् राजदुर्गे तव जनिर्जाता चास्मिन्नेव युवा अभवत्। दुर्गात् बहिः किमस्ति न त्वं जानासि। अतः चास्मात् बहिः निर्गत्य अवलोक्य प्रजानां समस्या लोकमर्यादा जनभावनाश्च। ज्ञानम् अर्जय लोकव्यवहारस्य। (ख) वृद्धपितुः वचनं श्रुत्वा सिंहशिशुः प्रसन्नः अभवत् यत् राज्यनियंत्रणात् स्वातमानं उद्धारं भविष्यति। (ग) प्रथमे सिंहशिशुः गर्दभसंगतौ गर्दभमण्डले गतः। (घ) उलूकः सिंहशिशुम् अशिक्षत्– ''विपदि धैर्य धारय पुत्रक! शक्ति रहिते सत्यमपि परिश्रमस्याभ्यासं कुरु।'' (ङ) मृगपतिः मरणासन्नसमये स्वसुतं योग्यं कृत्वा पदासीनं च कृत्वा मृतः।

2. (क) स्वात्मानं (ख) निगत्य, लोकमर्यादा (ग) राजकार्यस्य, संचालनं (घ) शूकराणञ्च (ङ) सन्निकटः। **3.** (क) बूढ़े पिता के वचन सुनकर सिंह का बच्चा प्रसन्न हुआ। (ख) उसने गधों की संगति की और आनंद प्राप्त किया। (ग) एक वर्ष के बाद वह पिता के पास लौटा। (घ) गुणी लोग उसकी भर्त्सना ही करते हैं। (ङ) शक्ति रहित (होने पर भी) सच्चाई से परिश्रम करो। **4.** (क) सः मेधावि जनं न ज्ञातवान्। (ख) इयं लोकव्यवहारस्य कथा अस्ति। (ग) सा मूर्खाणां संसदि जीवन व्यतीतं करोति। (घ) मम मृत्युः सन्निकटः अस्ति। (ङ) राजा मृत्युञ्गतः।

सप्तमः पाठः – आधारोऽधिकरणम्

1. दान में, तपस्या में, वीरता में, विज्ञान में, विनम्रता में, नीति की बात कहने में अभिमान नहीं करना चाहिए। इस धरती पर बहुत से रत्न हैं।

2. पीछे से कार्य बिगाड़ने वाले, सामने प्रिय बोलने वाले मित्र को त्याग देना चाहिए। वह ऐसा विष का घड़ा है जिसके मुख पर अमृत लगा है।

3. पर्वत, पर्वत पर माणिक्य नहीं होते, प्रत्येक हाथी के गज में मोती नहीं मिलता। सज्जन सब जगह नहीं मिलते। चन्दन प्रत्येक वन में नहीं होता।

4. माता और पिता शत्रु हो जाते हैं जो बच्चे नहीं पढ़ते। सभा के बीच में हंस के बीच बगुला नहीं शोभायमान होता।

5. विदेश में रहने के समय विद्या मित्र है, घर में पत्नी मित्र समान है। रोग में औषधि मित्र है मृत्यु के समय धर्म मित्र है।

6. अत्यधिक बारिश, समुद्र और अत्यधिक भोजन व्यर्थ है धनी को दान देना व्यर्थ है और दिन में दीप जलाना व्यर्थ है।

7. धन-धान्य के प्रयोग में, विद्या संग्रह के समय में, आहार-विहार में लज्जा को त्यागने वाला सुखी रहता है।

1. (क) दाने तपसि शौर्ये विज्ञाने विनये नये वा विस्मयो न कर्त्तव्यम्। (ख) यः मित्रः परोक्षेकार्य हन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनं भवेत् तं मित्र वर्जयेत्। (ग) वने वने चन्दनं न मिलति। (घ) व्याधितस्य औषधिः मित्रमस्ति। (ङ) तृप्तेषु भोजनं वृथा। (च) आहारे व्यवहारे च

संकोचं न कर्त्तव्यम्। **2.** (क) परोक्ष कार्यहंतारं मित्रं न भवेत्। (ख) शैले-शैले न मणिक्यं भवति। (ग) आहारे व्यवहारे च त्यक्त लज्जा सुखी भवेत्। (घ) गृहेषु भार्या मित्रम्। (ङ) सः हंसमध्ये वको यथा भवति। (च) धनिकेषु दानं वृथा। **3.** (क) प्रत्यक्षे (ख) धनाढ्येषु (ग) आहारे, व्यवहारे (घ) तृप्तेषु (ङ) परोक्षे। **4.** (क) परोक्ष में कार्य बिगाड़े तथा प्रत्यक्ष में प्रिय बोले ऐसे मित्र का त्याग करना चाहिए; जैसे–दूध से भरा घड़ा, जिसकी गर्दन भाग में विष हो, को त्याग दिया जाता है। (ख) वे माँ तथा पिता (बालक के) शत्रु हैं जो बच्चों को नहीं पढ़ाते। ऐसे (लोग) उसी प्रकार शोभा को प्राप्त नहीं होते, जिस प्रकार हंसों के बीच बगुला। (ग) प्रवास (विदेश जाने पर) में विद्या मित्र है। घर में पत्नी मित्र है। रोग में औषधि मित्र है तथा धर्म मृतक का मित्र है। (घ) समुद्र में वर्षा बेकार है। तृप्त व्यक्ति को भोजन कराना बेकार है। धनी व्यक्तियों को दान देना व्यर्थ है। सूर्य (दिन) को दीपक दिखाना व्यर्थ है। (ङ) धन-धान्य के प्रयोग में और विद्या अर्जित करने में (उत्तम) भोजन करने में तथा व्यवहारशीलता में लज्जा त्याग करके सुखी होना चाहिए।
5. (क) विनये (ख) प्रत्यक्षानाम्
(ग) माणिक्याभ्याम् (घ) चन्दनाय
(ङ) भोजनयोः (च) समुद्रे **6.** (क) प्रयोगेषु संस्कृत शब्दावली श्रेष्ठा अस्ति। (ख) कुमित्राः प्रत्यक्षे प्रिय वदन्ति। (ग) तस्मिन सभामध्ये विवादः जातः। (घ) समुद्रेषु अष्टभुजजीवः वसन्ति। (ङ) परोक्षे वार्तालापं न कुर्यात्।

अष्टमः पाठः – ऋणात् मुक्तिः

एक बार किसी नगर में एक धनी रहता था। दूर से लोग आकर उसे ऋण लेते थे। जब उनके पास धन आ जाता था, तब वे धनिक का धन दे देते थे। धनिक धन देने के कारण दूर तक प्रसिद्ध था। एक बार दो चतुर तथा ठग उसके पास आए। उन दोनों ने सेठ से पाँच सौ रुपए ऋण के रूप में माँगे। वृद्ध सेठ ने उनका घर संकेत आदि पूछा और बोला– ''मैं ऋण रूप में धन तुम्हें दूँगा। तुम दोनों कब धन वापस करोगे?'' उनमें से एक बंशीधर नाम का बोला– ''जितनी जल्दी हो सके।'' सेठ ने पुनः उसी प्रश्न को दोहराया दूसरा मुरलीधर बोला– ''इसी जन्म में वंशीधर मुरलीलाल सोचने लगे सेठ हमें धन नहीं देगा।'' किन्तु सेठ ने अपने कोषाधिकारी से कहा– ''ये इसी जन्म में धन वापस करेंगे। यह लिखवाकर इन्हें धन दे दो'' वे दोनों हस्ताक्षर कराके धन लेकर गाँव चल दिए। रास्ते में सेठ की मूर्खता के प्रति हसँते हुए वे दोनों निश्चिन्त हो गए। मार्ग में अंधकार था। कृष्णपक्ष के अन्धकार में जंगल के रास्ते से नहीं जा सकते। वे दोनों किसी किसान के घर जाकर वहीं अपना कम्बल फैलाकर सो गए। पास में ही किसान के बैल बँधे थे। आश्चर्यचकित बंशीधर चिल्लाकर बोल रहे थे। क्योंकि वे दोनों बैल मनुष्यों के समान बोल रहे थे। उसने मुरलीलाल को उठाकर कहा– ''देखो बैल मनुष्य की तरह बोल रहे हैं।'' मुरलीलाल दोनों के संवाद सुनकर चकित हो गया। एक बैल कह रहा था– ''यह मेरी अन्तिम रात्रि होगी क्योंकि मैंने पिछले जन्म में इस किसान से दौ सौ रूपए ऋण लिया था उस जन्म में उन रुपयों को उसे देने में मैं असमर्थ रहा। इस जन्म में परिश्रम करके मैंने दौ सौ रुपए दे दिए। कल मेरी मृत्यु हो जाएगी।'' दूसरा बैल बोला– ''यह संयोग ही है। कि कल ही मेरी मृत्यु भी होगी मैंने भी पिछले जन्म में पाँच सौ रुपए इस किसान से ऋण के रूप में लिए थे। प्रातः ही कोई जन पाँच सौ रुपये में मुझे खरीदेगा। उसके घर जाकर कल ही मेरी मृत्यु होगी।'' दूसरा बैल बोला– ''फिर तुम्हारा बैल के रूप में जन्म होगा'' प्रथम बैल ने कहा– ''नहीं पहले इसने मुझसे पाँच सौ रुपए लिए थे'' दूसरा बैल ने कहा– ''अरे! हम दोनों को ऋण उतारने में कितने कष्ट का अनुभव करना पड़ा'' बैलों की बातें सुनकर आश्चर्यचकित हुए दोनों रात भर नींद न ले सके। सुबह हुई। उठकर उन दोनों ने देखा बैल घास खाने बैठे हैं। उन दोनों ने सोचा– हमने स्वप्न में देखा होगा। क्या बैल भी बोलते हैं। जैसे ही वे दोनों कपड़े पहनकर जाने के लिए तैयार हो तब तक उन दोनों ने देखा एक बैल अचानक पृथ्वी पर गिर कर मर गया। घर का मालिक, किसान बाहर

निकला, परन्तु तब तक बैल मर गया था। किसान विलाप करने लगा। तब तक एक अन्य पुरुष आ गया। वह किसान से बोला- यह बैल कितने का है? पाँच सौ रुपए में उसने बैल को बेच दिया। बैल को लेकर जैसे ही वह रास्ते पर चला तभी उस बैल की भी मृत्यु हो गई। भय से डरे हुए वे दोनों रास्ते से ही सेठ के पास वापस आ गए। जिससे दूसरे जन्म में कष्ट न हो। उन दोनों ने प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया था।

1. (क) द्वौ वञ्चकौ धनिकस्य समीपं गत्वा पंचाशत् रूप्यकाणि ऋणरूपेण अयाचताम्। (ख) द्वौ वञ्चकौ प्रति श्रेष्ठी अपृच्छत् अवोचयत् च–''ऋणरूपेणाहं धनं तुदास्यामि युवां कदा धन प्रत्यावर्तयिष्यथ:?'' (ग) वञ्चकौ घनांधकारं प्राप्य कश्चित् कृषकस्य गृहे प्रसुप्तौ। (घ) वृषभौ मनुष्यवत् संवदत? (ङ) प्रभाते वञ्चकौ पश्यत:–तास्यां वृषभो एक: सहसा पृथिव्याम अपतत् मृत: च। गृहपति: कृषको गृहात् निर्गत: परं तावत् स: वृषभ मृत:। पुन: च तदैव अन्य पुरुष: समागत:। स: कृषकं प्रति उवाच–अस्य कियन्मूल्यं? पञ्चाशतरूप्यकाणि स:क्रीत:। मार्गेद्वितीय वृषभ: अपि मृत:। **2.** (क) पञ्चाशत् (ख) विपिनमार्गेण (ग) संवादं (घ) पूर्वस्मिन्ननेन (ङ) ग्रहपति:। **3.** (क) स: श्रेष्ठिन: पञ्चाशत्रूप्यकाणि ऋणरूपेण अयाचत्। (ख) तेषां हस्ताक्षरे गृहाण धनञ्च दीयताम्। (ग) इयं अस्माकम् अन्तिमरात्रि: अस्ति। (घ) श्व: मम मृत्यु भविष्यति। (ङ) कृषक: विलापं कृत: **4.** (क) अस्या शटिकाया कियन्मूल्यम्? (ख) त्वं वस्त्राणि परिधारय गच्छ। (ग) तं संवादं श्रुत्वा मोहन: अक्रुध्यत्। (घ) रात्रौ विपिनमार्गेण मा गच्छ। (ङ) ते सर्वे समागत्य अवदन्। **5.** (क) धनम् + आगच्छत् (ख) तेषु + एको
(ग) गृहसंकेत + आदिकम्
(घ) यत् + श्रेष्ठी (ङ) आश्चर्यान् + इतौ
(च) मृत्यु: + भविता
6. (क) विभक्ति–पञ्चमी, वचन–एकवचन
(ख) विभक्ति–सप्तमी, वचन–एकवचन
(ग) विभक्ति–तृतीया, वचन–एकवचन
(घ) विभक्ति–चतुर्थी, वचन–एकवचन
(ङ) विभक्ति–प्रथम/द्वितीया, वचन–द्विवचन
(च) विभक्ति–सप्तमी, वचन–एकवचन
(छ) विभक्ति–प्रथम/द्वितीया, वचन–बहुवचन
(ज) विभक्ति–द्वितीया, वचन–एकवचन

नवम: पाठः – सन्मित्रलक्षणम्

1. नौकरों को काम में लगाने पर, बन्धुओं को दुख आने पर, मित्र को आपत्तिकाल में और पत्नी को धन के नाश होने पर जाना जाता है।
2. रोगी होने पर, दुख पड़ने पर, अकाल या शत्रु संकट होने पर, राजद्वार पर और श्मशान घाट में जो साथ होता है वह बन्धु है।
3. वे पुत्र हैं। जो पिता के भक्त हैं वह पिता है। जो भरण-पोषण करने वाला है, वह मित्र है जिस पर विश्वास है। वह पत्नी है जो सुख की अनुभूति देती है।
4. पीठ पीछे कार्य को नष्ट करने वाला सामने प्रिय बोलने वाला ऐसे मित्र को छोड़ देना चाहिए। वह विष से भरा घड़ा है जिसके मुँह पर अमृत है।
5. खोटे मित्र पर विश्वास नहीं करना चाहिए कभी क्रोधित मित्र भी सारे रहस्य खोल देता है।
6. कन्या को अच्छे कुल (वंश) से जोड़ना चाहिए। पुत्र को विद्या से जोड़ना चाहिए। शत्रु को व्यसन से और मित्र को धर्म से जोड़ना चाहिए।
7. पाप से हटाता है। हित के कार्यों में लगता है, छिपाने योग्य बात छिपाता है गुणों को प्रकट करता है। आपत्ति आने पर साथ नहीं छोड़ता।

1. (क) चाडडपत्तिकालेषु (ख) आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे श्मशाने य: तिष्ठति स: बान्धव: भवति। (ग) य: पुत्र: पितृर्भक्ता: भवति स: श्रेष्ठ: भवति। (घ) न विश्वसेत् कुमित्रे च मित्रे चापि विश्वसेत् कदापि कुमित्र मित्रं भवेत् स: सर्वं गुह्यं प्रकाशयेत्। (ङ) य: पापात् निवारयति, योजयते हिताय, य: गुह्यं निगूहति गुणान् च प्रकटीकरोति आपातकाले गतं च ददाति काले च जहाति स: एव सन्मित्र: भवति। **2.** (क) बान्धवान्। विभवक्षये। (ख) यस्तु। विश्वास:।। (ग) कार्यहन्तारं। मित्रं, पयोमुखम्।। (घ) योजयेत् कन्यां। योजयेच्छत्रु।। (ङ) पापान्निवारयति, निगूहति। सन्मित्रलक्षणमिदं।। **3. भावार्थ–द्वितीय श्लोक** –बीमारी धन प्राप्ति और शत्रु आदि अच्छे-बुरे

समय में साथ न छोड़ने वाला ही सच्चा बन्धु होता है। क्योंकि वह सुदिन तथा दुर्दिन में साथ नहीं छोड़ता। अच्छे मित्र के ये लक्षण सब लोग बताते हैं।

भवार्थ–चतुर्थ श्लोक–विषयुक्त दूध वाले घड़े को जिस प्रकार त्याग देना उचित है। उसी प्रकार कुमित्र को; जो परोक्ष में कार्य बिगाड़े तथा सामने आने पर प्रिय बोले, को छोड़ देना चाहिए। **4.** (क) व्यसन + आगमे
(ख) यः + तिष्ठति (ग) तम् + मित्रम्
(घ) योजयेत् + शत्रुम् (ङ) पितृः + भक्ता
(च) पापात् + निवारयति

5. (क) विभक्ति–पञ्चमी, वचन–एकवचन
(ख) विभक्ति– सप्तमी, वचन–एकवचन
(ग) विभक्ति–द्वितीया, वचन–एकवचन
(घ) विभक्ति–सप्तमी, वचन–बहुवचन
(ङ) विभक्ति–पञ्चमी, वचन–एकवचन
(च) विभक्ति–द्वितीया, वचन–बहुवचन

6. (क) यः पठति सः तज्ञः भवति। (ख) यत्र तत्र सर्वत्र एको ईश्वरः। (ग) यः पापात् वारयति तादृशं मित्रं वर्जयेत् (घ) कदाचित् एकः नृपः वसति स्म। (ङ) अन्ये चापि तव शंका? **7.** (क) आतुरे व्यसने प्राप्ते–दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे। (ख) तन्मित्रं यत्र विश्वासः–सा भार्या यत्र निवृत्ति। (ग) ते पुत्राः ये पितृभक्ताः–सः पिता यस्तु पोषकः। (घ) न विश्वसेत् कुमित्रे च–चापि न विश्वसेत्। (ङ) सुकुले योज्येत्कन्यां–पुत्रं विद्यासु योजयेत्।

दशमः पाठः – प्रथमः अश्वेत-राष्ट्रपतिः

यह अमेरिका के नए चुने गए महाभाग राष्ट्रपति बराक ओबामा हैं। इन महाभाग का जन्म उन्नीस सौ इकसठवें वर्ष में होनोलूलू नामक स्थान पर हुआ था। केन्या मूल के उनके पिता बराक हुसैन ओबामा और उनकी ताता एन्नेडन की सर्वप्रथम आपस में वार्ता मुलाका नाम के हवाई द्वीप पर हुई। ओबामा महोदय की प्रारम्भिक शिक्षा यहीं हुई। ओबामा दस वर्ष की अवस्था में नाना-नानी के साथ हवाई द्वीप आ गये। ओबामा ने स्वयं स्वीकार किया है कि मैट्रिक कक्षा में पढ़ते हुए वह कोकीन मद्यपान मादक पदार्थों पर आश्रित थे। मैट्रिक कक्षा के बाद वह लॉस ऐंजिलिस आ गए। न्यूयॉर्क के कोलम्बिया विश्वविद्यालय से राजनीतिशास्त्र में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधी विषय में स्नातक उपाधि प्राप्त की। शिकागो स्थित ओबामा ने 1982-1985 ईस्वी तक सामुदायिक शास्त्र सेवा के निर्देशक होकर प्रशंसनीय कार्य किया। वह हावर्ड विधि महाविद्यालय के प्राक अनाधिकारी- अध्यक्ष पद पर रहकर सात वर्षों तक कार्य करते रहे। उसके पश्चात् वह शिकागो विश्वविद्यालय में विधि प्रवक्ता (कानून शास्त्री) हो गए। पत्नी मिशेल के सहयोग से उन्होंने 1992 ईस्वी में 'ड्रीम ऑफ माई फादर' पुस्तक लिखी। सैंतालीस वर्षीय ओबामा विभिन्न गोरे और काले के संघर्ष को जड़ से अलग करने वाले प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति हैं। राष्ट्रपति की पदवी प्राप्त करके इन्होंने पैंतालीस वर्ष पूर्व महोदय मार्टिन लूथर किंग के देखे हुए स्वप्न को साकार किया। इस समय में बराक ओबामा चवांलिसवें राष्ट्रपति हैं। उन्होंने सन् 2009 ई० वर्ष जनवरी माह की बीस तारीख को राष्ट्रपति पद की शपथ धारण की। यह विजय न केवल बराक महोदय की, अपितु सम्पूर्ण जगत के चुनाव में ओबामा बराक की विजय ऐतिहासिक विजय है। ये जवानी, नौजवानी, उत्साह के, साहस के प्रतीक हैं। हम भारतीय आशा करते हैं कि भारत के अमेरिका के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध बनेंगे। ओबामा महात्मा गाँधी के विचारों से अत्यन्त प्रभावित हैं। अतः वह गाँधी की प्रेरणा से आज ऊँचे शिखर को प्राप्त कर चुके हैं। इसलिए वह श्वेत के घर में अश्वेत पदाधिकारी हैं।

1. (क) ओबामः बराकस्य जन्म
एकोनविंशतिमधिक-एकषष्टिः वर्षे अभवत्।
(ख) बराकस्य प्राथमिकी शिक्षा
मुलाकानामधेयस्य हवाईद्वीपे अभवत्।
(ग) 1982-1985 ईस्वी पर्यन्तं बराकः
सामुदायिक-सेवायाः निर्देशकः अभवत्।
(घ) बराकमहोदय रचित पुस्तकस्य नाम 'ड्रीम ऑफ माइ फादर' इति। (ङ) बराकः सन् 2009 जनवरीमासस्य विंशतिः दिनांके राष्ट्रपति अभवत्। **2.** (क) ते मातामहेन सह हवाई द्वीपम् अगच्छत्।(ख) सः राजनीति शास्त्रे स्नातकम् अभूत्। (ग) ओबामः प्रथमः अश्वेत राष्ट्रपतिः अस्ति। (घ) वयम् इच्छामः–

भारतामेरिकयो मध्ये मधुर संबन्धान्। (ङ) ओबामः महात्मा गान्धिन विचारे संतुष्टः अस्ति। **3.** (क) इनके पिता का नाम बराक हुसैन ओबामा है। (ख) इनकी पहली आपसी बातचीत हवाई द्वीप में हुई। (ग) वे (वह) कोकिनः शराब आदि मादक पदार्थों पर आश्रित हुए (हुआ)। (घ) यह विजय संपूर्ण संसार की एक प्रेरणा है। (ङ) वर्तमान में बराक चवालीसवें राष्ट्रपति हैं। **4.** (क) अयं अमेरिकायाः महाभाग् राष्ट्रपतिः बराक ओबामः अस्ति। (ख) तस्य परस्परं प्रथमवार्ता हवाईद्वीपे भवति। (ग) सःकोकीनः मद्यपानादय मादक पदार्थानाम् आश्रितः भवति। (घ) सः पुस्तकम् रचयति। (ङ) भारतस्य अमेरिकया सह प्रगाढ़ संबंधाः भवन्ति। **5.** (क) मूल धातु–आ + गम्, लकार– लङ्कार, पुरुष–प्रथम, वचन–एकवचन (ख) मूल धातु–प्रा + आप्, लकार–लङ्कार, पुरुष–प्रथम, वचन–एकवचन (ग) मूल धातु–रच्, लकार–लङ्कार, पुरुष–प्रथम, वचन–एकवचन (घ) मूल धातु–अस्, लकार–लट् लकार, पुरुष–प्रथम, वचन–एकवचन (ङ) मूल धातु–धृ, लकार–लङ्कार, पुरुष–प्रथम, वचन–एकवचन
(च) मूल धातु–भू, लकार–लट् लकार, पुरुष–प्रथम, वचन–बहुवचन।

एकादशः पाठः – लोभेन पापशंका

प्राचीनकाल में समुद्र के किनारे झोंपड़ी बनाकर वृद्ध के साथ कोई मछुआरा रहता था। निर्धन होने पर भी यह वृद्ध अत्यन्त सरल दयालु था, किन्तु उसकी पत्नी झगड़ा करने वाली, लालची और कठोर थी। वृद्ध सुबह से सायंकाल तक समुद्र में जाल फैलाकर मछलियाँ को पकड़ता और उनको बेचकर अपना पेट पालता था। वृद्धा ने सोचा– ''यह वृद्ध ठीक से कार्य नहीं करता'' इसलिए वह रोज वृद्ध के साथ झगड़ा करती थी। एक बार वृद्ध को प्रयत्न करने पर भी कुछ नहीं मिला। वह सोचने लगा– ''वृद्धा झगड़ा करेगी'' जब ईश्वर को याद करके जाल फैलाता है तब वह सोने की मछली प्राप्त करता है। वह मछली मनुष्य की वाणी में बोली– अरे मछुआरे! मैं समुद्रकन्या, राजकन्या हूँ। यदि तुम मुझे छोड़ दोगे तो तुम्हारी मन की इच्छा पूरी होगी। ''ठीक है'' यह कहकर उस दयालु मछुआरे ने उसे छोड़ दिया। शाम को जब वह घर लौटा तब वृद्धा उस पर क्रोधित होकर बोली– ''हे झूठ बोलने वाले! सोने की मछली मनुष्य की तरह कैसे व्यवहार करेगी। मैं सब जानती हूँ, तुम धूर्त हो'' वृद्ध ने समुद्र तट पर जाकर प्रार्थना की– ''हे समुद्रकन्या मेरी एक प्रार्थना सुनो।'' समुद्र के पानी की लहरों में खेलती मछली आकर बोली– ''हे दयालु वृद्ध क्या इच्छा है?'' वृद्ध बोला– ''हे राजपुत्री! मेरी वृद्धा लकड़ी की नई नाव चाहती है।'' वह बोली– ''जाओ तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी।'' घर जाकर वृद्ध ने देखा कि लकड़ी की नौका उपस्थित थी। वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ। किन्तु झगड़ालू पत्नी उससे उलाहना देती हुई बोली– अरे मूर्ख वृद्ध तुमने घर क्यों नहीं माँगा। वृद्धा का आदेश मानकर वृद्ध फिर से समुद्रतट गया। साहस करके उसने फिर से उसे बुलाया। सोने की मछली शीघ्र आकर बोली– ''आदेश करो, क्या किसी वस्तु की आवश्यकता है?'' वृद्ध बोला–''मेरी लालची पत्नी घर चाहती है।''
वह बोली– ''घर जाओ तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी'' घर जाकर वृद्ध ने देखा उसकी कुटी के स्थान पर एक भवन स्थित था। लालची वृद्धा मन में सोचने लगी– अरे! यदि में पत्नी हूँ तो मुझे भी सेठानी की तरह जीवन गुजारना चाहिए। वृद्ध ने समुद्रतट जाकर मछली को बुलाया। मछली ने आकर कहा क्या आवश्यकता है। वृद्ध बोला– ''मेरी वृद्धा सेठानी की तरह जीवन गुजारने की इच्छुक है।'' मछली पुनः बोली– ''जाओ तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण होगी।'' घर आकर उसने देखा, उसका महल धन–धान्य से पूर्ण दासी–दास युक्त था। अब वृद्धा अहंकार से पूर्ण हो गई। एक दिन बाजार में उसने महारानी को देखा– लोग महारानी का अभिवादन कर रहे थे। वृद्धा घर आकर बोली– ''अरे वृद्ध! जाओ जल्दी मैं अपमानपूर्वक जीवन नहीं जिऊँगी।'' क्रुद्ध वृद्ध बोला– ''तुम्हे क्या चाहिए। मैं आज नहीं जाऊँगा।'' वृद्धा के आदेशानुसार वृद्ध ने वैसा ही किया। लोभ की इच्छा वाली वह वृद्धा एक दिन माँगने लगी– हे मूर्ख

वृद्ध शीघ्र जाओ, जाकर कहो मैं समुद्र की महारानी बनने की इच्छुक हूँ। जिससे वह मछली भी मेरे आदेश का पालन करे। वृद्धा के उलहाने पर वह वहाँ गया। सोने की मछली से बोला– कहो क्या चाहते हो? वृद्ध मरे स्वर से बोला– लालची वृद्धा समुद्र की महारानी बनने की इच्छुक है। उत्तर देने के लिए मछली गहरे जल में प्रवेश कर गई। कुछ समय वह वृद्ध वहाँ प्रतीक्षा करके अपने घर गया और देखा– वहाँ वही जीर्ण (पुरानी) कुटिया के द्वार पर बैठी दुखी मन वाली वृद्धा।

1. (क) मत्स्याजीवी समुद्रस्योपकण्ठम् उटजं निर्माय न्यवसत्। तस्या भार्या कलहप्रिया लोभाकृष्टचेता कठोरा चासीत्। (ख) मत्स्या नरवाण्याम् अवदत्–"अरे मत्स्याजीवी! अहं समुद्रस्य राजकन्या। यदि त्वं मां त्यक्ष्यसि तर्हि तवाहं मनोभिलाषं पूरयिष्यामि" इति। (ग) प्रथमे मत्स्याजीवी मत्स्येन काष्ठस्य नूतनां नौकां यच्छति। (घ) यदा महाराज्ञीं सा वृद्धा अपश्यत् तदा सः मत्स्यजीवीम् उवाच–"रे वृद्ध! गच्छ शीघ्रं, नाहम् अपमानपूर्वकं जीविष्यामि।" (ङ) अन्ते मत्स्यः स्वदत्त समस्त दानं वरं वा गृह्णाति। गभीरे जले च प्रविष्टं करोति।

2. (क) सरलः, दयालु (ख) मनोभिलाषं (ग) जलवीथिषु (घ) समुद्रस्य (ङ) धन-धान्यपूर्णो। **3.** (क) तस्या पत्नी कलहप्रिया, लोभाकृष्ट चेता कठोर हृदया चासीत्। (ख) सः स्वर्णमयीं मत्स्यं प्राप्नोति। (ग) अहं समुद्रस्य राजकन्या अस्मि। (घ) मत्स्यः गभीरे जले प्रविष्टः। (ङ) उटजस्य द्वारे वृद्धा विमना अतिष्ठत्। **4.** (क) सा कलहप्रिया नारी अस्ति। (ख) दीपः प्रकाशं प्रसारयति। (ग) सः गृहं प्रत्यागच्छत्। (घ) अयं काष्ठस्य क्रीडनकम् अस्ति। (ङ) सा धनिकस्त्रीवत् भूतोऽपि उटजे वसति। **5. (क)** (i) निर्धनः + अपि
(ii) प्रातः + आरभ्यः (iii) प्रयतमानो + अपि
(iv) नरम् + इव (v) वृद्धादेशम् + आवश्यकम्
(vi) च + आपणे।
(ख) (i) किमपि (ii) स्वोदरम् (iii) समागत्य
(iv) नौकामिच्छति (v) तत्रागच्छत्
(vi) गृहमगच्छत्।

द्वादशः पाठः – त्रयः सिद्धान्ताः

प्राचीनकाल में रोम देश में डोमीटियन नामक एक राजा रहता था। वह बुद्धिमान और न्यायप्रिय था। उसके शासन काल में कोई भी चोरी के काम में सफलता नहीं प्राप्त कर सका था। दण्ड के भय से अपराधी काँपते थे। एक बार कमरे में स्थित सम्राट के पास कोई व्यवसायी आया। द्वारपाल बोला– ''तुम कौन हो?'' व्यवसायी बोला– ''वस्तु बेचने आया हूँ।'' द्वारपाल के साथ व्यवसायी राजा के कक्ष में प्रविष्ट हुए। सम्राट ने उससे पूछा– 'तुम बेचने के लिए क्या लाए हो?' व्यवसायी बोला– ''मेरे पास तीन सिद्धान्त हैं। ये तर्क के द्वारा और ज्ञान से परिपूर्ण हैं। उनको मैं बेचने आया हूँ।'' सम्राट बोले– ''कहो इनके कितने मूल्य होंगे?'' व्यवसायी बोला– ''एक हजार स्वर्ण मुद्रा।'' राजा बोला– ''यद्यपि सिद्धान्त से कोई लाभ नहीं होता तब भी मेरा धन तुम्हें बदल देगा।'' व्यवसायी तैयार हो गया। सम्राट ने कहा– ''कहो तुम्हारे तीन सिद्धान्त क्या हैं?'' व्यवसायी बोला– ''राजन! कोई भी कार्य करो आप उसके सारे परिणाम विचार कर करो।'' यह प्रथम सिद्धान्त है। ''राजमार्ग को त्यागकर अन्य पथ से नहीं जाना चाहिए।'' यह दूसरा सिद्धान्त है। ''उस घर में आतिथ्य नहीं स्वीकार करें। जिसका मालिक बूढ़ा और पत्नी युवती हो।'' यह तीसरा सिद्धान्त है। राजा उसे एक हजार मुद्रा देकर निश्चिन्त हो गया। राजा की आज्ञा से तीनों सिद्धान्त सब तरफ फैला दिए गए। उन्होंने सोचा– किसी प्रकार से इसका विनाश होना चाहिए। यह राजा न्यायप्रिय है यह सोचकर तस्कर उसके शत्रु हो गए। उन्होंने प्रचुर धन देकर राजा के नाई को अपने पक्ष में कर लिया। नाई बोला– ''क्षौर कर्म के दौरान मौका पाकर उसकी गर्दन छेंद दूँगा।'' नाई राजा के पास जाकर क्षौर कर्म करने लगा। नाई ने देखा राजा की गर्दन में वस्त्र बाँधते समय उस पर लिखा था कि सभी कार्य बुद्धि से विचारकर करना चाहिए। वह मन से विचार करने लगा। यदि मैं आज राजा को मार दूँगा तो विनाश हो जाएँगा। कुत्ते की मौत मैं मारा जाऊँगा। इसलिए मैं भविष्य में जो कुछ भी करूँगा

सोच-विचार कर करूँगा। इस प्रकार उसे काँपता देख सम्राट बोले- ''कि आज तुम बीमार हो?'' हाथ जोड़कर नाई सविनय बोला- ''राजन्! मुझे क्षमा करो।'' शत्रु ने मुझे आपके वध के लिए कहा था। लेकिन वस्त्र पर लिखे इस वाक्य को पढ़कर भय से त्रस्त होकर मेरी यह दशा हो गई। मुझे क्षमा करें।

सम्राट ने मन से विचार किया- प्रथम सिद्धान्त ने मेरी रक्षा की। चोरों ने विचार किया हम सफल नहीं हुए। अन्य कोई षडयन्त्र करेंगे। यह सोचकर कि कल सम्राट अवश्य उस पथ से अन्य नगर जाएँगे तभी आक्रमण करेंगे और मार देंगे। सम्राट नगर यात्रा के लिए निकले। शत्रु तो प्रतीक्षा में थे। तभी राजा ने राजमार्ग से छोटा रास्ता देखा। अनुचर बोला- ''इस रास्ते से हम शीघ्र ही उस नगर में पहुँच जाएँगे।'' ''सम्राट मन में विचार करने लगे- राजमार्ग से जाना चाहिए। हमेशा इस सिद्धान्त का पालन करूँगा यदि कोई छोटे मार्ग से जाने को इच्छुक है तो जाए।'' कुछ सैनिक छोटे रास्ते से निकल गए। शत्रुओं ने उन्हें मार दिया, परन्तु सम्राट बिना रोक के नगर आ गए। यह समाचार सुनकर आश्चर्यचकित राजा विचारने लगे- ''दूसरे सिद्धान्त ने भी मेरी रक्षा की।'' शत्रु राजा के वध के अवसर की प्रतीक्षा में थे। सम्राट अन्य नगर में आ गए। राजा जिस घर में रुके थे वहीं उनको मारने का निश्चय शत्रु कर चुके थे। वध का पूरा प्रबन्ध हो गया था। राजा जिस घर में आतिथ्य स्वीकार कर रहे थे उसके गृहपति वृद्ध और पत्नी युवती थी। जब राजा ने वृद्ध को देखा तब उसने पूछा- ''हे वृद्ध! क्या तुम्हारी पत्नी है?'' वृद्ध बोला- ''हाँ मेरी पत्नी है।'' राजा की आज्ञा से नवयौवन से सम्पन्न सुन्दरी राजा के सामने आ गई। उसको देखकर राजा को तीसरा सिद्धान्त याद आया। उसने सेवकों से कहा- शीघ्र ही मेरे रहने का प्रबंध दूसरी जगह करो। उसी समय अन्य भवन में राजा के आवास की व्यवस्था हुई। आतिथ्य के लालच से कोई सेवक वहीं रह गया था। रात में गहरे अन्धकार में शत्रु ने आकर सबको मार दिया। सुबह नगर में लोगों ने सुना कि उस भवन में सभी लोग मार दिए गए। ईश्वर की कृपा से राजा उस अवसर पर भी सुरक्षित बच गया। व्यवसायी के तीसरे सिद्धान्त ने भी उसकी रक्षा की। इस प्रकार उस राजा ने उन तीन सिद्धान्तों का अनुसरण करके शान्तिपूर्वक राज्य किया।

1. (क) डोमीटियन नामक सम्राटः स्वभावेन बुद्धिमान् न्यायप्रियश्चासीत्। (ख) यदा द्वारपालः प्राह 'कः कोऽत्र भो' तदा व्यवसायी ब्रूते—"वस्तूनि विक्रेतु समागतोस्मि।" इति। (ग) प्रथम सिद्धान्तस्य परीक्षा स्वक्षौरकर्मावसरे कृतः। (घ) तृतीय सिद्धान्तः—"तस्मिन् गृहे नातिथ्यं स्वीकरोतु यस्मिन् गृहपतिः वृद्धः तत्पत्नी च युवतिः।" (ङ) द्वितीय सिद्धान्तस्य परिणामं लब्ध्वा व्यचारयत्—"द्वितीये नापि सिद्धान्तेन मदीया रक्षा कृता।" इति। (च) त्रयः सिद्धान्ताः— प्रथमः—"किमपि कार्यं करोतु तत् सर्वं परिणामं विचार्य। करणीयम्।" द्वितीयः— "राजमार्गं परित्यज्य यथा गन्तव्यम्।" तृतीयः च—"तस्मिन् गृहे आथित्यं न स्वीकरोतु यस्मिन् गृहे गृहपतिः वृद्धः तत्पत्नी च युवतिः।" **2.** (क) स्तेनकर्मणि (ख) तर्केण (ग) नापितेनावलोकितं, विवद्धमासीत्, बुद्ध्या (घ) निर्गताः (ङ) तत्क्षणमेवान्यस्मिन। **3.** (क) द्वारपाल के साथ व्यवसायी राजा के कक्ष में प्रवेश कर गया। (ख) इनका क्या मूल्य होगा ? (ग) 'यह न्यायप्रिय राजा है' यह सोचकर चोर उसके शत्रु हो गए। (घ) कुत्ते के समान मेरी मृत्यु हो जाएगी। (ङ) उन सिद्धान्तों का अनुसरण करते हुए राजा ने शान्तिपूर्वक राज्य किया।

4. (क) स्वयं करें।

त्रयोदशः पाठः – व्यवहारम्

1. दूर होने पर भी दूर नहीं है जो मन में स्थित है जो जिसके हृदय में नहीं है वह पास होने पर भी दूर है।
2. अवसर के अनुकूल बात करने वाला सामर्थ्य के अनुसार प्रिय होता है अपनी शक्ति के अनुरूप जो जानता है वही पण्डित है।
3. दुष्टों के कष्टों से बचने की दो प्रतिक्रियाएँ हैं- जूतों से मुँह तोड़ जवाब देना या परित्याग कर देना।
4. बराबर वालों से प्यार से सरकारी लोगों से अच्छा व्यवहार करना चाहिए। व्यापार में दिव्यता से, घर में स्त्री से अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

5. उद्योग में दरिद्रता जप में पाप नहीं है। मौन में कलह नहीं है। जागते में भय नहीं होता।
6. पाँच वर्ष तक प्यार दुलार करना चाहिए। दस वर्ष तक पीटकर संभालना चाहिए। सोलह वर्ष के पुत्र को मित्र के समान आचरण करना चाहिए।
7. अपच होने पर पानी औषधि है भोजन पच जाने पर पानी बल प्रदान करता है भोजन में अमृत है पानी परन्तु भोजन के अन्त में विष होता है।
1. (क) यो यस्यमनसि स्थितिः सः दूरस्थोऽपि जनः दूरस्थः न भवति। (ख) प्रस्तावसदृशंवाक्यं प्रभाव संदृशं प्रियम् आत्मशक्तिसमं कोपं यः जानति सः पण्डितः। (ग) खलानां कंटकानां प्रतिक्रिया द्विविधैव –उपानान्मुख भंगोवा दूरतो वा विसर्जनम्। (घ) दरिद्रियम् उद्योगे नास्ति। (ङ) पुत्रं प्रथम पंचवर्षाणि लालयेत्, दशवर्षाणि ताडयेत् किन्तु षोडशे प्राप्ते मित्रवत् एव आचरेत्। **2.** (क) दूरस्थो (ख) कोपं, पण्डितः (ग) कण्टाकानां, प्रतिक्रिया (घ) प्रीति, सेवा (ङ) नास्ति (च) भोजनान्ते। **3.** (क) उपानान्मुख भंगं कुर्यात्। (ख) व्यवहारेषु व्यवसायम् उपजायते। (ग) अजीर्णे भेषजं वारि भवति। (घ) भोजनान्ते जल–पानं विषमिव भवति। (ङ) दिव्या नारी गृहस्य शोभा भवति। **4.** (क) यो यस्य हृदये नास्ति–समीपस्थोऽपि दूरतः। (ख)उपानान्मुख भंगे वा–दूरतो वा विसर्जनम्। (ग) वाणिज्यं व्यवहारेषु–दिव्या स्त्री शोभते गृहे। (घ) उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं–जपतो नास्ति पातकम्। (ङ) मौने च कलहो नास्ति–नास्ति जागरिते भयम्। (च) प्राप्ते तु षोडशे वर्षे–पुत्रं मित्रवदाचरेत्। **5.** (क) पापम् (ख) आत्मसमम् (ग) औषधीनाम् (घ) भोजनान्ते (ङ) उपेक्षितम् (च) दूरस्थोऽपि।

6. विभक्ति, एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन

(क) एकवचन–खल्, द्विवचन–खलौ
(ख) द्विवचन-कंटकौ, बहुवचन–कंटकाः, एकवचन–कण्टकम्, बहुवचन–कण्टकान्
(ग) एकवचन–प्रतिक्रिया, बहुवचन–प्रतिक्रियाः, द्विवचन– प्रतिक्रिये, बहुवचन–प्रतिक्रियाः (घ) द्विवचन–पातके, बहुवचन–पातकानि, एकवचन–पातकम्, द्विवचन–पातके। (ङ) एकवचन–भेषजम्, बहुवचन–भेषजानि, एकवचन–भेषजम्, बहुवचन–भेषजानि।

चतुर्दशः पाठः – सुवचनानि

1. लम्बे नाखून वालों का, बड़े सींग वाले (जानवरों) को स्त्री व राजकुल में विश्वास नहीं करना चाहिए।
2. गंदे स्थान से प्राप्त सोना, विष में से प्राप्त अमृत, नीचे व्यक्ति से भी प्राप्त उत्तम विद्या दुष्कुल में भी स्त्री रत्न प्राप्त होते हैं।
3. पत्नी से अलग होना, स्वजन का अपमान। कर्ज का ना चुका पाना कुनृप की सेवा, परिद्रभाव, विषम सभा बिना अग्नि के शरीर को जलाते हैं।
4. परिश्रमी व्यक्ति दरिद्र नहीं होना चाहिए जप में पाप नहीं होना चाहिए मौन में कलह नहीं है। जागते में भय नहीं होता।
5. अधिक सौन्दर्य सीता, अधिक अहंकार से रावण अति ताकत से बलवान होते हैं अति सभी जगह बुरी है।
6. उपद्रव होने पर भी शत्रु से आक्रमण होने पर, अकाल में और भय के समय असाधु के सम्पर्क से जो भाग जाता है वह जीवित रहता है।
1. (क) नखीनां नदीनां शृंगीणां शस्त्रपाणिनाम् च विश्वासो न कर्त्तव्यः। (ख) दरिद्रभावे विषमा सभां विना अग्निना कायं प्रदहन्ति। (ग) आचारः कुलम् आख्याति। (घ) दारिद्र्यदूरीकरणाय उद्योगः आवश्यकः अस्ति। (ङ) यः उपसर्गे अन्यचक्रे दुर्भिक्षे भयावहे असाधुजन–सम्पर्के पलायति च सः। **2.** (क) ग्राह्यममेध्यादपि। विद्या।। (ख) कुलमाख्याति। स्नेहमाख्याति।। (ग) दारिद्र्यं, नास्ति। नास्ति।। (घ) अति रूपेण, रावणः। सर्वत्र।।
(ङ) दुर्भिक्षे। असाधुजनसम्पर्के।।
3. भावार्थ श्लोक 2–गंदे स्थान पर पड़े हुए सोने को जैसे उठा लिया जाता है वैसे ही गुणों से युक्त यदि कोई वस्तु/व्यक्ति हो तो उसे ग्रहण करने में बुराई नहीं है। **भावार्थ श्लोक 4**–आचरण से कुल, भाषण (बोली) से देश, स्नेह से मान सम्मान और भोजन से शरीर का पता चलता है/मालूम होता है।
4. (क) नीचात् + अपि + उत्तमा
(ख) विना+ अग्निम् + ऐते

(ग) देशम् + आख्याति (घ) न + अस्ति (ङ) बलि + दत्त्वा (च) दुः + भिक्षे।

5. (क) विभक्ति–सप्तमी, वचन– बहुवचन (ख) विभक्ति–तृतीया, वचन– एकवचन (ग) विभक्ति–सप्तमी, वचन– एकवचन (घ) विभक्ति–पंचमी, वचन– एकवचन (ङ) विभक्ति–प्रथमा/ द्वितीया, वचन–एकवचन (च) विभक्ति–सप्तमी, वचन–एकवचन

6. (क) रामः सीता च गच्छतः। (ख) दुराचरणः नैव कुर्यात् (ग) अति सर्वत्र वर्जयेत् (घ) रामं विना पूजा न भवति। (ङ) सर्वदा सदाचरणं कुर्यात्।

7. (क) नदीनाम्–सरितानाम् (ख) स्त्रीषु–नारीषु (ग) कान्ता वियोगः–भार्या वियोगः (घ) उद्योगे–परिश्रमे (ङ) सीता–जानकी

पञ्चदशः पाठः – विचित्रमिदं प्रकृतिः

1. बुध ग्रह सौरमण्डल का सबसे छोटा ग्रह है। 2. बुध ग्रह प्रातः अथवा सायंकाल प्रकाश होने पर भी देखा जा सकता है।
3. वह सूर्य के चारों ओर परिक्रमा आठ सौ दिनों में पूरी करता है। 4. इस ग्रह का अपना उपग्रह नहीं है। 5. यह ग्रह देखने में चन्द्रमा की तरह दिखता है। 6. बुध के ऊपर नासा देश से एक अंतरिक्ष यान आया, जिसका नाम 'मैरीनर' था।

2. सौमण्डल बृहस्पति

1. बृहस्पति हमारे सौरमण्डल का सबसे बड़ा ग्रह है। 2. बृहस्पति पर कठोर धरातल नहीं है। 3. मानते हैं कि इस बार में लाल रंग का एक बिंदू तूफान का सूचक है। 4. बृहस्पति पर एक दिन दस घंटे का होता है। 5. बृहस्पति पर सोलह उपग्रह है। इसके चार ग्रह दूरबीन से या टेलीस्कोप से ही देखे जाते हैं।
6. बृहस्पति मण्डल के अन्तर्गत एक उपग्रह ज्वालामुखी का संग्रह है।

3. लक्षद्वीप

1. लक्षद्वीप लगभग 36 छोटे द्वीपों का समूह है 2. यह भारत के सभी छोटे क्रेन्द्रशासित प्रदेश हैं। 3. इसके 36 द्वीप मात्र दस परिमित द्वीप में ही लोग रहते हैं। 4. यहाँ लोग मलयालम भाषा बोलते हैं। 5. शोधकर्ता के अनुसार छठी अथवा सातवीं शताब्दी में यहाँ बौद्धभिक्षुक रहते थे। 6. लक्षद्वीप का अगलद्वीप हवाई केन्द्र है। यह स्थान एक खण्ड में है।

4. डायनासोर

1. डायनासोर पृथ्वी पर सर्वप्रथम अनुमान से 26 करोड़ संवत्सर पूर्व दिखते थे। 2. डायनासोर के अवशेष सर्वप्रथम 21वीं शताब्दी में पहचाने गए। 3. आज भी प्राप्त अवशेषों के परिक्षण से यह निष्कर्ष निकला है कि सबसे लम्बा डायनासोर 27 मीटर का प्रमाण है। 4. कुछ डायनासोर शाकाहारी कुछ माँसाहारी थे। 5. क्रिस्टल पार्क लंदन नगर में डायनासोर का पुतला देखने लायक है।

5. चीन की दीवार

1. चीन की दीवार संसार के बड़े आश्चर्य में से प्रमुख हैं। इसका निर्माण ईसापूर्व 21 से अधिक दौ सौ संवत्सर पूर्व हुआ था।
2. इसकी लम्बाई एक हजार एक सौ चौबीस कोस से अधिक हैं। 3. यह 4.57 तथा 9.2 मीटर तक ऊँची, 9.75 मीटर चौड़ी है। 4. इसके ऊपर जहाँ-तहाँ छोटी-छोटी मीनारें हैं। 5. उसकी दीवारें ईटों व पत्थर के टुकड़ों से बनी हैं। 6. यहाँ मंगोल के आक्रमण से चीन देश की रक्षा के लिए बनाई गई थी।

1. (क) सौरमण्डलस्य लघुतमः ग्रहः बुधः अस्ति। (ख) बृहस्पतेः उपग्रहाणां षोडशा संख्या अस्ति। (ग) लक्षद्वीपः अनुमानतः षट्विंशति परिणामं लघुवृहतो वा द्वीपानां समूहः वर्तते। (घ) डायनासोरस्य प्रस्तुती प्रमाण क्रिस्टलपार्क लंदन नगरे वर्तते।
(ङ) चीनभित्याः परिमाणं 4.57 तः 9.2 मीटर परिमाण पर्यन्तं उर्ध्वाकारः 9.75 मीटर परिणामतः आयताकारः अस्ति। (च) चीन-भित्तिः मृत्तिकोपलैः पाषाणखण्डैश्च निर्मितम्।

2. (क) तस्य कोऽपि स्वोपग्रहं नास्ति। (ख) वृहस्पत्याः एक दिवस दशहोरा पर्यन्तं भवति। (ग) लक्षद्वीपस्य अगली द्वीपे हवाई केन्द्रम् अस्ति। (घ) डायनासोरः अनुमानतः त्रयोविंशतिकोटि संवतःसरात् पूर्वे दृश्यन्ते स्म। (ङ) इयं भित्ति मृत्तिकोपलैः पाषाण खण्डैश्च विनिर्मिता अस्ति। **3.** (क) यह ग्रह देखने में चंद्र के समान दिखता है। (ख) बृहस्पति के घेरे में स्थित उपग्रह एक ज्वालामुखी का संग्रह है। (ग) यह भारत का सबसे छोटा शासकीय

प्रदेश है। (घ) यहाँ के लोग मलयालम भाषा बोलते हैं। (ङ) कुछ डायनासोर शाकाहारी होते हैं। (च) इस जगह छोटी-छोटी मीनारें हैं।

4. (क) मूल धातु–भू, लकार– लङ्लकार, पुरुष–प्रथम, वचन– एकवचन। (ख) मूल धातु–कृ, लकार–लङ्लकार, पुरुष–प्रथम, वचन–एकवचन। (ग) मूल धातु–दृश, लकार–लट्लकार, पुरुष–प्रथम, वचन–एकवचन। (घ) मूल धातु–शक्, लकार–लट्लकार, पुरुष–प्रथम, वचन–एकवचन। (ङ) मूल धातु– अस्, लकार–लङ्लकार, पुरुष–प्रथम, वचन–बहुवचन।

5. (क) मूल शब्द–अस्मद्, विभक्ति–षष्ठी, वचन–एकवचन। (ख) मूल शब्द–भित्ति, विभक्ति–द्वितीया, वचन–एकवचन। (ग) मूल शब्द–स्थान, विभक्ति–षष्ठी, वचन–एकवचन। (घ) मूल शब्द–सूचक, विभक्ति–प्रथमा, वचन–एकवचन। (ङ) मूल शब्द–दर्शन, विभक्ति–चतुर्थी, वचन–एकवचन।
(च) मूल शब्द–परिक्षण, विभक्ति–तृतीया, वचन–एकवचन। (छ) मूल शब्द–लघु, विभक्ति– प्रथमा/ द्वितीया, वचन–बहुवचन।

6. (क) प्रकरोति (ख) अतिकरोति (ग) आविष्करोति (घ) निष्करोति (ङ) उपकरोति।

षोडशः पाठः – प्रगाढा मैत्री

प्राचीन समय में सिसली द्वीप के सेराक्यूज नामक नगर में दो मित्र रहते थे। डामन तथा पेथियस उनके नाम थे। दूध में मिले जल की तरह उनकी मित्रता प्रगाढ़ थी। उसी समय सिसली द्वीप पर एक क्रूर राजा शासन करता था। उसका नाम डायनोसस था। उसका नाम सुनकर लोग काँपते थे। प्रतिदिन बढ़ती हुई उसकी क्रूरता देखकर डामन क्रोधित हो गया। वह राजा की निर्दयता, दुष्टता की निन्दा करता था। क्रोधित डायनोसस ने आज्ञा दी कि उसे बाँधकर जेल में डाल दिया। राजद्रोह के अपराध में उसे मृत्युदंड दे दिया। मृत्युदण्ड का समाचार सुनकर पेथियस दौड़ते हुए राजसभा गया। जहाँ अपने मित्र डायन की सहायता कर सके। जब वह राजसभा में पहुँचा तब डामन राजा से अनुनय करके कहने लगा- राजन! मृत्युदण्ड से पूर्व मेरी एक इच्छा है। मैं पंद्रहदिन के लिए अपने परिवार के साथ समुद्र के पार जाने का इच्छुक हूँ। क्रोधित राजा बोला- विद्रोही! मैं मूर्ख नहीं हूँ। तुम मुझसे छल करके भागना चाहते हो। यह संभव नहीं है। यदि तुम अन्य को जेल में डालकर जाने को तैयार हो तो 15 दिन के लिए घर जा सकते हो। यदि तुम समय से न आए तो जेल में स्थित व्यक्ति दण्ड का भागी होगा। राजा ने सोचा- कोई किसी के लिए अपने प्राण नहीं छोड़ता। डामन का मृत्युदण्ड कोई ही स्वीकार करता इसलिए वह घर नहीं जा सकता। परन्तु एक विचित्र घटना घटी डामन का मित्र पेथियस बोला- राजन! मैं अपने मित्र के स्थान पर जेल स्वीकार करता हूँ यदि वह न आया तब मैं मृत्युदण्ड का भागी बनूँगा। मित्र के लिए प्राण देने को तैयार देखकर डायनोसस चकित हो गया। वह सोचने लगा- ''ऐसे लोग भी संसार में रहते हैं'' उसने डामन को जेल से छोड़कर पेथियस को जेल में डाल दिया। दिन बीतने लगे। मृत्युदण्ड का समय समीप आ गया। पेथियस ने जेल में सोचा- ''यदि डामन आने में देर हो गई तो उत्तम रहेगा, उसके स्थान पर मृत्युदण्ड मैं प्राप्त करूँगा, जिससे दुनिया जान सके प्रगाढ़ मैत्री कैसी होती है?'' इधर डामन जलयान में सोच रहा था आज अगर मैं समय पर वहाँ न पहुँचा तो मेरा प्रिय मित्र दण्डभागी होगा। वास्तव में वायु अनुकूल न होने से देर हो गई। जब डामन नहीं लौटा तो राजा ने पेथियस से कहा- तुम्हारा मित्र निपुण धूर्त है। तुम्हें यहाँ छोड़कर चला गया। आज तुम्हीं मृत्यु दण्ड के भागी बनोगे। अपने मित्र की बुराई सुनकर वह बोला- वायु अनुकूल न होने से देर हो गई। मेरा मित्र धूर्त नहीं है। अन्त में पेथियस को वध स्थान पर लाया गया। उस समय भी वह प्रसन्न था। राजा ने आज्ञा दी- ''मृत्युदण्ड प्रदान करो'' ''उसी समय दूर से आवाज आई रुको, मैं आ गया।'' सभी लोग उस रास्ते पर देखने लगे। उन्होंने देखा घोड़े पर चढ़कर दौड़ते हुए धूल से सना हुआ, आकर डामन घोड़े से गिर गया। वह बोला- ''मैं ईश्वर की कृपा से समय पर उपस्थित हो गया।'' उसने राजा से प्रार्थना की, अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मैं आ गया। मेरे मित्र के स्थान पर मैं मृत्यु

का भागी होऊँगा।'' मृत्युदण्ड पाने के लिए अपने मित्र को देखकर पेथियस बहुत जोर से रोने लगा, विलाप करते हुए बोला- अरे धिक्कार है आपने मित्र के प्राणों को बचाने में मैं असमर्थ हूँ। डामन पेथियस की मित्रता देखकर राजा चकित हो गया। वह बोला- तुम में से कोई दण्ड का भागी नहीं होगा। तुम दोनों की प्रगाढ़ मित्रता मैं कभी नहीं भूलूँगा। आज से तुम दोनों में तीसरा मैं भी हूँ। राजा के निर्णय से सभी बहुत सन्तुष्ट हुए।

1. (क) सेरावन्यूजनामके स्थिते द्वे मित्रे डामन-पेथियसौ च नाम स्तः, तयोः प्रगाढा मैत्री। (ख) सिलसीद्वीपस्य राजा डायनोससः आसीत्। (ग) मृत्युदण्डसमाचारं श्रुत्वा पेथियसः प्रधावन् राजसभाम् अगच्छत्? (घ) डामनो अनुनयं श्रुत्वा क्रुद्धः नृपतिः प्राह–विद्रोहिन्! नाहं मूर्खः। त्वं मां छलयित्वा पलायितुं कामयसे? नैतत्सम्भवम्। यदि तव प्रत्यागमनं यावत्कोऽप्यन्यः कारागारे स्थातुं समुद्यतो भवेत् तदा त्वं पञ्चदशदिनार्थं गृहं गन्तुं शक्नोषि। यदि त्वं समये न समागमिष्यासि तर्हि कारागृहस्थो जनो दण्डभाग् भविष्यति। (ङ) पेथियसः कारागृहे व्यचारयत्–"यदि डामनस्य प्रत्यागमने विलम्बो भवेत् तर्हि सुष्ठ स्यात् तेन तत्स्थाने मृत्युदण्डमहं प्राप्स्यामि येन जगत् विजानीयात् प्रगाढा मैत्री कीदृशी भवति।"

2. (क) सिसलीद्वीपे, डायनोससः (ख) पलायितुं (ग) जलयाने (घ) अनुकूलेन (ङ) ईश्वरस्यानुकम्पायहं। **3.** (क) सेराक्यूज नगरे द्वे मित्रे निवसतः। (ख) एनं बद्ध्वा कारगारं पातयत। (ग) अहं स्वपरिवारेण सार्धं समुद्रपारं गन्तुमिच्छामि। (घ) कारागृहस्थः जनः दण्डभाग् भविष्यति। (ङ) मम मित्रःधूर्तः नास्ति। **4.** (क) तयो दुग्धमिश्रितजलवत् प्रोढा मैत्री अस्ति। (ख) अत्र राजद्रोहस्य किं कारणम्? (ग) मृत्युदण्डभाजो ममान्तिमैका समीहा वर्तते, राजन्! (घ) सिंहं दृष्ट्वा सः स्तब्धो जातः। (ङ) सा बहुकाले विललापः।

सप्तदशः पाठः – महात्मा गान्धिः!

हमारे राष्ट्रपति महात्मा गाँधी हैं। इन महापुरुष का जन्म गुजरात देश के काठियाबाद के अन्तर्गत पोरबन्दर नामक नगर में 1869 शताब्दी के अक्टूबर माह की दो तारीख को महामहिम श्री कर्मचन्द गाँधी महोदय के घर हुआ था। उनकी माता पुतलीबाई पतिधर्म परायण सत्य को चाहने वाली थी। सत्यनिष्ठ, धर्मपरायण इनके पिता कर्मचन्द गाँधी महोदय राजकोट नामक राज्य के प्रधानमंत्री पथ पर थे। पिता ने इनका नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी रखा।

गाँधी महोदय की प्रारम्भिक शिक्षा गुजरात राज्य में ही हुई। अपनी शिक्षा समाप्त होने पर मोहनदास ने अंग्रेजी महाविद्यालय में अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। वहाँ उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए यह इंग्लैड गए। शिक्षा समाप्त करके वह अपने देश आ गए। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका देश जाकर वहाँ रंगभेद नीति का विरोध किया और सफलता पाई। वहाँ भारतीयों की दीन व दरिद्र दशा देखकर दया से द्रवित होकर उन्होंने उसके प्रतिकार के लिए अहिंसात्मक 'सत्याग्रह' नामक आन्दोलन प्रारम्भ किया। स्वदेश आकर महात्मा गाँधी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व किया। सात लाख गाँवों में खादी वस्त्रधारण करने के लिए प्रचार किया। स्वयं भी खादी की धोती धारण की। उनके नेतृत्व में हमारा देश भारत 1947 ईस्वी में अगस्त माह की 15 तारीख को स्वतंत्र हुआ। विदेशी अंग्रेज शासक भारत को छोड़कर स्वदेश गए। उसके बाद समय बीतने पर 1848 ईस्वी में जनवरी माह की 30 तारीख को प्रार्थना सभा में जाते समय इन्हें किसी मन्द बुद्धि नाथूराम गोडसे नामक मानव ने मार दिया। नश्वर शरीर को छोड़कर स्मृतियाँ ही शेष रह गईं। उनके निधन के समाचार से सम्पूर्ण जगत शोक से भर गया। गाँधी महोदय की समाज सेवा मानव सेवा अनुपम थी। स्वतन्त्रता संग्राम में सत्य अहिंसा इसके दो अस्त्र थे। ये महात्मा न केवल हमारे लिए बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए अनुकरणीय, वन्दनीय थे। साक्षात् अहिंसा का अवतार, सेवा की मूर्ति, सत्य का द्वीप विश्व उद्धारक, समाज सुधारक धर्म का संस्थापक, दीन-हीन के बन्धु, दया सिन्धु थे।

1. (क) मोहनदास कर्मचन्द गान्धिः अस्माकं राष्ट्रपिता। (ख) महात्मा गान्धिनः जन्म 2 अक्टूबर मासे 1869 ई० वर्षे पोरबंदरे च

अभवत्। (ग) गान्धिमहोदयस्य प्रारम्भिकी शिक्षा गूर्जर राज्ये अभवत्। (घ) दाक्षिणाफ्रीकादेशं गत्वा गान्धिः रंग भेद नीते विरोधं कृत्वा सफलतां प्राप्तवान्। (ङ) गान्धिमहोदयस्य नश्वरशरीरं नाथूराम गोडसे नामधेयेन मानवेन कदा च व्यापादितः। (च) गान्धिमहोदयस्य द्वे अस्त्रे सत्यहिंसाश्च स्तः। **2.** (क) गान्धिनः प्राथमिक शिक्षा पोरबंदरे अभवत्। (ख) सत्याहिंसा च गान्धिनः द्वे अस्त्रे आस्ताम्। (ग) गान्धिः अहिंसात्मकं 'सत्याग्रहं' आन्दोलनस्य नेतृत्वं अकरोत्। (घ) 'मोहनदास करमचन्द गाँधी' गान्धिनः सम्पूर्णः नाम अस्ति। (ङ) महात्मा गान्धिः सत्याहिंसा च पूजकः आसीत्। **3.** स्वयं करें। **4.** (क)कर्मचन्दः राजकोटस्य राज्यस्य प्रधानमन्त्री पदम् अलङ्करोति स्म। (ख) शिक्षां समाप्य सः स्वदेशम् आगच्छत्। (ग) स्वयं अपि कोपीनम् धृतम्। (घ) आंग्लशासकाः भारतं परित्यज्य स्वदेशम् अगच्छन् (ङ) तं निधनसमाचारं श्रुत्वा सम्पूर्णं जगत् शोकाकुलं गतः। **5.** गाँधी महोदय की प्रारंभिकी शिक्षा गुजरात राज्य में ही हुई। उस शिक्षा को समाप्त करके इस मोहनदास ने अंग्रेजी महाविद्यालय में अध्ययन प्रारंभ किया। उसके बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए ये इंग्लैण्ड गए। शिक्षा समाप्त करके वे अपने देश आए। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका देश जाकर वहाँ की रंगभेद नीति का विरोध करके सफलता प्राप्त की। वहाँ के भारतियों की दरिद्रता और पराधीनता की दशा देखकर दयार्द्रद्रवित होकर उन्होंने प्रतीकार के लिए अहिंसात्मक सत्याग्रह नामक आंदोलन प्रारंभ किया।

अष्टादशः पाठः – विद्यायामहत्वम्

1. रूपयौवन से सम्पन्न विशाल कुल में जन्मा विद्याहीन होने पर फूल में गन्धहीन फूल के समान होता है।

2. कामधेनू के गुण वाली विद्या अपने वाले समय में फलदायिनी, प्रवाण में माता समान होती है। विद्या धन छिपा हुआ धन समझना चाहिए।

3. विद्या बिना जीवन कुत्ते की पूँछ के समान है। छिपाने योग्य स्थान को छिपा नहीं सकती मच्छरों को काटने से रोक नहीं सकती।

4. विशाल कुल में जन्म लेने पर भी विद्याहीन मनुष्य का कोई स्थान नहीं होता, छोटे या खराब कुल में जन्मा विद्वान सभी लोगों द्वारा पूजा जाता है।

5. विद्वान की संसार में प्रशंसा होती है। विद्वान सभी जगह पूजा जाता है। विद्या सभी को लाभ देती है। विद्या सभी जगह पूजी जाती है।

6. धनहीन होने पर भी हीन नहीं होता, परन्तु विद्या रत्न से हीन सभी वस्तुओं से हीन होता है।

1. (क) निर्गन्धाः इव किंशुकाः (ख) विद्या गुप्तधनं अस्ति (ग) जनः पुच्छमिव विद्यया व्यर्थं जीवितम्। (घ) विद्वान दैव च सर्वत्र पूज्यते। (ङ) विद्या विना सर्वहीनाः जनाः भवन्ति। **2.** (क) विशालकुल सम्भवा। निर्गन्धा।। (ख) कामधेनुगुणा, ह्यकाले। गुप्तं।। (ग) कुलेन, विद्याहीनेन। देवैरपि।। (घ) प्रशस्यते, विद्वान। विद्या।। (ङ) धनिकः, सुनिश्चय। विद्यारत्नेन, हीनः। **3. भावार्थ 1**– रूप-यौवन से सम्पन्न बड़े घर में सम्भव होते हुए भी विद्या से हीन गन्धरहित किंशुक के फूल की तरह (मनुष्य) शोभा प्राप्त नहीं करता है। **भावार्थ 5**–विद्वान की संसार में प्रशंसा होती है। विद्वान सर्वत्र पूजा जाता है। (यह सब) विद्या से ही प्राप्त होता है। विद्या की सर्वत्र पूजा होती है।

4. (क) पुच्छ + मिव (ख) दुष्कु + लीनः
(ग) कुलीनो + अपि (घ) देवैः + अपि
(ङ) हीनः + च (च) निः + गन्धाः

5. स्वयं कीजिए। **6.** स्वयं कीजिए।

नवदशः पाठः – राष्ट्रभाषा

प्रत्येक राष्ट्र की एक राष्ट्रभाषा होती है जिसमें उस शासन के राजकीय निर्देशों के प्रसार उसी भाषा में हों, वही राष्ट्रभाषा मानी जाती है। सभी जगह ही उस देश की भाषा राष्ट्रभाषा की तरह मानी जाती है। भारत में आज तक कोई भाषा राष्ट्रभाषा उद्घोषित की गई है। परन्तु विदेशी भाषा में ही सब राजकीय कार्य प्रचलित हैं। राष्ट्रभाषा का यह उपहास ही है। इस विश्व में कहीं भी ऐसी व्यवस्था नहीं है। यद्यपि सभी जगह हिन्दी भाषा बिना बाधा के फैल रही है, तब भी कुछ छोटे विचारों से पूर्ण लोग देश में उत्तर-दक्षिण का भेद करते रहते हैं और हिन्दी भाषा का विरोध करते हैं।

उस संदर्भ में वे लोग दक्षिण से पूर्व के प्रति गलत प्रचार करते हैं; जैसे कुछ लोग मुम्बई नगर से लोगों को छोड़ने का प्रयास करते हैं। देश के सर्वाधिक लोग जिस भाषा को जानते हैं वह भाषा राष्ट्रभाषा होती है। यह तथ्य विचारकर सभी कारणों से यद्यपि हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा घोषित हो गई है, परन्तु फिर भी कुछ विरोधों के कारण और सबकी सन्तुष्टि के कारण अंग्रेजी भाषा को सहयोगी भाषा घोषित किया है। आज भी सभी राजकार्य उसी में प्रचलित हैं। अपने ही घर में बेचारी हिन्दी भाषा अपना पद नहीं पा सकी है। नए स्वतन्त्र बहुत से छोटे देशों ने भी अपनी देश की भाषा को ही राष्ट्रभाषा घोषित किया है। उसी में सभी कार्य प्रचलित हैं, परन्तु दुर्भाग्य से इस देश में आज भी पिछले अनेक वर्षों से विदेशी भाषा ही राष्ट्रभाषा के पद पर स्थित है। जो हिन्दी भाषा जानते हैं वे वैसा ही व्यवहार लोगों से सभी जगह भारत में बिना रुकावट के अपना कार्य करते हैं। भाषा से सम्बन्धी रुकावट कोई कठिनाई कही नहीं होती। पूर्व, पश्चिम, उत्तर अथवा दक्षिण हिन्दी भाषा सर्वाधिक फैली हुई है। हिन्दी जैसा प्रचार -प्रसार किसी अन्य प्रान्तीय भाषा में नहीं है। भारत की आधे से अधिक जनता इसी भाषा को मातृभाषा मानते हैं। आधुनिक काल में सब प्रकार से सर्वाधिक साहित्य हिन्दी भाषा में ही रचे जाते हैं। सभी प्रान्तों के निवासी हिन्दी भाषा के साहित्य को निर्माण करके विद्वानों के मन में बसकर हिन्दी भाषा के गौरव को प्रकट करते हैं। बहुत से मतों के अनुयायी का सर्वप्रथम यह कर्त्तव्य है कि सब जगह व्यवहार में लाये, उसे ही सब प्रकार से सर्वाधिक प्रचलित लोकहित में हिन्दी भाषा को ही मानकर सारे कार्य उसी में करें जिससे धन लाभ के साथ स्वाभिमान लाभ भी भारतीयों के लिए हो सके।

1. (क) राजकीय निर्देशादिकं प्रसारयति सैव राष्ट्रभाषा भवति। (ख) विदेशी भाषायाम् सर्वे राजकीय कार्य प्रचलित सैव राष्ट्रभाषा पदं भजत इति महती विडम्बना अस्ति। (ग) देशे सर्वाधिकजनाः यस्यां भाषायां भावन्ते सैव भाषा राष्ट्रभाषा भवति इति तथ्यं विचार्य सर्वकारेण हिन्दी भाषा उद्घोषिता। (घ) आधुनिक कालीनं सर्वविधं सर्वाधिकञ्च साहित्यं हिन्दी भाषायां रचितम् एव विद्यते। सर्वेषामेव प्रान्तानां निवासिनः हिन्दी भाषायां साहित्य सृजन्तो विदुषां मनांसि रञ्जयन्ति, हिन्दी भाषायां गौरवं च प्रकटी कुर्वन्ति। (ङ) सर्वकारस्य सर्वप्रथमम् इयमेव कर्त्तव्यम् यत् यां सर्वाधिकाः जनाः उच्चारयन्ति, यथा च सर्वत्र व्यवहारयन्ति। **2.** (क) राष्ट्रभाषा (ख) काठिन्यं (ग) समधिकाया जनताया (घ) प्रान्तानां, मनांसि। (ङ) प्रयासरताः **3.** (क) इस विश्व में कहीं भी ऐसी व्यवस्था नहीं है। (ख) कुछ छोटे विचारों से परिपूर्ण लोग देश के दक्षिणोत्तर भाग में भेद करते हैं। (ग) अपने ही घर में बेचारी हिन्दी भाषा को अपना स्थान प्राप्त नहीं हैं। (घ) अर्थलाभ के साथ स्वाभिमान लाभ को भारतीयों के लिए होना। (ङ) आधुनिक कालीन सभी सर्वाधिक साहित्य हिन्दी भाषा में रचे गए हैं। **4.** स्वयं करें। **5.** अतः बहुमत प्राप्त करने वाली सरकार का सर्वप्रथम यह कर्त्तव्य है कि जिसे सर्वाधिक मनुष्य उच्चारित करते हैं तथा जो सर्वत्र व्यवहार में प्रयोग करते हैं और सभी विधियों से कार्यों में सक्षम सर्वाधिक प्रचलित लोकहित वाली हिंदी भाषा में ही समस्त कार्य पूर्ण करें जिससे अर्थ लाभ के साथ-साथ स्वाभिमान लाभ भी भारतीयों को मिलेगा।

संस्कृत श्लोक-8

प्रथमः पाठः - वंदना

1. जिस देश में सदाचार परम्परा से आया हुआ होता है। वहाँ वर्णों के अन्तराल के बाद भी सदाचार का पालन होता है

2. प्रातःकाल शय्या छोड़ देनी चाहिए। ईश्वर का पहले स्मरण करना चाहिए। नित्यकर्म से निवृत्त होकर इसके पश्चात् अध्ययन करना चाहिए।

3. सत्य बोलना चाहिए प्रिय, बोलना चाहिए, अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए। प्रिय बोलना चाहिए झूठ नहीं बोलना चाहिए, यही सनातन धर्म है।

4. हमेशा व्यवहार में उदारता, सत्यता, पवित्रता, मधुरता होनी चाहिए कठोरता कभी नहीं होनी चाहिए।

5. गुरु माता और पिता श्रेष्ठ जन हैं। मन, कर्म और वाणी से निरंतर इनकी सेवा करनी चाहिए।
6. मित्र से कलह करके कोई मनुष्य सुखी नहीं रह सकता। इस कारण ऐसा प्रयास करना चाहिए कि ऐसा न हो।

द्वितीयः पाठः – रात्रिभोजम्

आज आठ बजे का समय है, यह रात्रि के भोजन का समय है।
माता– सामी और रिया आओ। यह रात के भोजन का समय है, अपने हाथ शीघ्र धो लो।
सामी– आज तुमने क्या पकाया है माता?
माता– यहाँ वह चीज है जो तुम्हें पसन्द है। अनुमान करो।
सामी– पनीर और चावल। रिया–
पिता– ये दोनों ही। तुम दोनों का अनुमान सही है, अब खाने के लिए तैयार हो जाओ।
माता– रूचि के अनुसार भोजन ग्रहण करो, वह ही स्वाद देने में समर्थ है।
पिता–ध्यान से अपने भोजन को चबाना चाहिए।
सामी– पिताजी तुमने हमें लम्बे समय से कोई कथा नहीं कही है पिताजी आज शुरू कीजिए।
पिता– रिया तुम अपना भोजन गिराते हुए खा रही हो। सावधान रहो।
रिया– मुझे क्षमा करें।
सामी– पिताजी, मैंने तो भोजन समाप्त कर लिया, कृपया कथा कहना शुरू कीजिए।
पिता– सबसे पहले अपने दाँत साफ करो, उसके बाद हम आराम घर में आराम की मुद्रा में बात करेंगे, सोने के लिए जाने से पहले दाँत साफ करते हैं।
सामी, रिया– हम दोनों कर रहे हैं पिताजी।
1. (क) अधुना अष्टवादन समयम् अस्ति्। (ख) ध्यानेन स्वभोजनं चर्वर्णेथः इति निर्देशतिः। (ग) पनीर मुण्डचणकः भर्जतः कारवेल्लकः च पचति। (घ) पितुः ध्यानेन सावाधानेन च भोजन कृत्वां वदति। **2.** (क) रात्रिसमयम् (ख) भोजनं (ग) पतनीकृतैव (घ) प्रक्षाल्य **3.** (क) इदं रात्रि भोजसमयम् अस्ति। (ख) त्वम् किम् खादितुम रोचते। (ग) अहम् तु भोजनं समापितः (घ) सर्वप्रथम स्वदन्ताज् प्रक्षाल्य। **4.** (क) यह रात्रि के भोजन का समय है। (ख) कल्पना करो, यह क्या है? (ग) ध्यान से अपना भोजन खाओ। (घ) कृपया कथा कहना शुरू करो। **5.** (क) इयम् रात्रि वेला अस्ति। (ख) अधुना खादितुम सज्जीभव। (ग) त्वम् अस्मान् चिरात् किमपि कथा न कथितवान्।

तृतीयः पाठः – हास्यकथा

एक बार वोहारिया नाम का कोई आदमी यात्रा करते हुए कुएँ के पास आ गया। जल लेने के लिए जैसे ही वह कुएँ के समीप गया, वैसे ही कुएँ के अन्दर से बकरी की आवाज सुनी। जब उसने कुएँ में देखा तो एक बकरी दिखाई दी। सूखे हुए इस कुएँ में थोड़ा-सा जल ही था। वोहारिया ने बकरी की कमर में रस्सी बाँधकर बाहर निकालने का प्रयत्न किया। उसी समय कोई कुनामा नाम का व्यापारी वहाँ आया जिसके पास बहुत से ऊँट थे।
वह वोहारिया से पूछने लगा– प्यास बुझाने के लिए यहाँ जल भी है? वोहारिया ने उत्तर दिया– ''इस कुएँ में थोड़ा-सा जल है। वास्तव में यह बकरी का कुआँ है।'' उसके सामने ही वोहारिया ने बकरी को बाहर निकाला। बकरी को देखकर व्यापारी आश्चर्य चकित हो गया। कुनामा ने कहा– इस कुएँ में बकरी कैसे आई; कैसे आपने उसे निकाला? वोहारिया ने उत्तर दिया– ''रात में बकरी के सींग इस कुएँ में डाल देता हूँ। सुबह एक बकरी निकलती है रस्सी से उसे बाहर निकालता हूँ।'' उसे सुनकर कुनामा चकित हो गया और बोला– ''यदि मेरे पास भी ऐसा ही कुआँ होता तो .... कुछ समय बाद कुनामा बोला– यदि यह कुआँ तुम मुझे दोगे तो मैं तुम्हें बहुत सारा अनाज दूँगा।'' वोहारिया बोला– ''एक वर्ष में इस कुएँ से तीन सौ पैंसठ बकरियाँ निकलतीं है।'' व्यापारी ने मन में सोचा– ''यदि मैं छह ऊँटों से कुएँ को खरीदूँगा तब भी कुछ हानि नहीं है।'' कुनामा बोला– ''छह ऊँटों को ले लो यह कुआँ मुझे दे दो।'' वोहारिया कुछ सोचते हुए बोला– यदि तुम्हें यह कुआँ अच्छा लग रहा है तो ले लो। कुनामा खुश होकर बोला– ''हे देव! आपका कल्याण हो।'' ऊँटों को लेकर वोहारिया जब जाने लगा तब कुनामा ने उसका नाम पूछा। उसने उत्तर दिया– ''मैं कहाँ नाचूँ'' यह कहकर वोहारिया दक्षिण दिशा की तरफ तेजी से चला गया। वोहारिया ने अपना वास्तविक नाम नहीं बताया। ''मैं कहाँ नाचूँ''

यह बोलकर व्यापारी रहस्य मयी तरीके से मन में हँसने लगा। व्यापारी ने शाम को एक सींग कुएँ में डाल दी। सुबह उठकर जब कुएँ में देखा वहाँ एक भी बकरी न देखकर विचार करने लगा क्या मुझसे कोई भूल हो गई। दूसरे दिन उसने बहुत से सींग कुएँ में डाल दिए परन्तु उसमें बकरी नहीं थी। ''धूर्त ने मुझे ठग लिया है।'' अपने हाथों को सिर पर रखकर भूमि पर बार-बार गिरकर कहने लगा- मैं कहाँ नाचूँ मैं कहाँ नाचूँ। सुनकर लोग हँसते और कहने लगे- ''आप यहाँ नाचें''

1. (क) कूपाभ्यन्तरात् वोहारिया अजाया: शब्दम् अश्रृणोत्। (ख) बोहारिया अवदत्– "कूपोऽस्मिन् यत्किंचिज्जलं विद्यते वस्तुतऽयम जाकूप:।" (ग) कुनामा वोहारियामहोदयात् कूपम् अयाचत्। (घ) 'मैं कहाँ नाचूँ' इति प्रहसनाय वोहारिया स्वनाम कृत:। **2.** (क) अजाकटिप्रदेशे (ख) कूपे (ग) कूपमेनं (घ) षडुष्ट्रान् (ङ) श्रृंगमेकं। **3.** (क) तम् एका अजा अपश्यत्। (ख) रात्रौ अजा श्रृंग कूपेऽस्मिन् क्षिपामि। (ग) ईश्वर: तव कल्याण करोतु। (घ) प्रात: उत्थाय यावत्स: कूपे अपश्यत् तदा तत्र एकापि अजा नासीत्। (ङ) कोऽपि व्यवहारी तत्र आगत:। **4.** (क) श्रृंगे–श्रृंगयो: श्रृंगेषु (ख) व्यवहार्य–व्यवहार्यो:–व्यवहार्याम् (ग) कूपेन–कूपाम्याम् कूपै: (घ) नराय–नराभ्याम् नरेभ्य: (ङ)अजाया:–अजयो: अजानाम्। **5. (क)** (i) रज्जुम् + आयोज्य
(ii) ताम् + अजाम् (iii) समक्षम् + इव
(iv) मत्पार्श्वे + अपि (v) कथम् + अस्मिन्
(vi) कूपे + अस्मिन्
(ख) (i) यत्किंचिज्जलम् (ii) षडुष्ट्रै:
(iii) कथञ्च (iv) कूपमेनं (v) कूपादस्मात्
(vi) नोच्चार्यं
(ग) (i) सुना (ii) ऊँटों को लेकर
(iii) रस्सी से (iv) व्यापारी
(v) हाथों पर सिर रखकर
(vi) जल लेने के लिए।
(घ) (i) आगच्छत् (ii) नेत्स्यामि (iii) अज: (iv) तुभ्यम् (v) दिवसे (vi) संध्याकाले

चतुर्थ: पाठ: – नारिकेल-कृषि:

एक बार कैलाशवासी भगवान शिव ने पार्वती के साथ समुद्र यात्रा की और लोमोलोम द्वीप पर पहुँचे। दोनों ही द्वीप तट पर घूम रहे थे। इस द्वीप पर तिमोदी नाम का कोई अनाथ युवक रहता था। वह अत्यन्त निर्धन था। समुद्र से मछलियाँ लाकर पर्वतों से कन्द मूल फल लाकर वह अपना पेट भरता था। तिमोदी गहरे समुद्र में बहुत कुशलता से नाव चलाता था। फिजी द्वीप में उसके समान कोई नाविक नाव चलाने में नहीं था। एक बार किसी धनी नाविक ने अहंकार से युक्त होकर इस नाविक को पराजित करने की चेष्टा की। उसने कहा- हम द्वीप से साथ-साथ किनारे जाएँगे जो पहले पहुँचेगा, वह ही विजेता माना जाएगा अन्यथा विजेता को अपने हाथों से अमानत के रूप में दस नाव प्रदान करेगा। दोनों के बीच उस दिन का समय निर्धारित हो गया। निश्चित दिन नाविकों ने अपनी-अपनी नाव लेकर विजय यात्रा शुरू की। कुछ समय पश्चात् सागर में तेज समुद्री तूफान आया।

दुर्भाग्य के कारण तिमोदी युवक की नौका समुद्र जल में डूब गई। जब तक नाव पुन: चलती तब तक धनिक नाविक दूर तक आ गया और विजयी हो गया। पराजित तिमोदी ने पहले की गयी सारी प्रतिज्ञाओं को स्वीकारा। चिन्ताग्रस्त तिमोदी घर से निकल गया। भूखे रहकर चार दिन व्यतीत हो गए। आज वह चल भी नहीं सकता था। एक वृक्ष के नीचे बैठकर उच्च स्वर में रोने लगा। इसी द्वीप तट पर घूमते हुए शिव और पार्वती उस वन में पहुँचे। किसी के रोने की आवाज सुनकर पार्वती शिव ने वहाँ जाकर तिमोदी की दशा को देखकर भूतनाथ बोले- वत्स (बेटा) तुम्हारे हाथ कहाँ गए, तुम क्यों रोते हो? तिमोदी ने सारा घटनाक्रम सुनाया। सारा वृत्रान्त जानकर शिव भी करुणा से काँपने लगे। शिव ने अपनी भाषा से आँधी से फल लाकर भक्त तिमोदी को देकर कहा- तुम यह फल लेकर खेती करो। इसका फल जल के साथ ही उगता है। आश्चर्यचकित तिमोदी ने भगवान से पूछा- ''प्रभु इस वृक्ष का क्या नाम है? हाथों के बिना मैं कैसे उन वृक्षों की खेती करने में समर्थ होऊँगा।'' आशुतोष शिव बोले- ''चिन्ता न करो वत्स। सब ठीक हो जाएगा।'' इतना कहकर पार्वती के साथ शिव अन्तर्ध्यान हो

गए। शिव ने कैलाश पहुँचकर अपने पुत्र गणनायक गणेश को आदेश दिया- बेटा गणेश! केरल प्रदेश जाओ वहाँ से नारियल लेकर फिजी द्वीप में स्थित भक्त श्रेष्ठ तिमोदी को नारियल की खेती के विषय में निर्देश देकर शीघ्र आओ।'' ''आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।'' यह कहकर पिता को प्रणाम कर गणेश ने उस दिशा में प्रस्थान किया जहाँ तिमोदी ने तप आरंभ कर दिया था। विनय से युक्त तिमोदी ने गणेश को बार-बार प्रणाम किया। शिवपुत्र गणेश ने तिमोदी को नारियल के फल को बोने की विधि बताकर खुद कैलाशधाम चले गए। तिमोदी ने एक नारियल फल से अनेक फलों को पैदा किया। कहते हैं शिव त्रिनेत्रधारी हैं। यह नारियल फल ही तीसरा नेत्र है। शिव के सिर पर जटाएँ इस फल की जटा हैं। गणेश केंकड़े पर चढ़कर तिमोदी के पास गए थे, इस कारण सभी केंकड़े की पीठ पर गणेश की मूर्ति को विराजमान करते हैं।

1. (क) लोमोलोमो द्वीपे अनाथो युवकोऽवसत्। (ख) तिमोदी स्वोदरं परिपूर्तये समुद्रात् मत्स्यानानीय पर्वतेभ्यः कंदमूल फलान्यादयः भ्रमति स्म। (ग) तिमोदीधनिकनाविकयोर्मध्ये प्रतिज्ञा अभवत्– अस्माद् द्वीपात् स्वनावा सार्द्धं वीती लबू द्वीपे यः पूर्वं प्राप्स्यति सः एव विजेता गण्यते चान्यथा विजयिने स्वहस्तौ अधमर्णरूपे स्थापयित्वा दशनावः प्रदातव्याः। (घ) यथा शिवः त्रिनेत्रधारी वर्तते तथैव नारिकेल फलेष्वपि त्रीणि नेत्राणि भवन्ति। शिवशिरसि जटावत् फलेस्मिन् जटाः समुत्पद्यन्ते। (ङ) शिवः तिमोदीम् अवोचत्–"चिन्तां मा कुरु वत्स! सर्वं सुष्ठुं भविष्यति" इति कथयित्वा पार्वत्या सह शिवस्तु चान्तर्दधौ। शिवः कैलासमनुप्राप्तः स्वसुतं गणनायकं गणेशं आदिदेश–"वत्स गणेश! गच्छ केरलप्रदेशं, तस्मान्नारिकेलं, नीत्वा फिजीद्वीपस्थं भक्तप्रवरं तिमोदीं नारिकेलकृषिविषये निर्दिश्य शीर्घ समागच्छ।" **2.** (क) मत्स्यानानीय (ख) महावातः (ग) करुणावशाच्चकम्पे (घ) विनयान्वितस्तिमोदी (ङ) कर्कटमारुह्य, कर्कटपृष्ठेषु। **3.** (क) सः हस्ताभ्यां बिना मत्स्यान् ग्रहणाय समर्थं न अशक्नोत्। (ख) तिमोदी गभीरे समुद्रे कुशलतया नौकां चालयतिस्म। (ग) तिमोदी सम्पूर्णं वृत्तान्तं शिवाय निवेदयत्। (घ) वत्स चिन्तां मा कुरु। (ङ) भगवन्! तस्य वृक्षस्य को नामधेयम्।

4. (क) द्वीपे अनेका अनाथाः न्यवसन्! (ख) कन्दमूलफलमादाय ते जीवन्ति। (ग) पुनः पुनः करुणरोदनध्वनिं निशम्य ताः द्रवीभूताः अभवन्। (घ) क्व गतौ तव हस्त-पादाः कथञ्च विलपथ? (ङ) ते विवाहं कृत्वा सुखेन स्वकालं यापयामासाः।

5. (क) (i) द्वीप + अस्मिन्
(ii) निर्धन + अश्चासीत् (iii) नाविको + अपि
(iv) कथम् + च (v) काल + अन्तरम्
(vi) करुण + अवशाच्चकम्पे
(ख) (i) कश्चिद नाथः (ii) प्रत्यवोधत्
(iii) वृक्षस्याधः (iv) शिवस्तु (v) फलेष्वपि
(vi) चान्यथा **(ग)** (i) मछली लेकर
(ii) घूमती हुई (iii) वृक्षों का (iv) अपना पुत्र
(v) आधा (vi) रखकर–स्वयं करें।
(घ) (i) पार्वत्या विहाय (ii) अवसूह्य
(iii) अभक्तम् (iv) पादाभ्याम् (v) त्यक्त्वा
(vi) दूरम्।

पञ्चमः पाठः – एकेनापि

1. एक पत्र के होते हुए भी सिंहनी निर्भय सोती है। दस पुत्र के होते हुए भी गधी लादी जाती है। (भार ठोती है)

2. एक गुणवान पुत्र चुनना चाहिए, सौ मूर्ख पुत्र नहीं। एक चन्द्रमा अँधेरा दूर कर देता है तारों का समूह नहीं।

3. एक वृक्ष के सुगन्धित पुष्प सुगंध से वन को सुगन्धित कर देते हैं जैसे एक सुपुत्र पूरे कुल का नाम करता है।

4. एक सूखे वृक्ष के आग से जल जाने से वन उसी प्रकार जल जाता है जैसे सारा कुल कुपुत्र के होने से नष्ट होता है।

5. एक सुपुत्र ज्ञान से युक्त ही अच्छा है जैसे रात चंद्रमा से प्रकाशित रहती है वैसे ही सारा कुल प्रसन्नचित रहता है।

6. शोक और दुख देने वाले बहुत से पुत्रों से क्या लाभ है। एक ही श्रेष्ठ पुत्र हो, जहाँ कुल आराम से रह सके।

7. एक ही माता से उत्पन्न एक नक्षत्र में उत्पन्न बेर और काँटे की तरह समान और शील वान नहीं होते।

1. (क) एकेन पुत्रेण सह सिंही निर्भयं स्वपिति किंतु सदैव दशभि: पुत्रै: रासभी भारं वहति। (ख) एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना वनं वासितं भवति। (ग) यथा एकेन शुष्कवृक्षेण दह्यमानेन वह्निना दह्यते तथा एव कुपुत्रेण सर्वकुलं दहति। (घ) बदरिकंटकौ एकोदर समुद्भूतौ एकन क्षत्रजातकौ भवत: एषा तयोर्मध्ये समानता। (ङ) एक: गुणी पुत्र: कुलस्य रक्षक:, संरक्षक भवति बहव: पुत्रा: तु परिवारे कलह कारका: भवन्ति। **2.** (क) मूर्खा। तमो, तारागणोऽपि।। (ख) शुष्कवृक्षेण, वह्निना। दह्यते।। (ग) आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चंद्रेण। (घ) एकनक्षत्रजातक:। बदरिकंटका।।

3. (क) उपसर्ग–सु, शेषपद–पुत्रेण
(ख) उपसर्ग–एक:, शेषपद–चन्द्र
(ग) उपसर्ग–सु, शेषपद–वृक्षेम
(घ) उपसर्ग–तत् शेषपद-वनम्
(ङ) उपसर्ग–सम्, शेषपद–उद्भूता

4. (क) (i) एकेनापि (ii) समुद्भूता (iii) जातैर्बहुभि (iv) तद्वनं (तद्वनं) (v) तारागणोऽपि (vi) एकश्चन्द्र:
(ख) (i) वरम + एको (ii) एक + उदर: (iii) कुलं + यथा (iv) नि: + भयम् (v) शत + अन्यपि (vi) तारागण: + अपि

5. (क) आभासस्य, आभासयो:, आभासानाम् (ख) वृक्षेण, वृक्षाणाम्, वृक्षै (ग) रासभीम्, रासभी, रासभी: (घ) एकोदराय, एकोदराभ्याम्, एकोदरेभ्य: (ङ) हरौ, हर्यो:, हरिषु

6. (क) 'वरमेक: गुणीपुत्र:' अत्र तव कल्याणं भविष्यति। (ख) वृक्ष: प्राणवायु: ददाति। (ग) रासभी भारं वहति। (घ) एकोदर: जना: सहोदर भवन्ति। (ङ) पुष्पितेन वृक्षा: शोभनम् उपजायेत।

षष्ठ पाठ: – मनसश्चेन्द्रजालम्
(प्रथमो भाग:)

प्राचीन समय में पेरू देश में एक शक्तिशाली राजा राज्य करते थे। दूर तक उनका साम्राज्य फैला हुआ था। सन्देशवाहक राजद्वार पर आकर सभी सूचनाएँ दिया करते थे। हुलाची नाम का नौकर राजा का विश्वास पात्र था। यह वीर हुलाची दयालु भी था। मार्ग में जब गरीब को देखता था तब उसकी सेवा में संलग्न हो जाता था। तब वह राजा का महत्वपूर्ण संदेश भी भूल जाता था। संदेश न मिलने पर हानि हो जाती थी। उस दशा में राजा उस पर बहुत क्रोध करता था। राजा ने संबोधित करके कहा– संदेश भेजने में यदि विलंब होता है तब वह दण्ड का भागी होगा। हुलाची चुप ही रहा। लेकिन स्वभाव परिवर्तन करने में समर्थ न हो सका। एक बार राजा का संदेश लेकर वह जहाँ से जा रहा था उस मार्ग पर बेहोश किसी आदमी को पड़े देखा। इच्छा होने पर भी वह राजा के नियम को याद करके आगे चल दिया। वह पर्वत मार्ग से जा रहा था। वहाँ वर्षा प्रारम्भ हो गई। सामने ही फिसलती हुई एक वृद्धा को हुलाची ने देखा। पत्थर पर गिरने से चोटिल वृद्धा निश्चेतना शील हो गई। यदि वह वृद्धा की सेवा करता तो संदेश भेजने में देर हो जाती, परन्तु जब वृद्धा स्वस्थ हो जाएगी तभी जाएगा उसने निश्चय किया। हुलाची ने वही वृद्धा के लिए कुटिया तैयार की। उसकी प्राथमिक चिकित्सा की, उसे स्वस्थ करके आगे चल दिया। वृद्धा ने उसे आशीर्वाद देकर उसका अभिनन्दन किया। सन्देश भेजने में हुई देर के कारण हुलाची मन में भयभीत हो गया। राजा की आज्ञा से हुलाची महोदय को देश से निकाल दिया गया। हुलाची निकल गया। कन्दमूल फल खाकर अपना पेट भरने लगा। दुखियों को देखकर उनकी सेवा में लग जाता था। एक बार वन में घूमते समय उसने एक कुटिया देखी। भूखे हुलाची ने वहाँ से निकलती हुई एक वृद्धा को देखा। वह वही वृद्धा थी जिसकी फिसलने पर रक्षा की थी। वृद्धा ने उसे पहचान लिया उसने उसे भोजन कराया। भोजन करते समय उसकी आँखें आँसुओ से भर गईं, क्योंकि बहुत दिन के बाद उसने अपना पेट भरा था। उसके बाद उस वृद्धा ने उसके पैर धुलवाए, मुँह धुलवाया। आश्चर्य चकित हुलाची ने वृद्धा से कहा– मैं जादूगरनी, परोपकार करने वाली, स्वार्थ रहित लोगों को चुनती हूँ। तुम आज मुझे मिल गए तुम सज्जन हो। भोजन के बाद हुलाची सो गया।

1. (क) हुलाची राज्ञो विश्वासपात्र: आसीत्। (ख) हुलाची अवस्थां विलोक्य राजा क्रुद्धो

भूय तमुद्बोधयत्– प्रेषणे संदेशे यदि विलम्बं स्यात् तर्हि सः दण्डभाग्भविष्यति।
(ग) वृद्धामेकां प्रस्खलन्तीं दृष्ट्वा हुलाची प्रस्तरखण्डाघातेन निश्चेत नागतां वृद्धां रक्षाम् अकरोत् सेवाञ्च। (घ) हुलाची वृद्धा प्राथमिकीं चिकित्सां कृत्वां तां स्वास्थां विधाय च स्वलक्ष्यं प्रति अगच्छत्। (ङ) वने भ्रमन् हुलाची उटजमेकम् अपश्यत्। **2.** (क) विश्वासपात्रमासीत (ख) वर्षा (ग)भविष्यति (घ) अवलोक्य (ङ) भोजनान्तरं। **3.** (क) हुलाची नाम दूत नृपस्य विश्वासपात्र आसीत्। (ख) राजा तं अक्रुधयत्। (ग) हुलाची तत्र वृद्धायै उटजं निर्मापयत्। (घ) वने भ्रमन् तम् उटजेकम् अपश्यत्। (ङ) हुलाची वृद्धायाः सेवां करोति। **4.** (क) संदेशवाहकाः राजां सूचयन्ति। (ख) एकदा नृपस्य संदेशं नीत्वा ते गच्छन्ति। (ग) वृद्धा स्वस्थाः भविष्यन्ति।
(घ) ते वृद्धायाः प्राथमिकीं चिकित्सां कुर्वन्ति।
(ङ) ते प्रस्खलन्तीं एकां वृद्धामपश्यन्।
5. (क) (i) प्रसृतमासीत्
(ii) विश्वासपात्रमासीत् (iii) संदेशमापि
(iv) वृद्धामेकां (v) तूष्णीमेव
(vi) निर्वासनमापि
(ख) (i) वृत्तम् + सूचयन् (ii) तत् + एव (iii) संलग्न् + अभवत् (iv) च + अश्रुपूर्णे (v) स्व + उदरम् (vi) च + अकारयत्
(ग) (i) फिसलती हुई। (ii) मन से
(iii) अपना पेट (iv) संदेश न मिलने पर
(v) परोपकार में लगा हुआ (vi) देर से
(घ) (i) स्वार्थसहितम् (ii) भोजनान्पूर्वम् (iii) सुखेन (iv) यत्रैव (v) आगतः (vi) विस्मृत्य। **6.** हुलाची को पास ही एक बुढ़िया फिसलती हुई दिखाई दी। पत्थरों के आघात से वह बुढ़िया बेहोश हो गई थी। यदि वह बुढ़िया की सेवा करता है तो संदेश भेजने में विलंब होता है परंतु जब बुढ़िया स्वस्थ होगी तब मैं जाऊँगा। यह निश्चय उसने किया।

सप्तमः पाठः – मनसश्चेन्द्रजालम्
(द्वितीयो भागः)

वह वृद्धा बोली– ''मैं जादूगरनी हूँ, परोपकारी, स्वार्थरहित लोगों की मैं सहायता करती हूँ। हे हुलाची! ''तुम सज्जन हो।'' यह कहकर उसने उसे जूते दिए फिर कहा– ''हे हुलाची! इन जूतों को लेकर कहीं भी उड़कर जाने में समर्थ रहोगे।'' हुलाची ने वृद्ध को धन्यवाद दिया और उड़कर राजा के समीप आ गया। राजा ने पुनः संदेशवाहक के कार्य में नियुक्त कर लिया। हुलाची क्षणभर में जूतों को पहनकर संदेश भेजता व ले आता था। उसके कार्य से राजा बहुत संतुष्ट हुआ। एक बार हुलाची उड़कर आया। अचानक खून से सना एक व्यक्ति देखा। उसको प्राथमिक चिकित्सा देकर पुनः आगे चल दिया। विलम्ब होने पर राजा ने उसे दण्ड दिया। हुलाची ने विचार किया– ''मैं अपना कार्य करूँगा खाली समय में गरीबों की सेवा करूँगा'' एक बार वह उड़कर जा रहा था। अचानक उसे देखकर जब वह भूमि पर उतरा। उसने फिर उड़ने की चेष्टा की, परन्तु सफल नहीं हुआ। वह विचार करने लगा– जूतों का प्रभाव समाप्त हो गया, उसी समय वह वृद्धा प्रकट होकर बोली– ''इसमें कोई रहस्य है।'' तभी हुलाची के सामने एक कबूतर खून से सना हुआ, भूमि पर गिरा। दया के कारण उसने उसकी प्राथमिक चिकित्सा की। फिर जूते लेकर हुलाची उड़ा। सहसा हुलाची भूमि पर उतरा। वृद्धा के जूते उसको देकर कहा– ''माता यह जूते लेने की मेरी इच्छा नहीं है।'' आश्चर्य चकित वृद्धा ने पूछा– ''क्यों बेटा'' हुलाची बोला– ''आज मैंने जाना मैं कैसे उड़कर गया। जब मैने विचार किया– खून से सने कबूतर को लेकर उड़ूँ, तब नहीं उड़ सका। मेरा मन कबूतर के प्रति संसक्त था। आज से मैं बिना जूते के कार्य करूँगा। हँसती हुई वृद्धा बोली– बेटा! तुम्हारा कथन उचित है मनोबल के सामने कोई शक्ति नहीं होती। तुम निरन्तर दीनों की सेवा करो, उससे तुम्हारा कल्याण होगा। तब से हुलाची सभी कार्यों को छोड़कर परोपकार में लग गया।
1. (क) पेरुदेशस्य नृपेन हुलाचीं संदेश प्रेषणे बिलम्बेन कारणेन देशात् निर्वासनं कृतम्। बुभुक्षितः हुलाची उटजयेकम् अपश्यत्। सः तम् उटजे तां वृद्धाम् अपश्यत् यस्याः अवसरमेकं सहायतां कृतम्। सा वृद्धा तां भोजनं प्रेषयत् (ख) सा वृद्धा हुलाचीं पादत्राणं प्रायच्छत्। (ग) दण्डं प्राप्य हुलाची व्यचारयत्–अहं

स्वकार्यं करिष्यामि, रिक्तसमयेदीनानां सेवाञ्च। (घ) यदा हुलाची अवदत्–पादत्राणस्य प्रभावः परिसमाप्तः तदैव सा वृद्धा वदति–'नैतत् सम्भवति' इति। (ङ) प्रहसन्ती वृद्धा अवदत्–"वत्स! समुचितं ते कथनम्। मनोबलं सम्मुखे न कापि शक्तिः प्रभवति। त्वं निरंतरं दीनानां सेवां कुरु, तेन ते कल्याणं संपत्स्यते।"
2. (क) पादत्राणं (ख) रक्तरंजितं
(ग) चिचेष्ट (घ) अभिलषामि (ङ) मनोबल सम्मुखे। **3.** (क) एतौ पादत्राणौ परिधाय यत्रकुत्रापि उड्डीयगन्तुं समर्थः भविष्यसि। (ख) तस्य एतत् कार्येण राजा प्रसन्नः अभवत्। (ग) सः अपश्यत् यत् सः भूमे अवतरति। (घ) अपि रहस्यमेतत् (ङ) अहं ज्ञातम् यत् अहं केन कारणेन उड्डयम्। **4.** (क) वयं ऐन्द्रजालिकी स्मः। (ख) ते समुड्डीय राज्ञसमीपं गच्छन्ति। (ग) विलम्बे सञ्जाते नृपाः तम् अदण्डयन्। (घ) वृद्धाः अवदन्। (ङ) ताः सर्वाणि कार्याणि विहाय परोपकारेण संलग्नाः अभवन्। **5. (क)** (i) अवसरमेकम्
(ii) नृपस्तं (iii) कुत्रापि (iv) जनमध
(v) क्षणेनैव (vi) नृपस्तमदण्डयत्
(ख) (i) सत् + जनः + त्वम्
(ii) सेवाः + च (iii) सम् + उड्डीयम् + अगच्छत् (iv) न + उड्डयितुम्
(v) पुनः + च + अग्रे (vi) रहस्यम् + एतत्
(ग) (i) पहनकर–उपाहनौ परिधाय सा विद्यालयं गच्छति। (ii) उड़कर–खगाः वितीर्य वृक्षात् वृक्षं गच्छन्ति। (iii) जमीन पर उतरा–खगाः आकाशात् भूमाववततार। (iv) खून से रँगा–विवादे सः रक्त रंजितम् अभवत्। (v) भेजा–सः पत्रं प्रेषयत् (vi) जूते से–खञ्जः पादत्राणेन गच्छति। **(घ)** (i) कपोता
(ii) अनुड्डीयम् (iii) विमुखम्
(iv) अरहस्यमयम् (v) खम् (vi) अनेकम्

अष्टमः पाठः – नीतिवचनानि

1. जिस देश में न सम्मान हो, न कमाई का साधन, न बन्धु हो, न विद्या के आगमन का साधन हो उस देश को छोड़ देना चाहिए।
2. रोगी होने पर, बुरी संगत में, अकाल पड़ जाने पर या शत्रुसंकट के समय, राजा के द्वार पर, श्मशान में जो रहता है वह बन्धु है।
3. दुर्जन और सर्प में से सर्प को चुनना चाहिए, वही श्रेष्ठ है दुर्जन नहीं। क्योंकि साँप तो एक बार ही डसता है दुर्जन तो पग पग पर डसता है।
4. कोयल का रूप स्वर है स्त्री का रूप पतिव्रता धर्म है विद्या कुरूप का रूप है तपस्वियों का रूप क्षमा है।
5. अधिक सुंदरता के कारण सीता है। अधिक अहंकार के कारण रावण, अति धन बलि है अति सभी जगह बुरी है।
6. अकेले में तपस्या, दो के साथ पढ़ना, तीन होने पर गाना, चार बाहर जाने में तथा पाँच या अधिकरण क्षेत्र में होने चाहिए।

1. (क) यस्मिन् देशे सम्मानः न स्यात्, वृत्ति न स्यात्, बान्धवाः न स्यात् अपि च विद्यागम न स्यात्। तस्मिन् देशः नराय परिवर्जयेत्।
(ख) सर्पः समयेन दंशति किन्तु दुर्जनः पदे-पदे दंशति। (ग) स्त्रीणां रूपं पतिव्रतम् अस्ति। (घ) अतिरूपेण सीता (हृतः) रावणः अतिगर्वेण (मृतः) अन्ये च बलिः अति दानात् तथा हि अति सर्वत्र वर्जयेत्। (ङ) जले तैलं खले गुह्यं पात्रेदानं प्राज्ञे शास्त्र च स्वयं विस्तारं याति। **2.** (क) दुर्भिक्षे। राजद्वारे, यस्तिष्ठति।। (ख) सर्पस्य। दंशति, दुर्जनस्तु।। (ग) अतिरूपेण, रावणः। बर्लिदत्वा।। (घ) द्वाभ्यां त्रिभि चतुर्भिगमनं, पञ्चभिबहुभी।।
3. (क) (i) वृत्तिर्न (ii) चतुभिर्गमनम्
(iii) दुर्भिक्षे (iv) यस्तिष्ठति (v) बर्लिदत्त्वा
(vi) विद्यालय। **(ख)** (i) यः + तिष्ठति
(ii) दुर्जनः + तु (iii) विद्या + आगमः
(iv) कः + चित् (v) मनाक् + अपि
(vi) अतिदानात् + बलिः। **(ग)** (i) विद्या आना (ii) बड़ा (iii) स्त्रियों का (iv) छोड़ देना चाहिए (v) अत्यंत सुंदरता (vi) रोग में (से)
4. (क) वर्जयति– वर्जयतः–वर्जयन्ति
(ख) आगच्छ– आगच्छतम् –आगच्छत
(ग) अतिष्ठः–अतिष्ठतम्– अतिष्ठत्
(घ) दंशेत्– दंशेताम्–दंशेयुः
(ङ) दास्यामि –दास्यावः– दास्यामः।
5. (क) मूलशब्द–प्राप्त, लिङ्ग–नपुंसक, विभक्ति–सप्तमी, वचन–एकवचन
(ख) मूलशब्द–गायन, लिङ्ग–नपुंसक, विभक्ति–द्वितीया, वचन–एकवचन

(ग) मूलशब्द–पद, लिङ्ग–नपुंसक, विभक्ति–सप्तमी, वचन–एकवचन
(घ) मूलशब्द–गुह्य, लिङ्ग–नपुंसक, विभक्ति–द्वितीया, वचन– एकवचन
(ङ) मूलशब्द–अतिदान, लिङ्ग–नपुंसक, विभक्ति–पञ्चमी, वचन–एकवचन।

6. बीमारी में, कार्य के समय, संकट (अकाल में), शत्रु संकट में, राज दरबार में, श्मशान में जो उपस्थित होता है वही बंधु है।

कोयलों का रूप स्वर है, नारी का रूप पतिव्रत धर्म है, कुरूपों की विद्या रूप है, तपस्वियों का रूप क्षमा करना है।

अकेले रहकर तपस्या (भजन) करना, दो रहकर पढ़ना, तीन होकर गाना, चार होकर (कहीं) जाना तथा पाँच से अधिक होकर युद्ध में जाना चाहिए।

नवमः पाठः – दीपमालिकोत्सवः

पुराण अथवा वैदिक साहित्य में विविध प्रकार के उत्सवों का वर्णन दृष्टिगोचर होता है। संस्कृत साहित्य में तो सारे नाटकों, महोत्सवों का वर्णन दिखाई देता है। मनुष्य को स्वभाव से ही महोत्सवप्रिय देखकर सरस्वती के साधक कालिदास ने कहा है–
''मानव उत्सव प्रिय होते हैं।''

भारतीय उत्सवों में दीपावली का स्थान श्रेष्ठ है। शरद ऋतु का यह त्योहार सभी आनन्द से मनाते हैं। यह उत्सव सभी उत्सवों में प्रमुख है। रामायण की कथा प्राचीन है। रघुकुल के मणि भगवान रामचन्द्र रावण को मारकर पुनः अपनी अयोध्यापुरी वापस आए थे। तब उनके आने की खुशी में सभी अयोध्यावासियों ने अपने घरों को दीपों की मालाओं से सजाया था। इस विषय में यह कहावत है कि परस्पर सहयोग के द्वारा समुद्रमंथन के समय सुर और असुरों ने इसी दिन भगवती लक्ष्मी को सागर में से निकलते देखा था। यह भी कहा जाता है जिसकी प्रमाणिकता प्रतीत होती है कि कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को धनवन्तरी, चतुर्दशी को सुरभि की उत्पत्ति का वर्णन है उसके पश्चात् अमावस्या को भगवती महालक्ष्मी के आने का वर्णन है। अतः दीपावली का उत्सव पाँच दिनों का होता है। उत्सव दिवस के पहले लोग घरों को साफ करते हैं। चित्रों पर फूल की माला चढ़ाते हैं। वे नए वस्त्र धारण करते हैं। इस समय बाजार की शोभा भी देखने लायक होती है। प्रसन्न मुख वाले लोग विभिन्न वस्तुएँ खरीदते हैं। मिठाई बाजार में अनेक प्रकार की मिठाइयाँ; जैसे- रसगुल्ला, हैमी, जलेबियाँ सजते हैं। बाजार में सभी तरफ आनन्दित लोगों की भीड़ दिखती है। रात्रि में लोग बिजली के बल्बों से, तैल की दीपों से मोमबत्तियों से घर को प्रकाशित करते हैं। जब प्रत्येक घर, प्रत्येक भवन पर दीप प्रज्ज्वलित होते हैं तब दृश्य अत्यन्त आकर्षक और अनोखा होता हैं। दीपावली पर लोग लक्ष्मी पूजन करते हैं और सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। वे अपने भाई- बंधुओं को मिठाई बाँटते हैं। खुद भी स्वादिष्ट भोजन खाते है। प्रसन्न बालक-बालिकाएँ पटाखे फोड़ते हैं। परन्तु आजकल यहाँ संयम का आचरण करना चाहिए, क्योंकि विस्फोटक के कारण वातावरण में विषाक्त धुआँ फैलकर प्रदूषित होने के कारण कुछ लोग विशेषकर बच्चे और वृद्ध रोगी होते हैं। वास्तव में सारी प्रकृति ही वायु प्रदूषण से प्रभावित होती है। विस्फोटक निर्माण में बाल श्रमिकों को लगाया जाता है। बचपन में ही विषाक्त पदार्थों से उनके स्वास्थ्य को हानि होती है, जब तक प्राणहानि भी होती है। यह अच्छी बात नहीं है। अतः पटाखों का विरोध करना चाहिए। यह आनन्द का उत्सव लोगों के जीवन में आनन्द फैलाता है। यह दीपावली अज्ञान के अंधकार का नाश करती है, सुख -समृद्धि की रोशनी सब ओर फैलाती है। 'सभी अच्छा देखें।'

1. (क) 'उत्सवप्रियाः भवन्ति मानवाः' इति कालिदासेन कथितम्। (ख) रावणं निपात्य रामचन्द्रः अयोध्यापुरीं प्रत्यागच्छत्।

(ग) सुरासुरैः कार्तिकमासे अमावस्यां दिवसे महालक्ष्मीं सागरम ध्यान् निःसरन्ती समालोकिता। (घ)दीपमालिकावसरे आपणानां शोभा दर्शनीया। प्रसन्न वदनाः जनाः विविधं वस्तुजातं क्रीणन्ति। मिष्ठान्न-आपणेषु विविधानि मिष्ठान्नानि शोभन्ते विपणिषु सर्वत्र प्रमुदितः

जनशंकुलः दृश्यते। (ङ) 'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु' इति दीमालिकायाः संदेशः। **2.** (क) संस्कृत (ख) अयोध्यावासिभिः मालिकाभिः (ग) आविर्भाव (घ) विषाक्तेन (ङ) विषाक्त पदार्थः **3.** (क) मानव उत्सव प्रिय होते हैं। (ख) यह उत्सव समस्त उत्सवों में प्रमुख उत्सव है। (ग) वस्तुतः यही किंवदन्ती प्रमाणिक प्रतीत होती है। (घ) मिठाइयों की दुकानों पर मिठाइयाँ जैसे–रसगुल्ला, फेना, जलेबी आदि शोभा देती हैं। (ङ) सभी कल्याण (मार्ग) देखें।

4. (क) वायवे–वायुभ्याम्–वायुभ्यः (ख) मोमवर्तिकया– मोमवर्तिकाम्याम्–मोमवर्तिकाभिः
(ग) चित्रे– चित्रयोः–चित्रेषु
(घ) विष–विषे–विषाणि
(ङ) मिष्ठान्नस्य–मिष्ठान्नयोः–मिष्ठान्नानाम्

5. (क) (i) स्वयमपि (ii) नैतत्
(iii) दीपोत्सवे (iv) विद्युद्दीपैः
(v) अत्याकर्षणम् (vi) वर्णनमास्ति
(ख) (i) पुष्पमालाभिः + च
(ii) महा + उत्सवानाम्
(iii) दीपमाला + उत्सवः
(iv) शरदकालीनम् + इदम्
(v) श्रेष्ठम् + अस्ति (vi) सुर + असुरैः
(ग) (i) पछाड़कर (ii) आधार मानकर (iii) आनन्द के साथ (iv) स्वादिष्ट व्यञ्जन (v) कहावत (vi) पटाखे।
(घ) (i) यदाकदा (ii) अप्रामाणिकता
(iii) अश्रेष्ठम् (iv) तिक्तान्नम्
(v) उद्भवन्ति (vi) स्वस्थाः जनाः।

6. इस विषय में दूसरी कहावत भी है कि परस्पर सहयोग को आधार मानकर समुद्रमंथन में लगे देवता और राक्षसों के द्वारा उसी दिन भगवती महालक्ष्मी सागर के बीच निकलती दिखाई दीं। वस्तुतः यही किंवदन्ती प्रमाणिक प्रतीत होती है कि कार्तिक शुक्लपक्ष की त्रयोदशी में धनवन्तरि और चतुर्दशी में सुरभि की उत्पत्ति वर्णित है। उसके बाद अमावस्या को भगवती महालक्ष्मी के प्रकट होने का वर्णन है। इसलिए दीपावली उत्सव पंचदिवसीय होता है।

दशमः पाठः – निर्धनस्य पणः

चीन देश में चांग चू नामक एक प्रदेश है। उस प्रदेश में ताओलिन हसिन नामक एक स्थान है। इस स्थान पर भगवान बुद्ध का एक विशाल मन्दिर है। इस सुन्दर मन्दिर में भगवान की मूर्ति सुन्दर और विभिन्न धातुओं से बनी थी। जब कोई भी दर्शन के लिए आता था मूर्ति को हाथों से पुष्प समर्पित करता था। मूर्ति के वक्ष स्थल पर चीन देश का एक छोटा सा पण 'कैश' स्पष्ट-रूप में अंकित है। इस पण से सम्बन्धित एक विशेष कथा चीन में सुनी जाती है। इस मन्दिर में कोई मूर्ति नहीं थी तो चिन्तित मन्दिर अध्यक्ष अपने शिष्यों को बुलाकर कहते हैं। हे सेवकों! अनेक धातुओं को मिलाकर, मूर्ति बनाने के लिए धातु संग्रह करो। पुष्कल धातुओं से यह मूर्ति बनाई जाती है। ऊँ ऐसा कहकर सभी शिष्य धाातु संग्रह के लिए चलने को रथ पर बैठ जाते हैं। मन्दिर के पास में एक धनी महिला रहती थी। उसकी सेविका तिन-नू नामक बालिका थी। इस संसार में वह बालिका अनाथ थी। एक बार उसे राजमार्ग पर पण की प्राप्ति हुई, उसने प्रसन्न होकर उसे लेकर अपने वस्त्रों में बाँध लिया। एक बार मन्दिर अध्यक्ष के शिष्य स्वामी के घर में धन संग्रह के लिए आए। स्वामिनी ने सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल आदि धन शिष्यों को दे दिया। सारे धन को रथ में रखकर जब शिष्य जाने लगे तब बालिका ने प्रार्थना की भगवान की मूर्ति के लिए मैं भी कुछ देने की इच्छुक हूँ। यह निवेदन करके डरते हुए उसने कैश नामक पण दिखाया। धन के अहंकार में उन शिष्यों ने उसका उपेक्षापूर्वक त्याग कर दिया। शिष्यों द्वारा अपमानित होने पर दुखी होती हुई बालिका अपने कार्यों में लग गई। उसने सोचा- समदर्शी भगवान बुद्ध की मूर्ति में मेरे इस पण का प्रयोग होगा तभी मैं अपना जीवन धन्य मानूँगी। सभी शिष्य पुष्कल धातुओं का संग्रह करके सब प्रकार से निवृत्त हो चुके थे। प्रसन्नचित्त मन्दिर अध्यक्ष ने सभी धातुओं को गलाकर द्रव्य को मूर्ति रूप में डाल दिया, कुछ समय बाद जब देखा तो मूर्ति कुरूप और टेढ़ी-मेढ़ी थी। दूसरी बार भी मूर्ति विकृत ही

थी। प्रतिमा को सत्य और सुन्दर बनाने पर भी मूर्ति विकृत कैसे हुई, मन्दिर अध्यक्ष ने बहुत विचार किया। हे शिष्य! धातुसंग्रह में हमसे कोई त्रुटि अवश्य हुई है, इसलिए आज यह मूर्ति विकृत हो रही है तब धातु संग्रह का सारा वृत्तान्त कहो। सभी शिष्यों ने अपना –अपना यात्रा वृत्तान्त विस्तारपूर्वक सुनाया। अन्त में उस शिष्य की बारी आई जो तिन–नू स्वामी के घर गया था। गर्व से इस शिष्य ने पुष्कल धन गुरु को देकर सारी घटना कही। कथा घटनाक्रम में तिन–नू बालिका का उल्लेख आने पर वह शिष्य हँसकर बोला– 'उस छोटे से पण से क्या होता है' यह सोचकर उस बालिका को मैंने मना कर दिया। उसे सुनकर मन्दिर अध्यक्ष का मुख खुशी से भर गया। क्योंकि वह मूर्ति के विकृत होने का रहस्य जान गया। गुरु ने उस शिष्य को क्रोधित होकर कहा– ''मैं सारा रहस्य जान गया हूँ। जिससे त्रुटि हुई है वह मेरे सामने उपस्थित है।'' शिष्य को घूरते हुए कहा– तुम बड़े अपराधी हो। समदर्शी बुद्‌ध के सिद्धान्तों की तुमने हत्या की है। प्रायश्चित के बिना पाप की शुद्‌धि नहीं होगी। तुम शीघ्र उस पण को लाने के लिए जाओ जिससे भगवान की मूर्ति बन सके। नम्र और लज्जित हुआ, यह शिष्य अन्य शिष्यों के साथ वहाँ गया। बालिका को बुलाकर क्षमा माँगकर बोला– ''तुम्हारे पण के बिना भगवान की मूर्ति नहीं बन सकती, पण को शीघ्र लेकर आओ।'' वह सुनकर बालिका बहुत प्रसन्न हुई। प्राणों से भी अधिक प्रिय अपने कैश पण को सादर और सविनय अध्यक्ष ने इस पण को धातुद्रव में डालकर निकाला, तब सबने देखा भगवान की भव्य मूर्ति बनी। मूर्ति वक्ष स्थल पर बालिका द्वारा दिया पण स्पष्ट रूप से अंकित है।

1. (क) ताओलिन हसिन नामक स्थानं चीन देशे चांग चू नामके प्रदेशे अस्ति। (ख) मूर्तिर्वक्षस्थलोपरि चीन देशस्य लघुतमः पणः 'कैश' अंकितः अस्ति। (ग) स्वशिष्यान् आहूय मन्दिराध्यक्षः अकथयत्–"भो सेवकाः! विभिन्न धातु संवलितां मूर्तिं निर्मातुं भवन्तः धातु संग्रहं कुर्वन्तु, पुष्कलधातुभिः मूर्तिरियं निर्मापयिष्यते।" (घ) विकृत मूर्तिं दृष्ट्वा मंदिराध्यक्षः सर्वान् शिष्यान् अवोचयत्–"रे शिष्याः! धातु संग्रहे चास्माभिः कापि त्रुटिरवश्यं कृता भवद्येन मूर्तिः विकृता संजाते तर्हि प्रथक्शः कथयन्तु सर्वे धातु संग्रहस्य वृत्तान्तम्।" (ङ) यदा निर्धन बालिकाया क्षमायाचनां न अयाचन् तस्य पणं मूर्तिनिर्माणे न प्रयोजयत् तदा सा मूर्ति विकृतायाः सुकृता अभवत्। **2.** (क) हस्तयोः (ख)विश्रुताऽस्ति (ग) उपविश्य (घ) विस्तरशः (ङ) मूर्तेवक्षस्थलोपरि। **3.** (क) चीन देशे चांग चू नामक एकं नगरम् अस्ति। (ख) सा बालिका अस्मिन् संसारे अनाथा आसीत्। (ग) मंदिरस्य समीपे एका श्रेष्ठी महिला न्यवसन्। (घ) अहं सम्पूर्ण रहस्यं जानामहे। (ङ) प्रायश्चितं बिना पापस्य शुद्धिर्न भविष्यति। **4.** (क) ते शिष्यान् आहूय अकथयन्। (ख) सुरम्येषु मंदिरेषु भगवान बुद्धानां मूर्तयः स्थापिताः। (ग) अस्मिन् जगति अनाथाः ताः बालिकाः सन्ति। (घ) बालिकाः प्रार्थयन्। (ङ) तत् श्रुत्वा तेषां मुखं हर्ष पूरितम भवन्।

5. (क) (i) मंदिराध्यक्षः (ii) शिष्यानाहूय (iii) निर्मितासीत् (iv) गर्वितोज्यं (v) नासीत्तदा (vi) चास्माभिः

(ख) (i) मूर्ति की छाती के ऊपर
(ii) प्रतिमा के प्रारूप में/साँचे में
(iii) पीतल आदि धन
(iv) अपनी-अपनी यात्रा का वृत्तांत
(v) पूर्ति के लिए (vi) हँसे/हँसने लगे।

(ग) (i) वद् (ii) व्य + आ + चर
(iii) कथ (iv) प्रार्थय् (v) भू (vi) सम + अर्पय् **6.** उसे सुनकर मंदिराध्यक्ष का मुख हर्ष से भर गया। उसने विकृत मूर्त का रहस्य जान लिया। गुरु उस शिष्य पर क्रुद्ध हुआ और बोला–"मैं समस्त रहस्य जानने वाला हूँ। जिससे यह त्रुटि हुई है मेरे आगे उपस्थित है।" शिष्या को घूरते हुए कहा–तुम्हारे द्वारा महापराध किया गया है। तुम्हारे द्वारा सामदर्शी बुद्ध के सिद्धान्तों की हत्या की गई है। प्रायश्चित से भी पाप की शुद्धि नहीं होती, जाओ और शीघ्र उस सिक्के को लाओ जिससे भव्य मूर्ति का निर्माण हो।

एकादशः पाठः – मानवतायाः परिचयः

सक्खर नामक नगर में एक धनिक रहता था। उसके पास बहुत से महल सेवा के लिए नौकर थे। उसके जीवन में कोई कमी नहीं थी। घोड़े पर चढ़कर वह महल से महल जाता था। एक बार रात में जब वह महल के पास में घूम रहा था तब एक वृद्ध को आते हुए देखा। वृद्ध के वस्त्र फटेहाल थे और सिर पर बोझ था। धनिक को देखकर उसने भार को भूमि पर पटक कर प्रणाम करके बोला– ''श्रीमन! मैं थका हुआ हूँ। यदि आपकी आज्ञा हो तो रात्रि में यहीं विश्राम कर लूँ।'' धनिक बोला– ''यह धर्मशाला नहीं है यदि तुमने कोई वस्तु चोरी कर ली तब।'' यह सुनकर वृद्ध आश्चर्यचकित अपना भार सिर पर लेकर वहाँ से चल दिया। अँधेरे से घिरी रात थी, आकाश में बादल गरज रहे थे, यदा –कदा पानी की बूंदे भी गिर रही थीं। तूफान के संदेह से यह वृद्ध थका हुआ था। कुछ समय बाद मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई किन्तु वृद्ध चलता ही जा रहा था। बहुत दिन बीत गए। एक दिन धनिक अपने मित्र और सेवक के साथ वन में निकला और शिकार खेलने लगा। घोड़े पर चढ़कर वह दौड़ते हुए मृग के पीछे दौड़ा प्रयत्न करने पर भी उसे पकड़ न सका। रास्ता भूलकर वह घने वन में घूमने लगा। घूमते हुए अन्धकार हो गया रात हो गई। तूफान शुरू हो गया, वहाँ कोई न था जो उसकी सहायता करे। थका हुआ यह घोड़े से उतरकर वृक्ष के नीचे बैठ गया। वृक्ष भी गिर गया। डर से घोड़ा इधर-उधर दौड़ने लगा। कुछ समय बाद वर्षा शान्त हुई, आकाश स्वच्छ हो गया। दो हजार रुपए में खरीदा घोड़ा भी रास्ते में दिखाई नहीं दिया। धनिक किसी अन्य धनिक के घर आया। इस प्रकार दुख से युक्त धनिक को दूर से देख एक मनुष्य ने हँसकर प्रणाम करके धनिक से पूछा– ''आप इतने दुखी क्यों हैं?'' धनिक ने भी सारी कथा सुना दी। उस दयालु धनिक को अपनी झोंपड़ी में ले गया। वह बोला– ''यहाँ मैं अपने वृद्ध पिता के साथ रहता हूँ आप भी भोजन करके विश्राम करिए।'' धनिक बोला– ''मैं तुम्हारे पिता से मिलने का इच्छुक हूँ उनके दर्शन करके ही मैं जाऊँगा।'' पुत्र पिता से मिलने की इच्छा वाले अतिथि को इस कारण वहा ले गया। पिता बोले– ''अच्छा है यदि में उससे न मिलूँ, मैं अतिथि का आदर करता हूँ, मेरे मन में अतिथि सत्कार का भाव है।'' पुत्र बोला– ''मुझे जरा भी शक नहीं है आपके आदर भाव में। तब अतिथि से क्या कहूँ?'' पिता ने उत्तर दिया– ''कहो कि मेरे पिता वृद्ध हो गए हैं। बाहर न आ सकते।'' पुत्र ने पिता का संदेश अतिथि को बता दिया उसे सुनकर धनिक ने कहा यह तीर्थ पवित्र अतिथि सेवा परायण महात्मा तुम्हारे पिता के दर्शन न करके घर कैसे जाऊँगा जिसका सम्पूर्ण परिवार अतिथि परायण है। तुम्हारे पिता के दर्शन से मेरा जीवन सफल होगा। अतिथि के अधिक आग्रह से पिता अपनी झोंपड़ी से बाहर आ गया। धनिक ने देखा यह वही वृद्ध था जो सिर पर लकड़ी का भार लेकर मेरे महल के पास आया था, वह अत्यन्त लज्जित हुआ। बहुत लज्जित धनिक को देखकर पिता बोले– ''इसलिए मैं झोपड़ीं से बाहर आने का इच्छुक नहीं था, क्योंकि आप पूर्व घटित घटना को याद करके लज्जित होगें, परन्तु आपके आग्रह पर मैं निकला हूँ'' आप साक्षात् देवता है यह कहकर धनिक उसके चरणों में लोट गया, आँखों में पश्चाताप के आँसू थे। वह मन में सोचने लगा– मेरे महल से लाख गुणा अधिक महत्व वृद्ध की इस कुटिया का है जहाँ साक्षात् मानवता निवास करती है।

1. (क) निर्धनस्य प्रार्थनां श्रुत्वा धनिकः उवाच–"नेयं धर्मशाला, यदि भवान् किमपि वस्तु चोरयिष्यति तर्हि।" (ख) प्रासादात् गमनसमये अंधकारावृता रजनी आसीत्, आकाशे मेघा गर्जन्ति, यदा कदा जलविंदवोऽपि निपतन्ति झंझावातस्यापि संदेहमुपजायते।

(ग) मार्गे विस्मृत्य धनिकः परिश्रान्तः अश्वात् अवतीर्य वृक्षाधः समुपविष्टः। (घ) दूरात् समागतः नरः धनिकं प्रणम्य उवाच–"कथं भवान् भृशं प्रतप्तः?" (ङ) धनिक तस्य नरसय पारिवारिक संस्कार वीक्ष्य नतमस्तकं अभवत्।

2. (क) धर्मशाला (ख) रजनी, झंझावातः (ग) मिलितुमिच्छामि (घ) अतिथिरत्याग्रहेण

(ङ) महत्वमस्ति। **3.** (क) सः वृद्धः परिश्रान्तः अभवत्ः। (ख) स्वभारं शिरसि निधाय सः तस्मात् प्रचलितः। (ग) अश्वः अपि भीत्वा ह्यधावत्। (घ) किं यूयं दुग्धं न पिबथ? (ङ) मम वचनेषु आतिथ्य भावः अस्ति।

4. (क) वयं मम पितुः पुत्राः स्मः।

(ख) धनिकाः तस्य चरणयोः लुलोठयन्।

(ग) श्रीमान्! परिश्रान्ताः स्मः।

(घ) सक्खरनामके नगरे धनिकाः वसति स्म।

(ङ) आकाशे मेघा गर्जन्ति।

5. (क) (i) अश्वम् + आरुह्य

(ii) निर्गतः + च + आखेटन + अर्थम्

(iii) जलविन्दवः + अपि

(iv) क्रीतः + चायमश्वोऽपि

(v) च + अन्धकारावृता (vi) केन + आयाम्

(ख) (i) परिश्रान्तास्मि (ii) निर्मलञ्चाभवतः

(iii) दूरादेकः (iv) तथाऽऽग्रहे विषये

(v) दयालुरसौ (vi) परिश्रान्तश्चायम्

(ग) (i) अच्छा (ii) रास्ता भूलकर

(iii) बता (नहीं) सकता (iv) सेवा में लगा रहने वाला (v) पूर्व घटित घटना को

(vi) अपनी झोपड़ी से

(घ) (i) स्मृत्य (ii) निरादरम् (iii) निर्धनेन

(iv) अन्ने (v) हस्तयोः (vi) रूदन्

6. पुत्र ने संदेश अतिथि को निवेदन किया उसे सुनकर धनिक द्वारा कहा गया—इस पवित्र तीर्थ में अतिथि सेवा परायण महात्मा तुम्हारे पिता के दर्शन बिना किए कैसे घर जाऊँगा? जिसका समस्त परिवार अतिथि सेवा परायण है। तुम्हारे पिता के दर्शन से मेरा जीवन सफल होगा। अतिथि के अति आग्रह से पिता अपनी कुटिया से बाहर निकला।

द्वादशः पाठः – दुर्जनलक्षणानि

1. गाड़ी को पाँच हाथ से, घोड़े को दस हाथों से, हाथी को सौ हाथों से, दुर्जन को देश छोड़ने से दूर रखना चाहिए।

2. हाथी को अंकुश वाले हाथ से, घोड़े को हाथ से मारना चाहिए, सींग वाले जानवर को डंडे से दुर्जन को तलवार से मारना चाहिए।

3. ब्राह्मण भोजन से सन्तुष्ट होते हैं, मोर बादलों से, साधू दूसरे की सम्पत्ति से, दुश्मन दूसरों पर विपत्ति से खुश होते हैं।

4. विनय पूर्वक व्यवहार से, बली को तिरस्कार से दुर्जन को अपने समान बली, शुत्रु को विलय बल से जीता जा सकता है।

5. दुर्जन कभी सज्जन नहीं बन सकता, बहुत प्रकार से सिखाने पर भी। तीखेपन से सिक्त को घी की प्यास होती है नीम के मीठेपन की नहीं।

6. दुष्ट के अन्तःकरण की पवित्रता तीर्थस्थान से नहीं हो सकती चाहे सौ बार हो। जैसे बर्तन आग में जलाने से शुद्ध नहीं हो सकता।

1. (क) शकटं पञ्चहस्तेन त्यागं कर्त्तव्यम्। (ख) हस्ती-वाजी- शृंगीदुर्जनञ्च क्रमशः अंकुशहस्तेन, हस्तेन, लगुडहस्तेन खड्गेन च ताड़येत्। (ग) विप्राः भोजने तुष्यन्ति। (घ) अनुलोमेन बलिनं प्रतिलोमेन दुर्जनम् इतिव्यवहारं कर्त्तव्यम्। (ङ) रातैरपि तीर्थ स्नानेपि दुष्टः शुद्धिर्न भवति। **2.** (क) अंकुशहस्तेन। शृंगी, खड्गहस्तेन।। (ख) बलिनं। आत्मतुल्यबलं।।

(ग) दुष्टस्तीर्थस्नान शतैरपि। भाण्डं।।

(घ) पञ्चहस्तेन, वाजिनम्। देशत्यागेन।।

3. (क) उपसर्ग–पञ्च, शेषपद–हस्तेन्

(ख) उपसर्ग– दुर्, शेषपद–जनः

(ग) उपसर्ग–पर, शेषपद– सम्पतौ

(घ) उपसर्ग–पर, शेषपद– विपत्तिषु

(ङ) उपसर्ग–प्रति, शेषपद– लोमेन।

4. (क) (i) दुजनः (ii) अन्तर्गतः

(iii) दशामुपैति (iv) दुष्टस्तीर्थस्नान

(v) प्रकारैरपि (vi) शतैरपि।

(ख) (i) सतः + जनः (ii) भाण्डं + सुराया

(iii) अन्तः + गतः (iv) दाहितं + च

(v) शतैः + अपि (vi) निम्बवृक्षः + मधुरत्व

5. (क) शकटः – शकटौ – शकटाः

(ख) हस्ताय – हस्ताभ्याम् – हस्तेभ्यः

(ग) बाजिना – बाजयो – बाजीनाम्

(घ) बलात् – बलाभ्याम् – बलेभ्यः

(ङ) घृते – घृतयोः – घृतषु

6. (क) अनुलोमेन व्यक्तिः सर्वप्रियः भवति। (ख) प्रतिलोमेन व्यक्तिः कार्यक्षमता क्षीर्णा भवति। (ग) सा हस्तेन दुग्धं यच्छति। (घ) अस्मिन् उद्याने निम्बवृक्षाः सन्ति। (ङ) खलाः शिक्ष्यमाणाः अपि न शिक्षायन्ति।

त्रयोदशः पाठः – शत्रुतायाः रहस्यम्

यह कथा उस समय की है, जब सभी पशु मित्रतापूर्वक रहते थे। एक बार एक अवसर पर कुत्तों को आमंत्रित किया। जाति से सम्बन्धित

होने के कारण कुत्तों का वहाँ जाना आवश्यक हो गया। किन्तु उनके पास महत्वपूर्ण दस्तावेज थे। सुरक्षित स्थान पर छिपाकर वे जाने के इच्छुक थे, परन्तु वह सुरक्षित स्थान कहाँ है? सभी विचार मग्न हो गए। किसी कुत्ते ने कहा– ''हम इस पुराने मन्दिर में कागज छिपाकर जाएँगे।'' दूसरे ने कहा– ''यह रहस्य कोई जान गया तो कुछ नहीं कर सकते।'' दूसरा बोला– ''सेठ के पास छिपाकर जाते हैं।'' सब ने कहा– ''नहीं यह सेठ चोर है।'' अन्य बोला– ''थाने में छिपाकर जाते है।'' सब बोले– ''दुख है! इस युग में थाने पर कौन विश्वास करेगा?'' दूसरे ने कहा– ''क्यों न हम दस्तावेज साथ लेकर चलें?'' दूसरा बोला– ''नहीं–नहीं रास्ते में बारिश होने पर दस्तावेज नष्ट हो जाएँगे। उनके बीच एक वृद्ध कुत्ता चुपचाप था।'' उसने कुछ सोचते हुए वहाँ सब दिशाओं पर दृष्टि डाली। बूढ़ा कुत्ता बोला– ''किसी पर तो विश्वास के लिए हम विवश हैं। विश्वास के बल से ही संसार है और इसके कार्य चलते हैं।'' सब बोले– तब आपके विचार में कौन विश्वास योग्य है।? वृद्ध बोला– ''बिल्ली पर विश्वास करना चाहिए'' तीव्र स्वर में सबने विरोध किया। परन्तु पक्ष–विपक्ष की मतगणना की गई। प्रबल बहुमत द्वारा बिल्ली को बुलाकर दस्तावेज दे दिए। बिल्ली ने दस्तावेज तो ले लिए पर उनके मध्य सुरक्षा का प्रश्न था। उन्होंने सभा की। एक बिल्ली ने अपना मत प्रकट किया। छत पर कागज आप छिपा दें। दूसरी ने कहा– यदि वर्षा से कागज गीले हो गए तो कुत्ते हमें मार देंगे। अन्य ने कहा– ''भूमि के अन्दर आप कागज छिपा दें।'' सबने कहा– नहीं कागज नष्ट हो जाएँगे। एक वृद्ध बिल्ली ने कहा– सर्वश्रेष्ठ उपाय है कि लकड़ी के संदूक में दस्तावेज क्रम से रखकर हमें उसकी रक्षा करनी चाहिए। सबने एक स्वर में कहा– ठीक है, ठीक है, ऐसा ही करना चाहिए। सबने मिलकर वैसा ही किया। क्रम से उन्होंने कागजों की रक्षा की। बहुत दिन बीत गए। अन्त में शीतकाल आ गया। आज तक भी कुत्ते नहीं आए। तेज शीत रात्रि में जागकर उन्होंने कठिनता का अनुभाव किया। पुनः एक बैठक का आयोजन किया। एक बिल्ली बोली– दस्तावेजों को गुप्तस्थान पर क्यों नहीं छिपा देते? वृद्ध बिल्ली बोली– ''मेरा तो विचार यह है कि चूहे के बिल में कागज छिपा दो।'' यह सही कह रही है, सबने आवाज लगाई। चूहों ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। बिल के एक कोने में कागज डालकर वे निश्चिन्त हो गए। क्रमशः सर्दी का प्रभाव बढ़ गया। भूमि के अन्दर चूहे काँपने लगे। जब ठंड से बचने के लिए उन्हें कोई उपाय न मिला तब एक धूर्त चूहे की दृष्टि कागजों पर पड़ी वह बोला– ''क्यों न हम कागजों का घर बना लें।'' ऐसा करने से निश्चित रूप से ठंड से रक्षा होगी। डूबते को तिनके का सहारा ये कहकर वे सभी कागजों को उठा लाए। ''खाली मन शैतान का घर होता है।'' कुछ दिनों के बाद वे कागज खत्म कर चुके थे। जैसा कि कहते हैं ''चूहे के जापे बिल ही खोदते है।'' शीतकाल भी बीत गया। भूखे चूहों ने कागज पत्र खाने शुरू कर दिए। धीरे–धीरे पत्र समाप्त हो गए। वसन्त ऋतु आने पर कुत्ते वापस लौट गए। सबसे पहले वे अपने दस्तावेज लेने के लिए बिल्ली के पास गए, इसके पश्चात् चूहे का विवरण प्राप्त किया। वहाँ टुकड़े किए अपने दस्तावेजों को देखकर वे बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने चूहों पर आक्रमण कर दिया। बिल्ली पर भी वे क्रोधित होकर गए। इस प्रकार किसी तरह उस समय का युद्ध तो समान हुआ किन्तु उनका निरन्तर चलने वाला विरोध प्रचलित है।

1. (क) आमन्त्रितस्थाने स्थाने गमनसमये कुक्कुराः विचारमग्नाः संजाता वत् तेषां पार्श्वे महत्वपूर्णानि कर्गजान्यासन्। सुरक्षिते स्थाने निक्षिप्य ते गन्तुमैच्छन् परं कुत्रास्ति तत् स्थानम्? सर्वे विचारभग्नाः संजाताः। (ख) कुक्कुरः यदा प्राह–'रक्षापुरुषस्थाने निक्षिप्य गच्छामः' तदा सर्वे प्रोचुः–हन्त्! अस्मिन् युगे रक्षापुरुषाणां को विश्वासः? इति। (ग) वृद्धः कुक्कुरः अवदत्–"कस्मिश्चिद विश्वसितुं तु वयं विवशाः विश्वासबलेनैव जगतः कार्याणि प्रचलन्ति।" (घ) विडालाः कर्गजानि मूषकेभ्यः प्रदत्तम्। (ङ) जले निमज्जःसन् तत्समये कोऽपि तृणः आधारः भवितुं शक्यते इति

अभिप्रायः। **2.** (क) जातिगतसंबधेन (ख) कर्गजानि (ग) विश्वासबलेनैव (घ) गुप्तस्थाने (ङ) भोक्तुमारब्धवन्तः **3.** (क) मूल शब्द–तत्, लिङ्ग–,पुंल्लिंग/नपुंसकलिंग , विभक्ति– षष्ठी, वचन–बहुवचन। (ख) मूल शब्द–स्वर, लिङ्ग–पुल्लिंग, विभक्ति–तृतीया, वचन–एकवचन। (ग) मूल शब्द–जलप्रवर्षण, लिङ्ग–पुल्लिंग, विभक्ति–तृतीया वचन– एकवचन। (घ) मूल शब्द–,हर्म्यपृष्ठ, लिङ्ग–पुल्लिंग, विभक्ति– सप्तमी, वचन– एकवचन। (ङ) मूल शब्द–रक्षापुरुष, लिङ्ग–पुल्लिंग, विभक्ति –षष्ठी, वचन– बहुवचन।

4. (क) कुरु–कुरुतम्–कुरुत।

(ख) अगच्छत्– अगच्छताम्–आगच्छन्

(ग) भविष्यामि–भविष्यावः–भविष्यामः

(घ) वदति वदतः वदन्ति।

(ङ) भवेयम्–भवेव–भवेम

(च) रक्ष–रक्षतम्– रक्षत।

5. (क) (i) गमनावश्यकं (ii) चान्य (iii) रहस्यमेतत् (iv) चार्द्राणि (v) विडालानाहूय (vi) चैक **(ख)** (i) गन्तुम् + ऐच्छन् (ii) न + एतत् (iii) कुक्कुराश्च + अस्मान् (iv) चौरः + च + अयम् (v) समस्या + आसीत् (vi) वृद्धः + च + एकम्

6. (क) सः तस्य पुरुषम् अस्ति। बलेन पौरुषम् जायते। **(ख)** सः प्राह। ते प्रोचुः। **(ग)** येषां विद्या तेषां ज्ञानम्। **(घ)** सा अवदत्। सः प्रत्यवदत्। **(ङ)** यत्र अग्निः तत्र धूम्रः। यत्र अग्नि तत्र धूम्रः। **7.** सबने मिलकर वैसा ही किया। क्रमशः वे कागजों की रक्षा करने लगे और बहुत दिनों तक (रक्षा) की। अन्त में जाड़े आ गए। कुत्ते अब भी नहीं लौटे। गहरी शीत रात में जगना उन्हें कठिन अनुभव हुआ। पुनः एक सभा आयोजित की गई। एक बिल्ली बोली–"क्यों न इन कागजों को गुप्त स्थान पर छिपा दिया जाए।" बूढ़े बिल्ले ने कहा–मेरे अनुसार तो चूहों के बिल में कागज छिपा दिए जाए। बूढ़े बिल्ले ने सही कहा। ऐसी सभी ने ध्वनि की।

चतुर्दशः पाठ – वीर भीमसेनः

1. (क) भीमसेनः द्रोपद्याः क्रोधस्य निवारणं करिष्यति। (ख) द्रोपदी पाण्डवानां भार्या आसीत्। (ग) द्रोपदी चेटी च भीमसेनस्य समीपं अगच्छताम्। (घ) इन्द्रप्रस्थं, वृकप्रस्थं, जयन्तं वारणावृतम्, जतुगृञ्च। (ङ) (सक्रोधं सहदेवमाधिकृत्य) किं नाम पञ्चाभिर्ग्रामैः संधिः। मध्नामि कौरवशतं समरे न कोपाद्, दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः। संचूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू, संधिं करोतु भवतां नृपतिः पणेन। **2.** (क) कुमारौ भीमसेनः (ख) कुमारो (ग) गदया, करोतुं, नृपति (घ) धार्तराष्ट्र कुलक्षयः (ङ) दूरमप्रेषितेषु, यदिमां।

3. (क) भवान् धैर्य धार्येत्। (ख) द्रोपदी आर्य सम्मुखे आगच्छति। (ग) नाथ! अपूर्वं ते वचनम्। (घ) महाराजः अनेन संदेशम् अददात्। (ङ) महाराजस्य मनः स्वगोत्रवधेन दुखितः भवति। **4.** (क) तुम सत्य बोलो। (ख) वह उसकी पत्नी है। (ग) वह आर्य के समीप आ रही है। (घ) प्रिय! तुम्हारा निवेदन करता/करती हूँ। (ङ) वत्स! ऐसा करके क्या होगा।

5. (क) (i) मुखमवलोक्य (ii) कुमारस्तिष्ठति (iii) तन्नाथ (iv) कष्टतरामापतितम् (v) समीपमुपसर्पति (vi) संदेशोऽयमार्येणाव्युत्पन्न **(ख)** (i) स्वामिनी– समाश्वसितु समाश्वसितु भट्टिनी। (ii) रहने का स्थान– सा वास भवनम् उपविशति। (iii) असह्नीय है–इदं कष्टतरामापतितम्। (iv) सही रूप से–ते पुस्तकानि व्यवस्थितं कृताः। (v) खून–सा तस्मै रुधिरं यच्छति। (vi) लक्षित है–किं तं लक्ष्यते? **(ग)** (i) ग्रह् (ii) उप + सर्प् (iii) स्था (iv) नी (v) सम् + चूर्णय् (vi) कृ

पञ्चदशः पाठः – ज्ञान-मंदाकिनी

–पुस्तक में चित्र में, दूरदर्शन में चित्र पट पर हम जेबरा को देखते हैं। यह गधा काले और सफेद पट्टियों वाला दिखता है। वस्तुतः जेबरा श्वेत वर्ण का होता हैं। इसके रंग के ऊपर काली पट्टियाँ होती है। इस कारण वह काले सफेद रंग का दिखता है।

–शुतुरमुर्ग का अण्डा अनुमान से तीन पौण्ड परिमित का होता है। अण्डा फूटने पर उसके बच्चे निकलते हैं उस समय वे मुर्गी की आकृति के होते हैं। सामान्यतः वे तीन वर्ष बाद अपनी पूर्ण अवस्था को प्राप्त होते हैं।

–तालों का आविष्कार अनुमानतः चार हजार

वर्ष पूर्व चीन देश में हुआ। पहले मिस्र देश के लोग भी तालों का प्रयोग करते थे। किन्तु उनका प्रयोग सरल न था।

–जब हाथी भूमि पर चलते हैं तब छोटे कीड़े उसके पैरों के नीचे आकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। वे पक्षियों का सुलभ भोज्य पदार्थ होते हैं। अतः सामान्यतः हाथी के पीछे पक्षी चलते है। हाथी अन्य जीवों को जल में उपलब्ध कराता है। वे आदत के अनुसार जहाँ, तहाँ गड्ढ़ा खोदते हैं। इसलिए नवजात बच्चे का भार बीस सौ से अधिक किलो होता है। छह वर्ष की अवस्था में उसका भार हजार किलो परिमित होता है। माता के साथ हाथी का बच्चा दस वर्ष तक घूमता है। इसकी आयु सत्तर वर्ष अधिकतम होती है। हाथी अपने परिवार की वेदना को अनुभव करता है।

–चूहा बिना पानी पिए ऊँट से अधिक दिनों तक जीवित रह सकता है।

–पैरों के नखूनों की अपेक्षा हाथ के नाखून चार गुना अधिक वृद्धि प्राप्त करते हैं।

–सामान्यतः आदमी पचास बार हँसता हैं।

–संसार के तीन प्रतिशत लोग बाएँ हाथ से काम करने वाले होते हैं। वे बाएँ हाथ से लिखते हैं।

1. (क) वनगर्दभः कृष्णश्वेतश्च पट्टिकासु दृश्यते। वस्तुतः वनगर्दभ श्वेत वर्णः भवति। अस्यवर्णस्योपरि कृष्णपट्टिकाः विराजन्ति। (ख) मशकः अन्योन्याः वर्णोपेक्षया नीलवर्णं प्रति अति आकर्षिता भवन्ति। (ग) जलवृष्टिः तदैव भवति यदा मेघान्तः करणे हिमस्य सूक्ष्मखण्डाः विस्तृताकृतिं लभन्ते। (घ) तालकानां आविष्कारः अनुमानतः चतुः सहस्रवर्षे पूर्वात् चीन देशे अभवत्। (ङ) पक्षीगणाः सुलभ भोजन पदार्था गजानाम् अनुगच्छन्ति। (च) पादनखानां अपेक्षा हस्तनखाः चतुर्गुणितं वृद्धिं प्राप्नुवन्ति। **2.** (क) त्रिपौण्ड (ख) मशकाः (ग) मिश्रदेशीया (घ)शतात् विंशमिमीधकशतं (ङ) समुपलब्धां। **3.** (क) वयं चलचित्रे वनगर्दभः पश्यामः। (ख)अंडस्खलिते शिशुः उद्भवति। (ग) गजाः भूमे चलन्ति। (घ) जनन्या सह गजशिशुरपि दशवर्ष पर्यन्तं निवसन्ति। (ङ) सामान्यः जनः दिवसमेके पञ्चदश वारं हसति। **4.** (क) शुतुर्मुर्ग तीन वर्ष में पूर्ण अवस्था में होता है। (ख) वे स्वभाव के अनुसार जहाँ तहाँ गड्ढे खोदते हैं। (ग) चूहे बिना जल के ऊँट से अधिक दिन तक जी सकते हैं। (घ) जिसके अंदर वायु नहीं होती। (ङ) किन्तु उनका प्रयोग करना सरल न था। (च) वे बायें हाथ से लिखते हैं। **5.** (क) मूल धातु–वि + राज्, लकार–लट्, पुरुष–प्रथम, वचन–एकवचन (ख) मूल धातु–नि + गम्, लकार–लट्, पुरुष–प्रथम, वचन–एकवचन (ग) मूल धातु–लभ् + राज्, लकार–लट्, पुरुष–प्रथम, वचन– बहुवचन (घ) मूल धातु–प्र + आप, लकार–लट्, पुरुष–प्रथम, वचन–बहुवचन (ङ) मूल धातु–खन्, लकार–लट्, पुरुष– प्रथम, वचन–बहुवचन। **6.** (क) मूल शब्द–अंडस्खल, विभक्ति– सप्तमी, वचन–एकवचन (ख) मूल शब्द–पक्षीगण, विभक्ति–प्रथमा, वचन–बहुवचन (ग) मूल शब्द–उष्ट्र, विभक्ति–पञ्चमी, वचन–एकवचन (घ) मूल शब्द–हिम, विभक्ति–षष्ठी, वचन–एकवचन (ङ) मूल शब्द–हस्तनख, विभक्ति–प्रथमा, वचन–बहुवचन।

षोडशः पाठः – सुभाषितानि

1. मूर्ख जहाँ नहीं पूजे जाते वहाँ समृद्धि निश्चित है दाम्वत्य में जहाँ कलह नहीं है, वहाँ लक्ष्मी स्वयं आती है।

2. बुरे गाँव में निवास करना, लहीन की सेवा, अरूचिकर भोजन, क्रोध करने वाली स्त्री, पुत्र मूर्ख और विधवा कन्या ये छह बिना आग के शरीर को जला देते हैं।

3. पुत्र से हीन घर सूना होता है। दिशाएँ बान्धव के बिना शून्य हैं। मूर्ख का ह्रदय शून्य है। दरिद्रता में सब कुछ शून्य है।

4. अपच होने पर भोजन विष के समान है। अभ्यास में शास्त्र विषम है, दरिद्रता में गोष्ठी विषम है बुढ़ापे में जवानी विषम है।

5. दयाहीन को धर्म, विद्याहीन को गुरु छोड़ देना चाहिए। क्रोध मुखी को पत्नी स्नेह रहित को बान्धव को छोड़ देना चाहिए।

6. चार प्रकार से सोने को परखते हैं- घिसना, छेदना, तपाना, कूटना। उसी प्रकार चार प्रकार से पुरुषों को परखते हैं- त्याग, शील, गुण ,कर्म।

1. (क) श्रीः यत्र दाम्पत्यः कलहः न स्यात्

तत्र स्वयमागता। (ख) कुग्रामवासः, कुलहीन सेवा, कुभोजनं, क्रोधमुखी भार्या, मूर्खः पुत्रः विधवा कन्या च एताः षट् बिनाऽग्निना कायं दहन्ति। (ग) वृद्धस्य तरुणी विषम्। (घ) दयाहीनं धर्मं त्यजेत्, विद्याहीनं गुरुं त्यजेत्, क्रोधमुखी भार्या त्यजेत् निः स्नेहान बान्धवान् त्यजेत्। (ङ) कनकेन इव पुरुषाः परिक्ष्यते।

2. (क) धान्यं, दाम्पत्योः, स्वयमागता।
(ख) शून्यं, शून्यास्र्वबान्धवः, सर्वशून्या
(ग) विद्याहीनं, त्यजेत्। त्यजेत्, निःस्नेहान्।
(घ) गृहणीयात्। छन्दोनुवृत्तेन, पण्डितम्।

3. (क) (i) नास्ति (ii) लुब्धमर्थेन (iii) विनाऽग्निना (iv) त्यजेद्धर्मः (v) शास्त्रमजीर्णे + स्तब्धमञ्जलि। **(ख)** (i) स्वयम् + आगतः (ii) विषम् + गोष्ठी (iii) यथा + अर्थ (iv) पुत्रः + च (v) निघर्षणः + छेदनः (vi) पुत्रैः + च **(ग)** (i) स्वयं आती है (ii) परीक्षण करे (iii) क्रोध मुख वाली (iv) बिना स्नेह के (v) दया से हीन (vi) कर्म से। **4.** (क) अस्ति–स्तः–सन्ति
(ख) दह्– दहतम्–दहत–
(ग) अत्यज् –अत्यजतम –अत्यजत
(घ) परिक्ष्येत्– परिक्ष्यताम्– परिक्ष्येयुः
(ङ) पूजयिष्यामि–पूजययिष्याव:–पूजययिष्यामः

5. (क) मूल शब्द–चतुर, लिङ्ग–पुल्लिंग, वचन–बहुवचन, विभक्ति–तृतीया।
(ख)मूल शब्द–कुग्रामवास, लिङ्ग–पुल्लिंग, वचन–बहुवचन, विभक्ति–प्रथमा।
(ग) मूल शब्द–वृद्ध, लिङ्ग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन, विभक्ति–षष्ठी।
(घ) मूल शब्द–शील, लिङ्ग–नपुंसक, वचन–एकवचन, विभक्ति–तृतीया।
(ङ) मूल शब्द–यथार्थत्व, लिङ्ग–नपुंसक, वचन–एकवचन, विभक्ति–तृतीया।

सप्तदशः पाठः – नारी-शिक्षा

गृहस्थी की गाड़ी के दो चक्र हैं नर और नारी। वहीं शिक्षा में चक्र की गति कभी न समाप्त होने वाली समानता निर्बाध होती हैं, किन्तु यदि एक पहिया चिकना होता है दूसरा बिल्कुल स्नेह रहित हो तो गाड़ी की चाल समान नहीं रह सकती। वहाँ सदैव बाधा ही उपस्थित होती है। इसलिए शिक्षित पुरुष की शिक्षा विहीन नारी संयोग होती है। अतएव जैसे पुरुषों के लिए शिक्षा की आवश्यकता है उसी प्रकार नारी के लिए भी शिक्षा की परम आवश्यकता है।

यद्यपि भारत के इतिहास में देखने पर प्रतीत होता है। कि प्राचीन समय में नारी शिक्षा का बड़ा प्रचार था। वैदिककाल में गार्गी, मैत्रेयी, आदि नारी पावन चरित्र की कही जाती थी। उनकी उच्च शिक्षा के कारण आज शंकराचार्य के काल में मण्डन में शास्त्रार्थ में शंकराचार्य के साथ शास्त्रार्थ करने वाली देवी शारदा का नाम कौन नहीं जानता। संस्कृत साहित्य में बहुत-सी नारी विज्जका पद्यमनि उनमें विदूषी थी। यवन काल (मुस्लिम काल) में देश की नारियाँ सुरक्षित नहीं थीं। यह परिपाटी विलुप्त हो गई। अतः अविद्या के अन्धकार में भारतीय नारी पड़ गई। अंग्रेजों के समय में राजनीतिक व्यवस्था में फिर से नारी शिक्षा क्रम प्रचलित हुआ। स्वतन्त्र भारत में सरकार के विविध उद्योगों में नारी शिक्षा से बहुत उन्नति हुई। परीक्षा में छात्रों की अपेक्षा बालिकाओं ने अधिक अंक प्राप्त कर अपनी पढ़ने की रूचि मस्तिष्क की परिपक्वता, बुद्धि की विशेषता इत्यादि गुण प्रतिपादित किए।

नारी शिक्षा विषय में सबसे पहले यह विचारणीय है कि कैसी शिक्षा उनके आने वाले जीवन में उपयोगी होगी। यद्यपि जिस विषय में छात्र अध्ययन करते हैं उन्हीं में बालिका पढ़ती है। अध्ययन के बाद पुरुष विविध राजकीय पदों पर कार्य करते हैं। वर्तमानकाल में बन्दूक को धारण करके, वायुमान में वेग के साथ आकाश में जाकर, वैज्ञानिक शोधकार्य करके सैकड़ों नारियों को देखते हैं। उनमें कल्पना चावला, सुनीता विलियम नाम को कौन भारतीय नहीं जानता।

परन्तु प्रायः जीवन में नारी से नर के कार्य को प्रथम माना जाता है। अतः उनकी शिक्षा में भी कुछ अन्तर आवश्यक है। इसलिए शिक्षा में भी गृहविज्ञान आदि विषयों को पाठयक्रम में निहित करके उनके जीवन को अधिक उपयोगी करते हैं। नारी शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की जाती है। शिक्षा

विशेषज्ञों द्वारा शिक्षित नारी न केवल शिक्षित होती है, अपितु उसका आगामी जीवन भी सफल होता है। उसकी संतान भी भारतीय परंपरा के लिए निष्ठा का विषय होती है। पालन में भारतीय आदर्श होते हैं।

1. (क) स्वयं करें। (ख) यवनकाले नारीणां सुरक्षाया अभावात् शिक्षाया: परिपाटी विलुप्ता अभवत्? (ग) परीक्षासु अध्ययन रुचिं, मस्तिष्क प्रौढि, बुद्धि वैशिष्ट्यं दत्त चितानां इत्यादय। (घ) वैज्ञानिक शोधकार्य क्षेत्रे सुनीता विलियम: प्रसिद्धा अभवत्? (ङ) आम्, नारी शिक्षायां परिवर्तनस्य आवश्यकता अस्ति? **2.** (क) चक्रयो (ख) आंग्लकाले (ग) पुरुषवद् (घ) भुशुण्डी कुर्वन्त्य: (ङ) नारी शिक्षायां।

3. (क) मूल शब्द–शिक्षा, लिङ्ग–नपुंसक, वचन–एकवचन, विभक्ति–षष्ठी।

(ख) मूल शब्द–जीवन, लिङ्ग–नपुंसक, वचन–एकवचन, विभक्ति–तृतीया।

(ग) मूल शब्द–व्यवस्था, लिङ्ग–नपुंसक, वचन–बहुवचन, विभक्ति–षष्ठी।

(घ) मूल शब्द–शास्त्रार्थ, लिङ्ग–नपुंसक, वचन–एकवचन, विभक्ति–सप्तमी।

(ङ) मूल शब्द–चक्र, लिङ्ग–नपुंसक, वचन–द्विवचन, विभक्ति–षष्ठी।

4. (क) भव–भवतम्–भवत

(ख) अशक्नोत्–अशक्नुत:– अशक्नुवन्

(ग) भविष्यामि–भविष्याव:–भविष्याम:

(घ) वदति–वदत:–वदन्ति।

(ङ) पश्येम्–पश्येव–पश्येम।

(च) आगच्छ–आगच्छतम–आगच्छत।

5. **(क)** (i) कृतेऽपि (ii) इत्यादीन् (iii) आसीतत्र (iv) तानैव (v) भारतेतिहासस्य (vi) नारीणाञ्च। **(ख)** (i) चक्रम् + एकम् (ii) अविद्या + अन्धकारे (iii) सम् + उद्योगे (iv) सतति: + अपि (v) परम + आवश्यकता (vi) सम् + उपस्थिता। **(ग)** स्वयं करें।

6. स्वयं करें।